Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۵۷﴾

(सूरः अहज़ाब् : 57)

अनुवाद : वास्तव में, अल्लाह और उसके फ़रिश्ते पैगम्बर पर रहमत भेजते हैं। हे वे लोगों जो ईमान लाए हो! तुम भी उस पर दरूद और खूब सलाम भेजो।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 9
अंक-31-32

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

02-05 मोहर्रम 1446 हिज्री कमरी, 01-08 ज़हूर 1403 हिज्री शम्सी, 01-08 अगस्त 2024 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम

निःसन्देह हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रूहानियत क़ायम करने के लिहाज से द्वितीय आदम थे, बल्कि वास्तविक आदम वही थे जिनके माध्यम से तथा इसी कारण ही समस्त मानवीय सद गुण अपनी पूर्णता को पहुँचे तथा सारी उत्तम शक्तियां अपने कार्य में लग गईं तथा मानवीय प्रकृति (फ़ितरत) की कोई भी शाखा फल तथा फूलों के बिना नहीं रही। अतः ख़त्में नुबुव्वत न केवल आपके ज़माने के अंत पर आने के कारण (पूर्ण) हुई अपितु इस कारण भी कि सम्पूर्ण नुबुव्वत के कमालात आप पर पूरे हो गए

हामरे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सच्चाई के प्रकट करने के लिए एक मुजद्दि-ए-अज़ाम (महा सुधारक) थे, जो लुप्त हो चुकी सच्चाई को पुनः संसार में लाए। इस गौरव में हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ कोई भी नबी भागीदार नहीं क्योंकि आपने सारे संसार को एक अंधकार में पाया और फिर आप के प्रकट होने से वह अंधकार प्रकाश में बदल गया। जिस क़ौम में आप प्रकट हुए, आपकी मृत्यु न हुई, जब तक कि उस सारी क़ौम ने शिर्क (अनेकश्वरवाद) का चौला उतार कर ऐकेश्वरवाद का वस्त्र धारण नहीं कर लिया तथा केवल इतना ही नहीं बल्कि वे लोग ईमान की श्रेष्ठ मर्तबा को पहुँच गए तथा सच्चाई और वफ़ा तथा विश्वास के ऐसे कार्य उनके द्वारा ज़ाहिर हुए कि जिसकी उदाहरण संसार के किसी भाग में नहीं पाई जाती। यह सफ़लता तथा इतनी बड़ी कामयाबी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिवा और अन्य किसी नबी को प्राप्त नहीं हुई। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत पर यही एक बड़ी दलील है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक ऐसे समय में प्रकट हुए अथवा तशरीफ़ लाए जबकि ज़माना अत्याधिक अंधकार में पड़ा हुआ था तथा स्वभाविक रूप से एक महान् मुस्लेह (सुधारक) का इच्छुक था। फिर आप ऐसे समय में परलोक सिधार गए जबकि लाखों लोग अनेकश्वरवाद तथा मूर्तिपूजा को छोड़ कर एकेश्वरवाद तथा सीधे रास्ते को ग्रहण कर चुके थे। वास्तव में यह पूर्ण सुधार आप अनेकश्वरवाद के साथ ही मख़्सूस (विशिष्ट) था कि आपने एक जंगली आचरण तथा पशु प्रकृति वाली क़ौम को मनुष्य के आचरण सिखाए। अथवा दूसरे शब्दों में इस प्रकार कहें कि पशुओं को इन्सान बनाया। और फिर इन्सानों से शिक्षित इन्सान फिर शिक्षित इन्सानों से बा-ख़ुदा (ख़ुदा वाले) इन्सान बनाया, तथा रूहानियत की अवस्था उनमें पैदा कर दी तथा सच्चे ख़ुदा के साथ उनका सम्बन्ध पैदा कर दिया। ख़ुदा के रास्ता में बकरियों की तरह उनका वध किया गया तथा चूँटियों की तरह पैरों में कुचले गए परन्तु ईमान को हाथ से नहीं छोड़ा बल्कि प्रत्येक मुसिबत में आगे क़दम बढ़ाया। अतः निःसन्देह हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रूहानियत क़ायम करने के लिहाज से द्वितीय आदम थे, बल्कि वास्तविक आदम वही थे जिनके द्वारा तथा इसी कारण ही समस्त मानवीय सदगुण अपनी पूर्णता को पहुँचे तथा सारी उत्तम शक्तियां अपने कार्य में लग गईं तथा मानवीय प्रकृति (फ़ितरत) की कोई भी शाखा फल तथा फूलों के बिना नहीं रही। अतः ख़त्में नुबुव्वत न केवल आपके ज़माने के आख़िर पर आने के कारण (पूर्ण) हुआ अपितु इस कारण भी कि सम्पूर्ण नुबुव्वत के कमालात आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर पूरे हो गए और चूँकि आप अल्लाह तआला की सिफ़ाते (शक्तियों) का सम्पूर्ण प्रतिरुप थे, इसलिए आपकी शरीअत जलाली व जमाली (प्रतापी व करुणामयी) दोनों गुणों से परिपूर्ण थी। इसी उद्देश्य से आपके दो नाम मुहम्मद तथा अहमद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और आपकी नुबुव्वते आमः (शरीअत) में कंजूसी का कोई हिस्सा नहीं बल्कि वह शुरू से ही सारे संसार के लिए है।

(लैक्चर सियालकोट, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 206)

★ ★ ★

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का महान स्थान और श्रेणी हज़रत मसीह मौऊद-व--महदी माहूद अलैहिस्सलाम की लेखनी की दृष्टि से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी मसीह मौऊद-व-महदी माहूद अलैहिस्सलाम ने अपने आक़ा सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का स्थान और श्रेणी जिस रंग में शनाख़्त किया, वह किसी अन्य ने नहीं किया। सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान स्थान का इर्फ़ान जो आपको नसीब हुआ वह किसी और को नहीं हुआ। सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा से इशक़-ओ-मुहब्बत जिस रूप में आप अलैहिस्सलाम ने किया किसी और ने नहीं की। यह केवल दावा नहीं बल्कि हक़ीक़त है, ऐसी ठोस हक़ीक़त है कि कोई उस को झुठला नहीं सकता, ग़लत साबित नहीं कर सकता। सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इशक़-ओ-मुहब्बत की जो लेखनी निबंध और पुस्तकें कलाम के रूप में आपके क़लम से निकली हैं हमें कहीं और दिखाई नहीं देतीं। इन में ऐसी चाशनी है कि आप के दुश्मन भी इन कलाम और लेखनी को पढ़ने से अपने आपको नहीं रोक सके। अगर कोई हमारे दावा को ग़लत समझे तो हम अपने दावा की सच्चाई का सबूत देने के लिए तैयार हैं। और जिस रंग में सय्यदना हज़रत मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दीन का दिफ़ा जिस जोश के साथ, मर्द-ए-मैदान बन कर आप अलैहिस्सलाम ने किया चौदह सौ साल में किसी और ने नहीं की, न कोई और कर सकता था, न किसी और का यह स्थान और पद था, क्योंकि क़ुरआन और हदीस के अनुसार यह स्थान और पद केवल आप अलैहिस्सलाम का ही था, आयत-ए-करीमा لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ की तफ़सीर में उल्मा कराम ने यही फ़रमाया है कि इस्लाम को विशव्यापी विजय महदी के ज़माना में मिलेगा। अतः हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी का दावा मसीह-ओ-महदी का है इस मसीह-ओ-महदी का जिसकी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भविष्यवाणी फ़रमाई थी कि जब वह अवतरित होगा तो ईमान को ज़मीन पर क़ायम कर देगा। अतः जिस रंग में आप अलैहिस्सलाम ने दीने मुहम्मदी का दिफ़ा किया वह केवल और केवल आप अलैहिस्सलाम ही का काम था, दोस्त और दुश्मन सब इस बात का इक़रार करते हैं कि चौदह सौ वर्षों में इस्लाम की सहायता और मदद में जो किताबें आप अलैहिस्सलाम ने लिखी हैं किसी और ने नहीं लिखें। और जैसा कि हमने वर्णन किया कोई लिख भी नहीं सकता था क्योंकि यह स्थान और पद अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से केवल आप अलैहिस्सलाम को मिला था। अल्लाह तआला मुस्लमानों को अक़ल और समझाता फ़रमाए कि वे ज़माने के इमाम मसीह-ओ-महदी पर ईमान लाएं। उस मसीह-ओ-महदी पर जिसके साथ इस्लाम का ग़लबा जुड़ा है। निम्न में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शान-ए-अर्फ़ा-ओ-आला के विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ इर्शादात पेश करते हूँ।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अज़ीमुश्शान साबित क़दमी और सब्र-ओ-इस्तिक़लाल

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने नुबुव्वत के दावे पर सहस्त्रों संकट उत्पन्न हो जाने तथा लाखों शत्रुओं, बाधकों तथा भयभीत करने वालों के खड़े हो जाने के बावजूद आरम्भ से अन्तिम सांस तक स्थापित रहे तथा जमे रहे, वर्षों तक वे संकट देखे और वे कष्ट सहन करने पड़े जो सफलता से पूर्णरूप से निराश करते थे और दिन प्रतिदिन अधिक होते जाते थे कि जिन पर धैर्य करने से किसी सांसारिक उद्देश्य की प्राप्ति हो जाने का भ्रम भी नहीं गुज़रता था, अपितु नुबुव्वत का दावा करने से अपने पहले जन समूह को भी हाथ से खो बैठे तथा एक बात कह कर लाख विरोधों को खरीद लिया तथा सहस्त्रों विपत्तियों को अपने ऊपर आने का निमंत्रण दे दिया, देश से निष्कासित किए गए, वध करने के लिए अनुधावन (पीछा करना) किये गए, घर और सामान बरबाद हो गया, अनेकों बार विष दिया गया और जो शुभचिन्तक थे वे अशुभचिन्तक बन गए, जो मित्र थे वे शत्रुता करने लगे तथा एक दीर्घ युग तक वे कष्ट सहन करने पड़े कि जिन पर दृढ़ता से स्थापित रहना किसी मक्कार या कुटिल का कार्य नहीं। फिर जब दीर्घ समयोपरान्त इस्लाम की विजय हुई तो उन धन और समृद्धि के दिनों में कोई खज़ाना एकत्र न किया, कोई इमारत न बनाई कोई राज भवन तैयार न हुआ, कोई बादशाहों वाला भोग-विलास का समान व्यवस्थित न किया गया, कोई व्यक्तिगत लाभ न उठाया अपितु जो कुछ आया वह सब अनाथों, असहायों, विधवाओं और कर्जदारों की देख-भाल में व्यय होता रहा, कभी एक समय भी पेट भर भोजन न किया। फिर स्पष्टवादिता इतनी कि एकेश्ववाद का उपदेश देकर समस्त जातियों, सम्प्रदायों तथा सम्पूर्ण संसार के लोगों को जो शिर्क में डूबे हुए थे विरोधी बना लिया, जो अपने थे उन्हें मूर्तिपूजा से मना करके सर्वप्रथम शत्रु बनाया, यहूदियों से भी बात बिगाड़ ली, क्योंकि उन्हें तरह-तरह की सृष्टि-पूजा, पीरों की पूजा तथा दुष्कर्मों से रोका, हज़रत मसीह अलैहिस्लाम को झूठा कहने और उनका अपमान करने से रोका, अब न्याय का स्थान है कि क्या संसार प्राप्ति की यही युक्ति थी।

(बराहीन अहमदिया भाग द्वितीय, रूहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 108)

ख़ुदा की इच्छा और इरादे में आसक्त और फ़ना होने वाला नबी

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उच्चतम श्रेणी के एक वर्ण, निश्छल, ख़ुदा के लिए उत्साही और जान पर खेलने वाले प्रजा की उम्मीद और आशा से बिल्कुल विमुख तथा ख़ुदा पर भरोसा करने वाले थे, जिन्होंने ख़ुदा की इच्छा और इरादे में आसक्त और फ़ना होकर इस बात की कुछ भी परवाह न की कि एकेश्वरवाद की घोषणा करने से मेरे सिर पर क्या-क्या विपत्ति आएगी तथा मुश्रिकों के हाथ से क्या कुछ कष्ट और दुख उठाना होगा अपितु समस्त कठिनाइयों, कठोरताओं तथा विपत्तियों को अपने ऊपर लेकर अपने स्वामी (ख़ुदा) की आज्ञा का पालन किया तथा जो-जो शर्त तपस्या, उपदेश और नसीहत की होती है वह सब पूरी की और किसी डराने वाले को कुछ भी महत्त्व न दिया। हम सच-सच कहते हैं कि समस्त नबियों की घटनाओं में ऐसे भयंकर स्थान और अवसर और फिर ख़ुदा पर ऐसा भरोसा करके शिर्क और सृष्टि-पूजा से प्रत्यक्ष और स्पष्ट तौर पर मना करने वाला, इतना प्रकाशमान, और फिर कोई ऐसा दृढ़ प्रतिज्ञ और साहसी एक भी सिद्ध नहीं।

(बराहीन अहमदिया भाग द्वितीय रूहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 111)

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

क्रम	विषय सूची	पृष्ठ
1	निःसन्देह हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रूहानियत क़ायम करने के लिहाज से द्वितीय आदम थे	1
2	सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का महान स्थान और श्रेणी हज़रत मसीह मौऊद-व-महदी माहूद अलैहिस्सलाम की लेखनी की दृष्टि से	2
3	ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 28 जून 2024 ई.	3
4	ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 05 जुलाई 2024 ई.	7
5	आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जीवनी ख़ुत्बा हज्जतुल विदा की दृष्टि में (मानवीय समानता)	12
6	सहाबा हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहब रज़ियल्लाहु अन्हो की जीवनी	16
7	अदल-ओ-इन्साफ़ के क़ियाम के विषय में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तालीम और आप की जीवनी	20

प्रकाशमान शिक्षा लाने वाला तर्कों और स्पष्ट सबूतों से सभी का मुख बन्द करने वाला नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम

सहस्त्रों ऐसी घटनाएँ हैं जिन से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ख़ुदा की सहायता और समर्थन से समर्थित होना सिद्ध होता है। उदाहरणतः क्या यह आश्चर्यजनक वृत्तान्त नहीं कि एक निर्धन, निर्बल, असहाय, अनपढ़, अनाथ अकेला, बेचारा ऐसे समय में जिसमें प्रत्येक जाति पूरी-पूरी आर्थिक, सैनिक, और ज्ञान की शक्ति रखती थी ऐसी प्रकाशमान शिक्षा लाया कि अपने विच्छेदक तर्कों और स्पष्ट सबूतों से सभी का मुख बन्द कर दिया तथा बड़े-बड़े लोगों की जो दार्शनिक बने फिरते थे और फ्लास्फ़र कहलाते थे प्रत्यक्ष ग़लतियाँ निकालीं और फिर बावजूद विवशता और निर्धनता के, बल भी ऐसा दिखाया कि बादशाहों को सिंहासनों से गिरा दिया तथा उन्हीं सिंहासनों पर निर्धनों को बैठाया। यदि यह ख़ुदा का समर्थन और सहायता नहीं थी तो और क्या था, क्या समस्त संसार पर बुद्धि, ज्ञान, शक्ति और बल में विजयी हो जाना ख़ुदा की सहायता के अभाव में भी हुआ करता है।

(बराहीन अहमदिया भाग द्वितीय रूहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 118)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस युग में अवतीर्ण हुए थे कि जब समस्त संसार में शिर्क, पथ-भ्रष्टता और सृष्टि-पूजा फैल चुकी थी और समस्त लोगों ने सच्चे सिद्धान्तों को त्याग दिया था तथा सदमार्ग को भुला कर प्रत्येक सम्प्रदाय ने पृथक-पृथक बिदअतों का मार्ग धारण कर लिया था, अरब में मूर्ति पूजा का नितान्त जोर था, फारस में अग्नि पूजा का बाजार गर्म था, हिन्दुस्तान में मूर्ति-पूजा के अलावा अन्य सैकड़ों प्रकार की सृष्टि-पूजा फैल गई थी तथा उन्हीं दिनों में कई पुराण और पुस्तकें जिनकी दृष्टि से बीसियों ख़ुदा के बन्दे ख़ुदा बनाए गए तथा अवतारों की उपासना की आधारशिला रखी गई लिखी जा चुकी थीं। पादरी बोर्ट साहिब और कई अंग्रेज़ विद्वानों के कथनानुसार उन दिनों में ईसाई धर्म से अधिक और कोई धर्म ख़राब न था तथा पादरी लोगों की दुष्चरित्रता तथा बुरी धारणाओं से ईसाई धर्म पर एक बड़ा धब्बा लग चुका था। मसीही आस्थाओं में एक-दो ने नहीं अपितु कई वस्तुओं ने ख़ुदाई का स्थान ले लिया था। अतः आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ऐसी समान्य पथ-भ्रष्टता के समय में अवतरित होना जब कि स्वयं वर्तमान युग की स्थिति एक महान उपचारक और सुधारक को चाहती थी तथा ख़ुदाई पथ-प्रदर्शन की नितान्त आवश्यकता थी, प्रकटन करके एक संसार को तौहीद और शुभ कर्मों से प्रकाशमान करना तथा शिर्क और सृष्टि-पूजा का जो समस्त उपद्रवों की जननी है का विध्वंस करना इस बात पर स्पष्ट प्रमाण है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा के सच्चे रसूल और समस्त रसूलों से श्रेष्ठतम थे।

(बराहीन अहमदिया भाग द्वितीय रूहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 112 हाशिया नंबर 10)

संसार को एकेश्वरवाद के नूर से मुन्नवर करने वाला शिर्क के अंधकारों और सृष्टि पूजा को समाप्त करने वाला नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रकटन के समय यह आपदा प्रभुत्व जमा रही थी कि संसार की समस्त जातियों ने एकेश्वरवाद, निःस्वार्थता, और सत्य को स्वीकार करने का

शेष पृष्ठ 23 पर

ख़ुत्बः जुमअः

ग़ज़व-ए-बनू नज़ीर और इसके नतीजे में होने वाला बनू नज़ीर का देशनिकाला का विस्तारपूर्वक वर्णन

इस्लाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जंग और क़तल-ओ-ग़ारत, माल-ए-ग़नीमत प्राप्त करने इत्यादि के आरोप लगाने वालों को देखना चाहिए

कि .. अब अंततः जब नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बनू-नज़ीर पर क़ाबू पा लिया तो उनको जितनी भी सख़्त से सख़्त सज़ा दी जाती तो वह उचित थी

लेकिन नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का शांति प्रिय और सुलह और रहमत और शफ़क़त-ए-इन्सानी का विचित्र दृश्य और आचरण प्रकट होता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको यहां से अमन-ओ-सलामती के साथ चले जाने की आज्ञा दे दी

और रहमत और इनायात का आलम यह था कि यह भी इजाज़त दी कि जो सामान भी ले जाना चाहें ले जाएं सिवाए असलाह और हथियारों के

पाकिस्तान के अहमदियों के लिए दुआएं जारी रखें। दुनिया में मुस्लमानों के उमूमी हालत के लिए भी दुआ करें

दुनिया में जंग की जो उमूमी सूरत-ए-हाल बन रही है इस के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला हर अहमदी और हर मासूम को इस के उपद्रव से सुरक्षित रखे

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 28 जून 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

बनू-नज़ीर के साथ जंग का वर्णन हो रहा था। इस की मज़ीद तफ़सील यूं है। इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में लिखा है कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बनू-नज़ीर के एक क़िले की तरफ़ रवाना हुए तो "आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने पीछे मदीना की आबादी में इब्ने मकतूम रज़ियल्लाहु अन्हो को नमाज़ का ईमाम निर्धारित फ़रमाया और स्वयं सहाबा की एक जमाअत के साथ मदीना से निकल कर बनू-नज़ीर की बस्ती का घेराव कर लिया और बनू-नज़ीर उस ज़माना के तरीक़-ए-जंग के मुताबिक़ क़िला बंद हो गए। ग़ालिबन इसी अवसर पर अब्दुल्लाह बिन उबै बिन सलूल् रज़ियल्लाहु अन्हो और दूसरे मुनाफ़ेक़ीन मदीना ने बनू-नज़ीर के सरदारों को योह कहला भेजा कि तुम मुस्लमानों से हरगिज़ न दबना, हम तुम्हारा साथ देंगे और तुम्हारी तरफ़ से लड़ेंगे लेकिन जब अमला जंग शुरू हुई तो बनू-नज़ीर की आशाओं के विपरीत इन मुनाफ़ेक़ीन को यह साहस नहीं हुआ कि खुल्लम खुल्ला आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ मैदान में आएं और ना बनू क़ुरैज़ा को यह हिम्मत पड़ी कि मुस्लमानों के ख़िलाफ़ मैदान में आकर बनू-नज़ीर की बरमला मदद करें। जबकि दिल में वे उनके साथ थे और दरपर्दा उनकी इमदाद भी करते थे जिसका मुस्लमानों को इलम हो गया था। बहरहाल बनू-नज़ीर खुले मैदान में मुस्लमानों के मुक़ाबिल पर नहीं निकले और क़िला बंद हो कर बैठ गए, लेकिन चूँकि उनके क़िले उस ज़माना के लिहाज़ से बहुत मज़बूत थे इस लिए उनको इतमीनान था कि मुस्लमान उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकेंगे और आख़िर स्वयं तंग आकर मुहासरा छोड़ जाऐंगे। और इस में शक नहीं कि इस ज़माना के हालात के अधीन ऐसे क़िलों पर विजय करना वास्तव में एक बहुत मुश्किल और प्रभावी मशक़्क़त का काम था और एक बड़ा लंबा घेराव था।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए सफ़ा 526)

बहरहाल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहां गए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बनू-नज़ीर का घेराव जारी रखा। यह घेराव छः दिन और एक रिवायत के मुताबिक़ पंद्रह दिन तक रहा। इस के अतिरिक्त बीस और तेईस दिनों के अक़्वाल भी मर्वी हैं। ये भी लोग कहते हैं कि बीस दिन या तेईस दिन भी रहा। दौरान-ए-घेराव रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने चंद दरख़्त काटने और जलाने का हुक्म दिया। चूँकि यहूद क़िलों की फ़सलों से तीर और पत्थर बरसा रहे थे और ये दरख़्त उनके लिए दिफ़ाई हैसियत रखते थे और उनके रहने का काम दे रहे थे अर्थात कि ये दरख़्त छिपने की जगह बन रहे थे। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबू लैला मज़ानी और अब्दुल्लाह बिन सलाम को वे दरख़्त जलाने की ज़िम्मेदारी सौंपी। यह जंगी या दिफ़ाई ज़रूरत के लिए किया गया था न कि केवल बाग़ उजाड़ने के लिए। क्योंकि इस्लाम में दरख़्तों का काटना तो मना है। आगे इस में यह लिखा है कि अबू लैला मज़ानी उनके अजवा ख़जूरों के दरख़्तों को आग लगा रहे थे और अब्दुल्लाह बिन सलाम अजवा के अतिरिक्त अन्य ख़जूरों के दरख़्त जला रहे थे लेकिन रिवायात में ये भी है कि घटिया किस्म की ख़जूरों को जलाया गया। इसकी तफ़सील में आगे वर्णन करूँगा। बहरहाल जो इस रिवायत में लिखा है वह यही है कि हज़रत अबू लैला कहने लगे कि ये दरख़्त उनका क़ीमती सरमाया हैं ये जलाने से उन्हें ज़्यादा रंज होगा। यहूदियों को इस का रंज होगा क्योंकि यह उनका सरमाया है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा अल्लाह उनके अम्वाल को नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए माल-ए-ग़नीमत बनाएगा। अब्दुल्लाह बिन सलाम के इस फ़िक़रे से भी यह ज़ाहिर होता है कि अजवा खजूर के दरख़्त जो कारोमद दरख़्त थे वे नहीं जलाए गए थे दूसरे दरख़्त जलाए गए थे। उन्होंने कहा कि अजवा सबसे बेहतर माल है और उन्होंने तो यह कहा कि यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के काम आएगा। यहूद ने जब इन दरख़्तों को आग में जलते देखा तो उनकी औरतें अपने गिरेबान चाक करने लगीं, मुँह पर तमांचे मारने लगीं और वावेला करने लगीं। फिर यहूद ने फ़ौरन संदेश भेजा। मुहम्मद! सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप तो बड़े सम्मान और शरफ़ के योग्य हैं। आप उपद्रव से मना करने वाले और उपद्रव की हर सूरत को नापसंद करते हैं। अब आप स्वयं ही यह काम कर रहे हैं लेकिन जैसा कि वर्णन हो चुका है कि ये

दरख़्त उनके लिए छुपने का ठिकाना थे, दिफ़ाई काम दे रहे थे इसलिए उनके इस दिफ़ा को ख़त्म करना ज़रूरी था और इस में हिक्मत भी कार-फ़रमा थी कि जितनी जल्दी हो सके यह क़ुव्वत ख़त्म हो जाएगी ताकि मज़ीद क़तल-ओ-ग़ारत न हो और

मालूम होता है कि अल्लाह तआला के विशेष इलहाम के अधीन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह वृक्ष जलाने का आदेश दिया था।

इसलिए यहूद के इस इल्ज़ाम का जवाब अल्लाह तआला ने यूं दिया है कि

مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى أُصُوْلِهَا فَبِإِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفَاسِقِيْنَ

(अल् हशर : 6)

जो भी खजूर का दरख़्त तुमने काटा या उसे अपनी जड़ों पर खड़ा रहने दिया तो अल्लाह के हुक्म के साथ ऐसा किया है और ये इस ग़रज़ से था कि वे फ़ासिक़ों को रुस्वा कर दे।

कुछ रिवायात में आता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुहासिरे के वक़्त यहूद को एक मर्तबा फिर माफ़ करने का उपहार देते हुए नए वादे की पेशकश भ ीकी थी। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम् ने यहूद से फ़रमाया

إِنَّكُمْ وَاللّٰهِ لَا تَأْمَنُوْنَ عِنْدِيْ إِلَّا بِعَهْدٍ تُعَاهِدُوْنِيْ عَلَيْهِ

तुम लोगों पर मुझे कोई एतिमाद नहीं सिवाए उसके कि तुम मुझसे नए सिरे से कोई पुख़्ता अह्द करो। लेकिन उन्होंने अह्द-ओ-पैमान से इंकार कर दिया। यहूद माल के सबसे ज़्यादा हरीस होते हैं। जब उनके क़ीमती दरख़्त जलाए गए तो उन्होंने फ़ौरन घुटने टेक दिए और इलाक़ा छोड़ने पर राज़ी हो गए।

(दायरा मआरिफ़ इसीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 पृष्ठ 183-185 बज़्म-ए-इक़बाल लाहौर2022 ई.)

यह सीरत की एक किताब का हवाला मैं ने दिया है। अब मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो की जो सीरत है इस के हवाले से बात करता हूँ। लिखते हैं कि "कई दिन तक मुस्लमान बराबर घेराव किए रहे लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। जब घेराव पर चंद दिन गुज़र गए और कोई नतीजा नहीं निकला और बनू-नज़ीर बदस्तूर मुक़ाबला पर डटे रहे तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुक्म सादर फ़रमाया कि बनू-नज़ीर के इन ख़जूरों के दरख़्तों में से जो क़िलों के बाहर थे कुछ दरख़्त काट दिए जाएं। ये दरख़्त जो काटे गए उच्चकिस्म के खजूर के दरख़्त थे। जो एक अदना किस्म की खजूर थी जिसका फल उमूमन इन्सानों के खाने के काम नहीं आता था और इस हुक्म में मंशा यह था कि ताकि उन दरख़्तों को कटता देखकर बनू-नज़ीर भयभीत हो जाएं और अपने क़िलों के दरवाज़े खोल दें और इस तरह चंद दरख़्तों के नुक़्सान से बहुत सी इन्सानी जानों का नुक़्सान और देश का फ़ित्ना व उपद्रव रुक जाए। इसलिए ये तदबीर कारगर हुई और अभी केवल छः दरख़्त ही काटे गए थे कि बनू-नज़ीर ने ग़ालिबन यह ख़्याल करके कि शायद मुस्लमान उनके सारे दरख़्त ही जिनमें फलदार दरख़्त भी शामिल थे, काट डालेंगे रोना धोना शुरू कर दिया। हालाँकि जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ में व्याख्या की गई है केवल कुछ दरख़्त और वे भी लय्यना किस्म के दरख़्त काटने की इजाज़त थी और बाक़ी दरख़्तों के सुरक्षित रखने का हुक्म था और वैसे भी आम हालात में मुस्लमानों को दुश्मन के फलदार दरख़्त काटने की इजाज़त नहीं थी। बहरहाल यह तदबीर कारगर हुई और बनू-नज़ीर ने भयभीत हो कर पंद्रह दिन के घेराव के बाद इस शर्त पर क़िला के दरवाज़े खोल दिए कि हमें यहां से अपना साज़-ओ-सामान लेकर अमन शांति के साथ जाने दिया जाए। यह वही शर्त थी जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम स्वयं पहले पेश कर चुके थे और चूँकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नीयत महज़ क़ियाम-ए-अमन थी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्लमानों की इस तकलीफ़ और उन अख़राजात को नज़रअंदाज करते हुए जो इस मुहिम में उनको बर्दाश्त करने पड़े थे अब भी बनू-नज़ीर की इस शर्त को मान लिया और मुहम्मद बिन मसअब सहाबी को निर्धारित फ़रमाया कि वे अपनी निगरानी में बनू-नज़ीर को अमन शांति के साथ मदीना से रवाना कर दें।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए 526-527)

जिस तरह हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने लिखा है कि आला किस्म की खजूरें नहीं काटी गई थीं। इसी तरह बुख़ारी की एक शरह में भी लिखा गया है, इस की यह रिवायत है। इस की तफ़सील में लिखा है कि रिवायात की तफ़सील में जाएं तो अव्वल तो जिन ख़जूरों को जलाया गया था वे आला किस्म की खजूर नहीं थी बल्कि मामूली और रद्दी किस्म की खजूर थी जो साधारणतः लोगों की ग़िज़ा के तौर पर भी इस्तिमाल नहीं होती थी।

(नेअमतुल् बारी फ़ी शरह सही अल् बुख़ारी भाग 7 पृष्ठ 343 हदीस4031 प्रकाशन रूमी पब्लेकेशनरज़ लाहौर)

और केवल छः दरख़्त जलाए गए थे जैसा कि सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में भी वर्णन हुआ है।

यहूद की बेबसी और उनकी स्वयं जलावतनी की दरख़ास्त करने के बारे में मज़ीद यूं लिखा है कि मुस्लमानों ने इस क़बीले के यहूद के दरख़्त जला कर उन्हें मज़ीद घबराहट में डाल दिया। अल्लाह तआला ने उनके दिलों में रोब भरदिया। उनके हौसले टूट गए और वे हथियार डालने पर तैयार हो गए। उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कहला भेजा कि हम मदीना से निकलने को तैयार हैं। आप हमें पुरअमन जलावतनी का अवसर दें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी यह दरख़ास्त मंज़ूर फ़रमाई और हुक्म दिया कि मदीना से निकल जाओ। तुम्हारी जानें सुरक्षित रहेंगी। तुम्हारे ऊंट जो सामान उठा सकें वे भी ले जाओ सिवाए असलाह के।

इस्लाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जंग और क़तल-ओ-ग़ारत, माल-ए-ग़नीमत हासिल करने इत्यादि के आरोप लगाने वालों को देखना चाहिए कि अब बावजूद उसके कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन यहूद पर गिरिफ़्त हासिल कर ली थी और यहूद भी वे कि जो नियमित अह्द शिकनी के मुर्तक़िब होते रहे, वे लोग जो मुतअद्दिद मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो कि रियासत-ए-मदीना के सरबराह भी थे, उनको क़तल करने की मज़मूम साज़िशें और कोशिशें कर चुके थे और अब हथियारबंद हो कर बाक़ायदा बग़ावत पर उतर आए थे और इस मुहासिरे के दौरान भी एक-बार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पुनः अनुबंध और सुलह की पेशकश की थी जिसे निहायत तकब्बुर से उन्होंने ठुकरा दिया था और अब अंततः जब नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन पर क़ाबू पा लिया तो उनको जितनी भी सख़्त से सख़्त सज़ा दी जाती तो वे रूह थी लेकिन नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शांति प्रिय और सुलह जोई और रहमत-ओ-शफ़क़त-ए-इन्सानी की अजीब शान और ख़लक़ ज़ाहिर होता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको यहां से अमन-ओ-सलामती के साथ चले जाने की इजाज़त दे दी और रहमत-ओ-इनायात ख़ुसरवाना का आलम यह था कि यह भी इजाज़त दी कि जो सामान भी ले जाना चाहें ले जाएं सिवाए असलाह और हथियारों के।

इसलिए आगे तफ़सील आएगी कि यहूद ने इस जूद-ओ-करम से इस तरह फ़ायदा उठाया कि अपने घरों के दरवाज़े तक उखेड़ कर छः सौ ऊंटों पर सामान लाद कर ले गए और अपनी फ़ित्रत का मुज़ाहरा यूं किया कि जो सामान साथ नहीं ले जा सकते थे वे पूरी कोशिश की कि ज़ाए कर दिया जाए। इसलिए अपने घरों की छतों और दीवारों को मुनहदिम कर दियाता कि मुस्लमानों के काम न आ सके। घर भी तोड़ के चले गए। बनू-नज़ीर के साथ की जलावतनी की जो शरायत रखी गई थीं। इन शरायत के हवाला से उन उमूर का वर्णन है।

नंबर एक। बनू-नज़ीर के यहूद मदीना मुनव्वरा के इलाक़े से जहां चाहें कूच कर जाएं। पहली बात यह कि बनू-नज़ीर के लोग मदीना छोड़ दें और जहां मर्ज़ी चाहें चले जाएं। नंबर दो यहूद मदीना मुनव्वरा से जला-वतन होने के वक़्त मुकम्मल तौर पर बग़ैर हथियार होंगे। नंबर तीन हथियारों के सिवा यहूद जिस क़दर अपने अम्वाल अपने ऊंटों पर ले जा सकते हैं वे ले जाएं। नंबर चार यह कि यहूद के मक़दूर भर अम्वाल उठा लेने के बाद उनके जो मनक़ूला और ग़ैर मनक़ूला अम्वाल बच जाऐंगे वे मुस्लमानों की मिल्कियत होंगे।

जिलावतनी के अमल की निगरानी और यहूद के उज़्र और बहाने बनाने की तफ़सील भी है। इस में लिखा है कि बनू-नज़ीर को मदीना मुनव्वरा से जला-वतन करने की ज़िम्मेदारी हज़रत मुहम्मद बिन मसअम रज़ियल्लाहु अन्हो को सौंपी गई। इस वक़्त यहूद ने एक और उज़्र किया कि यहां के बहुत से लोग हमारे मक़रूज़ हैं। वे क़र्ज़ उन्हें निर्धरित समय के बाद अदा करना है, उनका क्या बनेगा? उनका उद्देश्य था कि हमें मदीना में ठहरने का मज़ीद अवसर मिल जाए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम सूद ख़त्म कर के क़र्ज़ की रक़म कम कर दो और जल्दी करो। ठीक है क़र्ज़ तुम्हें वापस मिल जाता है इस शर्त के साथ कि तुम सूद ख़त्म करो लेकिन जल्दी यहां से जाओ। अबू राफ़े सलमा बिन अबी हुकीक ने हज़रत उसेद बिन हुज़ैर से एक सौ बीस दीनार लेने थे। इसलिए उसने चालीस दीनार सूद ख़त्म करके असल ज़र अस्सी दीनार वसूल कर लिए।

(इनसाइक्लोपीडिया भाग 7 पृष्ठ 54 दारुस्सलाम रियाज़ 1435 हि)

इस तरह और बहुत सारे दूसरे लोग भी होंगे।

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जलावतनी की शरायत आयद कीं तो अबू राफ़े सलमा बिन अबी हुकेक ने हुई बिन अख्तब से कहा कि तेरा बुरा हो।

इस्लाम क़बूल कर ले इस से पहले कि इस से भी बदतर अंजाम भुगतना पड़े। हुई ने कहा इस से बदतर अंजाम क्या हो सकता है? अबू राफ़े ने कहा कि हमारे बाल बच्चों को क़ैद कर लिया जाएगा, हमारे बहादुर क़तल होंगे और हमारे अम्वाल मुस्लमानों के क़बज़ा में चले जाऐंगे। आज माल छोड़ कर जानें बचाना आसान है। अगर हमने कोई फ़िल्ला खड़ा किया तो इस का अंजाम क़तल और क़ैद होगा। हुई एक दो दिन इस फ़ैसले पर सोचता रहा। जब यामीन बिन अमीर और अबू साद बिन वहब ने उस की यह कश्मकश देखी तो उनमें से एक ने दूसरे से कहा कि बला-शुबा तुम्हें पता है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं। तुम किस चीज़ का इंतेज़ार कर रहे हो? हम मुस्लमान हो जाएं। पता तो है हमें। हमारी किताबों से भी यह साबित होता है तो बेहतर है कि मुस्लमान हो जाएं। इस तरह हमारे माल और जानें सुरक्षित हो जाएँगी। इसलिए वे रात की तारीकी में अपने क़िलों से निकले और इस्लामी लश्कर में आ गए। उन्होंने इस्लाम क़बूल करके अपनी जान और माल सुरक्षित कर लिए। इस तरह ये दो लोग मुस्लमान हुए।

(इनसाइक्लोपीडिया भाग 7 पृष्ठ 55 दारुस्सलाम रियाज़ 1435 हि)

यामीन बिन उमेयर रज़ियल्लाहु अन्हो बाद में बहुत मुख़लिस सहाबी साबित हुए बल्कि उनके दिल में उन्ही दिनों में ही रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत इतना घर कर चुकी थी कि बनू-नज़ीर के जिस यहूदी अम्र बिन हज्जाश ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़तल करने की व्यर्थ कोशिश की थी। ये इन्ही इस्लाम क़बूल करने वाले यामीन बिन अमीर का चचाज़ाद था तो इस मुख़लिस नव मुस्लिम ने एक व्यक्ति के द्वारा अम्र बिन हज्जाश को क़तल करवा दिया। रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब उस के इस इख़लास और मुहब्बत का इलम हुआ तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसर्रत का इज़हार फ़रमाया।

(सिब्बलुल् हुदा वल् रिशाद, भाग 4 पृष्ठ 323 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

(अल् बिदाया वल् नियहाया भाग 5 पृष्ठ 538 दारुल हिजर 1997 ई.)

यह इतिहास की एक किताब का हवाला है यहूद की जलावतनी की कैफ़ीयत के बारे में लिखा है कि यहूद ने जलावतनी के वक़्त अपने ऊंटों पर औरतों और बच्चों के अतिरिक्त अपना वह सामान भी लाद लिया जो ऊंट ले जा सकते थे। केवल हथियार छोड़ दिए। उनके साथ कुल मिला कर छः सौ ऊंट थे। हर व्यक्ति स्वयं अपना मकान गिरा कर उसकी लकड़ी जैसे दरवाज़े और खिड़कियाँ इत्यादि तक निकाल कर ऊंटों पर लाद कर ले गया। एक रिवायत में है कि इन लोगों ने अपने मकानों के सतून और छतें तक तोड़ डालें। किवाड़, तख़्ते जो दरवाज़े थे यहां तक कि उनकी चूलें चोग़ाठें तक निकाल लें और केवल हसद और जलन में अपने मकानों की दीवारें तक मुनहदिम कर दीं ताकि वे इस काबिल न रहें कि उनके देशनिकाला होने के बाद इन मकानों को मुस्लमान आबाद कर सकें।

(सीरत हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 361 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2008 ई.)

जब यहूद ने अपने बच्चों और औरतों को सवारी के ऊंटों पर सवार किया और बक़ीया ऊंटों पर सामान लादने लगे तो उनके इस अंदाज़ से यूं मालूम होता था जैसे उन्हें देशनिकाला होने की कोई परेशानी या नदामत नहीं हालाँकि उनके सीने आतिश कदे बने हुए थे, आग लगी हुई थी उनके सीनों में लेकिन ज़ाहिर यह कर रहे थे कि उनको कोई पर्वा नहीं। जबकि लोगों को यह तास्सुर दे रहे थे कि हम ख़ुश-ओ-ख़ुर्रम यहां से जा रहे हैं। ये लोग पहले बनू हारिस बिन ख़ज़रज के इलाक़े से गुज़रे और जिस के इलाक़े को उबूर किया। फिर मदीना मुनव्वरा के बाज़ारों से उनका गुज़र हुआ। जिस भी मदीना की एक मार्कीट थी। बहरहाल उन्होंने अपनी औरतों को बनाओ सिंघार कर के हौदजों पर बिठा रखा था। ऊंटों पर सवार किया हुआ था और साथ गाने बाजे पर उनकी कनीज़ें नाच भी रही थीं। ये लोग अपने माल-ओ-सर्वत को लोगों पर प्रकट कर रहे थे ताकि लोग उन पर रशक करें। अबू राफ़े ने चमड़े से बने थैले को सोने चांदी से भरा हुआ था। उसे उछाल-उछाल कर कह रहा था कि हमने यह रक़म इन्ही हालात का मुक़ाबला करने और फ़तह हासिल करने के लिए रखी है। उनके जाने की कैफ़ीयत यह थी कि नग़मे अलापे जा रहे थे। शहनाइयाँ बज रही थीं। इश्तिआल अंगेज़ अशआर ज़बान पर थे और रक़्स किया जा रहा था लेकिन रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी कमज़र्फ़ी को नज़र अंदाज कर दिया। यह देखने के बावजूद इन पर कोई तवज्जा नहीं दी। अगर उनका वास्ता किसी दूसरी क़ौम से पड़ता तो शायद उन्हें सत्तर पोशी के लिए कपड़ा भी नहीं दिया जाता।

(दायरा मारुफ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 पृष्ठ 187 बज़्म-ए-इक़बाल लाहौर 2022 ई.)

(मक़ालात-ए-मदीना मुनव्वरा पृष्ठ 142 मर्तबा मुहम्मद फ़ैज़ अहमद उवैसी, कुतुब ख़ाना इमाम अहमद रज़ा)

जो हालत उन्होंने की थी, जो रवैय्या उन्होंने इख़्तेयार किया था उनको सज़ा तो ऐसी मिलनी चाहिए थी कि कुछ भी नहीं जाने दिया जाता लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अफ़व और रहम दिली थी जिसने इन बातों की कोई पर्वा नहीं की बनू-नज़ीर का नया मस्कन कहाँ बना? इस बारे में लिखा है कि बनू-नज़ीर को जब जला वतनी का हुक्म हुआ तो उनके लिए ज़रूरी नहीं था कि वे सारे जज़ीरा नुमा अरब से निकल जाएं बल्कि ज़रूरी यह था कि वह मदीना मुनव्वरा से निकल जाएं। केवल मदीना से निकाला गया था और इस के सिवा जहां चाहें आबाद हो जाएं। इसलिए उनमें से कुछ तो शाम के इलाक़े की तरफ़ चले गए और अधिकतर ने ख़ैबर का रुख किया। ख़ैबर मदीना मुनव्वरा से तक़रीबन छयानवे मील दूर है और यह जज़ीरा नुमा अरब में पनाह गज़ीन यहूद का इतना बड़ा मर्कज़ था कि इस में हथियार सहित जंगजूओं की संख्या दस हज़ार थी। अतिरिक्त इसके वहां यहूद के बहुत से क़िले भी थे और ये इलाक़ा ज़रई दौलत से माला-माल था। जज़ीरा नुमा अरब के समस्त यहूद बनू-नज़ीर की सियादत और क़ियादत के क़ायल थे क्योंकि ये अपने आपको हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की नसल क़रार देते थे। इस के अतिरिक्त मालदार होने के साथ-साथ बनू-नज़ीर के ये लोग बहुत ज़्यादा शातिर ज़हनियत के मालिक थे। इसलिए जब बनू-नज़ीर के यहूद ख़ैबर चले गए तो वहां यहूद की ताक़त और क़ुव्वत में मज़ीद इज़ाफ़ा हो गया। उनमें बनू-नज़ीर के अकाबिर हुई बिन अख़्तब, सलमा बिन अबी हुकीक और किनाना बिन रबी जैसे लोग थे। ख़ैबर के यहूद जंगी सलाहियत-ओ-महारत में मुमताज़ और फ़ायक़ थे। जंगी लिहाज़ से ख़ैबर के लोग बड़े माहिर थे लेकिन बनू-नज़ीर के यहूद जंग की निसबत सयासी बसीरत में आगे थे। सयासी लिहाज़ से बनू-नज़ीर वाले बहुत होशयार थे। ख़ैबर में क़दम रखते ही उन्होंने अर्थात बनू-नज़ीर के लोगों ने बड़ी सहूलत के साथ अपने आपको सियादत और क़ियादत के मन्सब पर फ़ाय कर लिया और इस के नतीजा में ख़ैबर मुस्लमानों के लिए बड़ा जंगी महाज़ बन गया।

(इनसाइक्लोपीडिया भाग 7 पृष्ठ 57-58 दारुस्सलाम रियाज़ 1435 हि)

बनू-नज़ीर के यहूद के साथ अंसार के बेटों के जाने के बारे में वर्णन हुआ है कि बनू-नज़ीर में से कुछ लोग मदीना से निकल कर शाम के इलाक़े की तरफ़ चले गए। इन यहूद में कुछ अंसारी मुस्लमानों के बेटे भी थे जिनकी वजह यह थी कि अगर किसी अंसारी औरत की औलाद ज़िंदा नहीं रहती थी तो इस्लाम लाने से पहले उनमें यह दस्तूर था कि वे औरत ये मन्नत मान लिया करती थी कि अगर उस का बेटा ज़िंदा रहा तो वे इस को यहूदी बना देगी। इसलिए ऐसे कई लोग थे जो अंसार के बेटे थे परंतु वे यहूदी बना दिए गए थे। जब बनू-नज़ीर के लोग देशनिकाला होने लगे तो उन लड़कों के बापों ने कहा कि हम अपने बच्चों को उनके साथ नहीं जाने देंगे। इस पर अल्लाह तआला ने उन लोगों के लिए ये वह्यी नाज़िल फ़रमाई। सीरत अल् हल्बिया में यह लिखा है कि अल्लाह तआला ने कहा कि لَآ إِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ (अल् बक़रा : 257) कि दीन में कोई जबर नहीं।

(सीरत हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 362 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2008 ई.)

हज़रत मिर्ज़ा बशीरा हमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी इस बारे में लिखा है कि " बनू-नज़ीर बड़े ठाठ और शानोशौकत से अपना सारा साज़-ओ-सामान यहाँ तक कि स्वयं अपने हाथों से अपने मकानों को मिस्मार कर के उनके दरवाज़े और चौखटें और लक्कड़ी तक उखेड़ कर अपने साथ ले गए। और लिखा है कि ये लोग मदीना से इस जश्न और धूम धाम के साथ गाते बजाते हुए निकले कि जैसे एक बारात निकलती है। जबकि उनका युद्ध का सामान और जायदाद ग़ैर मनक़ूला अर्थात बाग़ात इत्यादि मुस्लमानों के हाथ आए और चूँकि यह माल बग़ैर किसी अमली जंग के मिला था इस लिए शरियत-ए-इस्लामी की दृष्टि से इस की तक़सीम का इख़्तेयार विशेषता रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ में था और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ये अम्वाल ज़्यादा-तर उन ग़रीब मुहाजेरीन में तक़सीम फ़र्मा दिए जिनके गुज़ाराजात का बोझ अभी तक इस इबतेदाई सिलसिला भाईचारे के मातहत अंसार की जायदादों पर था और इस तरह बिलवासता अंसार भी इस माल-ए-ग़नीमत के हिस्सादार गए।

जब बनू-नज़ीर मुहम्मद बिन मस्लम सहाबी की निगरानी में मदीना से कूच कर रहे थे तो कुछ अंसार ने उन लोगों को उनके साथ जाने से रोकना चाहा जो दरहक़ीक़त अंसार की औलाद से थे परंतु उनके मिन्नत मानने के नतीजा में यहूदी हो चुके थे और बनू-नज़ीर उनको अपने साथ ले जाना चाहते थे लेकिन चूँकि अंसार का यह मुतालिबा इस्लामी हुक्म لَآ إِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ अर्थात (दीन के मामले में कोई जबर नहीं होना चाहिए के ख़िलाफ़ था, इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्लमानों के ख़िलाफ़ और यहूद के हक़ में फ़ैसला किया और फ़रमाया कि जो व्यक्ति भी यहूदी

है और जाना चाहता है हम उसे नहीं रोक सकते। जबकि बनू-नज़ीर में से दो आदमी स्वयं अपनी ख़ुशी से मुस्लमान हो कर मदीना में ठहर गए।" जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है।

"एक रिवायत आती है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बनू-नज़ीर के विषय में यह फ़ैसला किया था कि वह शाम की तरफ़ चले जाएं। अर्थात अरब में न ठहरें लेकिन बावजूद उसके उनके कुछ सरदार उदाहरणतः सल्लाम बिन अबी हुकेक और किनान बिन रबी और हुई बिन अख़्तब इत्यादि और एक हिस्सा अवाम का भी हिजाज़ के शुमाल में यहूदियों की मशहूर बस्ती ख़ैबर में जा कर मुक़ीम हो गया और ख़ैबर वालों ने उनकी बड़ी आओ-भगत की .. ये लोग अंततः मुस्लमानों के ख़िलाफ़ ख़तरनाक फ़िल्ला-अंगेज़ी और इश्तिआल जंग का बने।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए पृष्ठ 527-528)

बनू-नज़ीर से हासिल होने वाला माल माल-ए-फ़ी कहलाता है। इस की तक़सीम किस तरह हुई। इस बारे में लिखा है कि क़बीला बनू-नज़ीर के कूच करने के बाद उनका असलाह, बाग़ात, ज़मीनें और मकानात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने क़बज़ा में ले लिए। हथियारों में पच्चास ख़ूद, पचासी ज़िरहें और तीन सौ चालीस तलवारें थीं। ये मुस्लमानों को मिलने वाला पहला माल-ए-फ़ी था। माल-ए-फ़ी वह होता है जो कुफ़्फ़ार से जंग के बग़ैर हासिल हो जाए। इस माल में से माल-ए-ग़नीमत की तरह ख़ुमस नहीं निकाला जाता बल्कि सारे का सारा माल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इख़तेयार में होता था ताकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जहां चाहें उसे खर्च फ़रमाएं। बनू-नज़ीर से लड़ाई की नौबत ही नहीं आई थी बल्कि अल्लाह तआला ने अपने नबी का रोब और दबदबा उनके दिलों पर तारी कर दिया था। इस तरह अल्लाह तआला ने अपने रसूल को उनके माल का वारिस बना दिया। यह माल-ए-फ़ी था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके समस्त साज़ो सामान को मुस्लमानों में तक़सीम कर दिया ताकि वे उसे नेकी के कामों में ख़र्च करें। इस के विषय में इरशाद बारी तआला है कि وَمَآ أَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (अल् हशर : 7) और अल्लाह ने उनके अम्वाल में से अपने रसूल को जो बतौर ग़नीमत अता किया तो इस पर तुमने न घोड़े दौड़ाए और न ऊंट। लेकिन अल्लाह अपने रसूलों को जिन पर चाहता है मुसल्लत कर देता है। अर्थात कोई जंग नहीं हुई। और अल्लाह हर चीज़ पर जिसे वे चाहे दायमी क़ुदरत रखता है।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 पृष्ठ 189-190 बज़-ए-इक़बाल लाहौर 2022 ई.)

अंसार के अजीब प्रेम और क़ुर्बानी के योग्य इज़हार का उदाहरण भी हमें यहां मिलता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने माल-ए-फ़ी तक़सीम करते वक़्त हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शम्मास से फ़रमाया कि मेरे सामने अपनी क़ौम को इकट्ठा करो। उन्होंने दरयाफ़त किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ज़रज? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया समस्त अंसार को बुलाओ। तो उन्होंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए ओस और ख़ज़रज को बलालया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमद-ओ-सना के बाद अंसार के मुहाजेरीन से हुस्न-ए-सुलूक का वर्णन करते हुए फ़रमाया अर्थात जो हुस्न-ए-सुलूक अंसार ने मुहाजेरीन के साथ किया था उस का वर्णन किया और अंसार को फ़रमाया कि अगर तुम चाहो तो बनू-नज़ीर से हासिल शूदा माल फ़ी तुम्हारे और मुहाजेरीन के मध्य तक़सीम कर दिया जाए। इस सूरत में मुहाजेरीन तुम्हारे घरों पर क़ाबिज़ और मालों के मालिक रहेंगे। और अगर तुम्हारी मर्ज़ी हो तो मैं माल-ए-फ़ी मुहाजेरीन में तक़सीम कर दो। इस सूरत में वे तुम्हारे दिए हुए घरों से निकल जाऐंगे। अर्थात अब जो जायदादें आपस में तक़सीम की हुई थीं और जो फ़ायदा अंसार से मुहाजेरीन उठा रहे थे वह ख़त्म हो जाएगा क्योंकि उनके अपने पास जायदाद हो जाएगी। इस पर हज़रत साद बिन उबादः और हज़रत साद बिन मआज़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि हमारे अम्वाल उनके पास रहने दीजिए और बनू-नज़ीर के समस्त अम्वाल भी हमारे मुहाजिर भाईयों में तक़सीम कर दें। जो हमने दिया हुआ है वे भी उनके पास रहे और बनू-नज़ीर का जो माल है, फ़ी का माल वह भी उनमें दे दें। यह सुना जब तू मुहाजेरीन की हर तरफ़ से सदाएँ आने लगीं कि رَضِيْنَا وَسَلَّمْنَا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ۔ अर्थात हे अल्लाह के रसूल! हम इस पर ख़ुश हैं और हमने उसे तस्लीम किया।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस ईसार-ओ-क़ुर्बानी के जज़्बे को देखकर इंतेहाई ख़ुश हुए और फ़रमाया اَللّٰهُمَّ ارْحَمِ الْأَنْصَارَ وَأَبْنَاءَ الْأَنْصَارِ हे अल्लाह अंसार और उनकी औलादों पर रहम फ़र्मा।

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अधिकतर अम्वाल मुहाजेरीन की जमाअत में तक़सीम फ़र्मा दिए। अंसार में से केवल दो तंगदस्त सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को इस माल से नवाज़ा गया और वे हज़रत सहल बिन हुनेफ़ और हज़रत अबू दुजाना थे। इब्ने उयैना वर्णन करते हैं कि मैंने ज़ोहरी को कहते हुए सुना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बनू-नज़ीर के अम्वाल में से हज़रत सहल बिन हुनेफ़ और हज़रत अबू दुजाना के अतिरिक्त अंसार में से किसी को हिस्सा नहीं दिया क्योंकि ये दोनों तंगदस्त थे इसलिए उनको हिस्सा दिया गया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सइद बिन माआज़ को बिन अबील् हलीक की तलवार अता की। इस तलवार की बड़ी शौहरत थी। (सब्लुल हुदा वल् रिशाद भाग 4 प्रष्ठ 325 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 1993 ई.)

(अल् तब्कातुल कुबरा लेइब्ने साद भाग 3 पृष्ठ 247 दारुल आह्या अल् तुर्रास अर्बिया बेरूत)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बक़ीया सामान गरीबों में तक़सीम कर दिया और कुछ अपने लिए रखा जो पवित्र पत्नियों के अख़राजात के लिए था। एक रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन्हे बनू-नज़ीर के बाग़ात से हासिल होने वाले गले में से साल भर का ख़र्च अपनी अज़्वाज को दे देते थे। अपनी पत्नियों को उनका जो साल का ख़र्चा था वे देते और बाक़ी जो बच जाता था उसे जिहाद की तैयारी के लिए ख़र्च करते थे। ग़रीबों और नादारों की इआनत भी इसी माल से की जाती थी। बनू-नज़ीर के सात बाग़ात थे जिन पर आज़ाद करदा ग़ुलाम हज़रत अबू राफ़े को निर्धारित किया गया था। अर्थात वे उनके मैनेजर थे। इन बाग़ात के नाम ये थे। मीसब साफ़िया, दिलाल, हुस्ना, बुरका, ओवाफ और मश्रम बिहाम और इब्राहीम।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 प्रष्ठ 191 बज़्म-ए-इक़बाल लाहौर 2022 ई.)

बहरहाल यहां ग़ज़वा बनू-नज़ीर का वर्णन ख़त्म हुआ है। आगे इन शा अल्लाह दूसरे ग़ज़वात का वर्णन होगा।

पाकिस्तान के अहमदियों के लिए दुआएं जारी रखें। वहां के हालात की बेहतरी के लिए दुआएं करते रहीं। अल्लाह तआला वहां की उमूमी अमन शांति की हालत को भी बेहतर करे और अहमदियों को अपनी हिफ़ाज़त में रखे।

ुनिया में मुस्लमानों की उमूमी हालत के लिए भी दुआ करें ये लोग भी ज़माने के इमाम को मान कर अपना वक़ार पुनः हासिल कर सकें।

दुनिया में जंग की जो उमूमी सूरत-ए-हाल बन रही है इसके लिए भी दुआ करें जिस तरफ़ दुनिया जा रही है ये जंग तो लगता है अब ज़रूर होनी है लेकिन अल्लाह तआला हर अहमदी और हर मासूम को इस के उपद्रव से सुरक्षित रखे।

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। संस्थान

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

इन ग़ज़वात से भी यह साबित होता है कि ये ग़ज़वात दुश्मन के उपद्रव को रोकने और उनके अपने बुरे इरादों को ख़त्म करने और शांति की फ़िज़ा क़ायम करने के लिए किए गए थे न कि किसी क़तल-ओ-ग़ारत और नाजायज़ वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए और अमन बर्बाद करने के लिए

जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़ज़व-ए-बदर अल् मोहिद के लिए निकलने की तहरीक फ़रमाई और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी तक़रीर में फ़रमाया कि हमने कुफ़्फ़ार के चैलेंज को क़बूल करके इस अवसर पर निकलने का वादा किया है इसलिए हम इसे इटाल नहीं सकते और चाहे मुझे अकेला जाना पड़े मैं जाऊँगा और दुश्मन के मुक़ाबिल पर अकेला सीना ताने रहूँगा तो लोगों का ख़ौफ़ जाता रहा और वे बड़े जोश और इख़लास के साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ निकलने को तैयार हो गए

जंग-ए-ओहोद के बाद विभिन्न क़बायल जो मुस्लमानों को कमज़ोर समझ कर उन पर हमला करने की योजना करने लगे थे उन पर आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बड़ी हिक्मत और सफ़लता से मुस्लमानों की क़ुव्वत और दिलेरी के प्रभावों को बहाल फ़रमाया

ग़ज़व-ए-बदरुल मौऊद में जबकि अमली लड़ाई नहीं हुई जबकि मुस्लमानों का वक़ार और विश्वास बहाल हुआ और दुश्मन पर रोब में ख़ूब इज़ाफ़ा हुआ

"यह ग़ज़वा इस रंग में पहला ग़ज़वा था कि इसका उद्देश्य या कम से कम बड़ा उद्देश्य मुल्क में अमन का स्थापति करना थी"
(हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो)

ग़ज़व-ए-बदरुल मौऊद, ग़ज़व-ए-दूमतुल जिंदल के कारण और हालात और वाक़ियात का विस्तारपूर्वक और प्रभावी वर्णन

दुनिया में क़ायम-ए-अमन के लिए की गई तहरीक

मुस्लमानों को अपनी सुरक्षा के सामान करने होंगे। एक इकाई बनना होगा। अपनी हालतों को बेहतर करना होगा। अल्लाह तआला करे कि ये उसे समझने वाले हों

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 05 जुलाई 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

आज दो ग़ज़वात का वर्णन करूँगा। पहले ग़ज़वा का नाम है ग़ज़व-ए-बदरुल मौऊद जो चार हिज्री में हुआ। यह ग़ज़वा बदरुल मौऊद , बदरुल सानीया, बदरुल आख़िरा और बरुल् सुग्रा के नामों से प्रसिद्ध है

(अल् हरीकुल मखतूम पृष्ठ 313-312 मक्तबा अल् रुश्द नाशेरून 2000 ई.)

इस ग़ज़वा की तारीख़ के मुताल्लिक़ विभिन्न क़ौल मिलते हैं। इब्न-ए-हश्शाम और इब्न-ए-इसहाक़ के मुताबिक़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम माह शाबान चार हिज्री में बदर की तरफ़ रवाना हुए।

(सीरतुन्नब्वी ले इब्ने हश्शाम पृष्ठ 618 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

(सीरतुन्नब्वी ले इब्ने इसहाक़ पृष्ठ 391 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2004 ई.)

वाक़दी के मुताबिक़ यह ग़ज़वा चार हिज्री ज़ुल्-कादा का चांद नज़र आने पर हुआ और बदर में एक ज़ुल्-कादा से आठ ज़ुल्-कादा तक बाज़ार लगता था।

(किताब अल् मग़ाज़ी वाक़दी भाग 1 प्रष्ठ 324 325 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

एक रिवायत में वर्णन आता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शवाल में बदर की तरफ़ रवाना हुए थे अर्थात मदीना से रवाना हो कर आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़ुल्-कादा की चांद की रात को मैदान-ए-बदर में पहुंचे। बहरहाल इन तीनों के अनुसार यह ग़ज़वा चार हिज्री में हुआ।

(सीरतुल हल्-बिया भाग 2 पृष्ठ 373-374 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

जबकि महीने में मतभेद है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी इस ज़िमन में लिखा है कि 4 हिज्री में जब शवाल के महीना का आख़िर आया तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम डेढ़ हज़ार सहाबा की जमीअत को साथ लेकर मदीना से निकले।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 529)

इस ग़ज़वा का कारण यह है कि अबूसुफ़ियान बिन हरब् जब ग़ज़व-ए-ओहोद से वापस पल्टा तो उसने ऊंची आवाज़ में कहा था कि अगले वर्ष हमारी और तुम्हारी मुलाक़ात बदरुल सुफ़रा के मुक़ाम पर होगी। बदर को बदरुल सुफ़रा भी

कहा जाता है। हम वहां जंग करेंगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को फ़रमाया कि उसे कहो कि हाँ। इन शा अल्लाह। अल्लामा बैज़ावी ने लिखा है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुद जवाब दिया था। इन शा अल्लाह। बदर मक्का और मदीना के मध्य एक प्रसिद्ध कुँआं है जो वादी सुफ़रा और जार स्थान के मध्य स्थित है। बदर मदीना के दक्षिण पश्चिम में एक सौ पच्चास किलो मीटर के फ़ासले पर वाक़्य है। यह उस जगह की लोकेशन है। ज़माना-ए-जाहिलियत में इस जगह हर वर्ष 1 ज़ुल् कादा से आठ रोज़ तक एक बड़ा मेला लगा करता था। कहने को तो अबू सुफ़ियान ने ग़रूर में आकर यह ऐलान कर दिया था लेकिन अब जूँ-जूँ वाअदे का वक़्त क़रीब आ रहा था अबूसुफ़ियान मुक़ाबले से कतराने लगा था लेकिन ज़ाहिर यूं कर रहा था कि वे एक बहुत बड़ा लश्कर लेकर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमपर हमला-आवर होने की तैयारी कर रहा है ताकि यह ख़बर अहल-ए-मदीना तक पहुंच जाए और अरब के अन्य हिस्सों में भी फैल जाए और मुस्लमानों को इस से ख़ौफ़-ज़दा किया जा सके। इसी दौरान बनू अशजा से ताल्लुक़ रखने वाला एक शख़्स नईम बिन मसऊद मक्का गया। उसने बाद में इस्लाम भी क़बूल कर लिया था। उसने वहां अबूसुफ़ियान से मुलाक़ात की और कहने लगा कि मैं मक्का इस ग़रज़ से आया हूँ कि तुम्हें मुस्लमानों की तैयारी के मुताल्लिक़ आगाह करूँ। मैंने ख़ुद देखा है कि उनके पास बे-तहाशा असलाह, ऊंट और घोड़े हैं और उन्होंने अपने हलीफ़ क़बीले को भी साथ मिला लिया है। अब वे बड़े ज़ोर-ओ-शोर से हमला-आवर होने वाले हैं। देखो तुमने ख़ुद मुक़ाबला के लिए पुकारा था अब इस वादे का वक़्त क़रीब आ गया है। लिहाज़ा तुम मैदान-ए-कार-ज़ार में अपने जोहर दिखाओ। अबूसुफ़ियान बात टालते हुए कहने लगा कि! तुम जानते हो कि हमारे इलाक़े में कहतसाली है। अरसा-ए-दराज़ से बारिश नहीं हुई। पानी के तालाब ख़ुशक हैं। चरागाहों में जानवर और सवारी के जानवरों के लिए घास का तिनका तक नहीं है। हर तरफ़ रिज़्क़ की तंगी है। इसलिए अक्लमंदी इसी में है कि हम ये दिन गुज़ार लें उसके लिए तुम अहम किरदार अदा कर सकते हो। उससे मदद मांगी कि तुम मदीना जा कर लोगों को हमारे अज़ायम और अफ़रादी क़ुव्वत के मुताल्लिक़ बढ़ा चढ़ा कर मालूमात दो और उसे ख़ूब मशहूर करो ताकि हमारा भरम भी रह जाए और मुस्लमान ख़ुद ही डर के मारे बदर की तरफ़ न आएं। नईम ने कहा उसके बदले मुझे क्या दोगे? अबू सुफ़ियान ने बीस ऊंटों की पेशकश की जो नईम ने बख़ुशी क़बूल कर ली और कहा कि यह इनाम सुहेल बिन अम्र के सपुर्द कर दिया जाए। फिर मैं इस काम के लिए जाऊँगा। सुहेल उस का गहरा दोस्त था उसकी यक़ीन दहानी पर नईम चलने के लिए तैयार हो गया। उसे तेज़-रफ़्तार ऊंट दिया गया ताकि इस मंसूबे को जल्द से जल्द अमली जामा महनाया जाए।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 पृष्ठ 240 बज़म-ए-इक़बाल लाहौर 2022 ई.)

(एटलस सीरत नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पृष्ठ 216 दारुस्सलाम रियाज़ 1424 हि)

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 337 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

(ग़ज़वातुन्नबी(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) पृष्ठ 259 ज़ावीया पब्लिशरज़ लाहौर 2018 ई.)

नईम ने रख़्त-ए-सफ़र बाँधा और मदीना की तरफ़ चल पड़ा। उसने उमरा करके सर मूंढ रखा था। मदीना की तरफ़ सरपट भागा जा रहा था। वह तुरंत मदीना पहुंचना चाहता था कि कहीं इस्लामी लश्कर मदीना से चल न पड़े। इसलिए जब वह मदीना पहुंचा तो मुस्लमान बड़े जोश-ओ-ख़ुरोश से जिहाद की तैयारी में व्यस्त थे। मुस्लमानों ने उस से पूछा नईम कहाँ से आए हो? उसने बताया मैं उमरा करके मक्का से आ रहा हूँ। उन्होंने कहा फिर तो तुम्हें अबू सुफ़ियान के बारे में इलम होगा। इसकी जंग की तैयारी कैसी है? उसने कहा कि अबूसुफ़ियान ने तो बहुत से लश्कर इकट्ठे कर लिए हैं, सारा अरब अपने साथ मिला लिया है। बड़ा मुबालग़ा किया उसने। वह इतनी बड़ी फ़ौज लेकर आ रहा है कि इसका मुक़ाबला करना तुम्हारे बस की बात नहीं है। मेरी मानो तो तुम लोग मदीना ही में ठहरे रहो। जंग के लिए मदीना से बाहर मत जाओ। वह इतने बड़े लश्कर के साथ हमला-आवर होने वाला है कि इस से केवल वही बच सकेगा जो भाग निकलेगा। तुम्हारे सरकरदा लोग क़तल कर दिए जाऐंगे। ख़ुद मुहम्मद (सल्लल्लाहो वसल्लम) ज़ख़्मों की ताब न ला सकेंगे। क्या तुम मदीना से निकल कर मौत के मुँह में जाना चाहते हो? अफ़सोस तुमने अपने लिए बहुत बुरा फ़ैसला किया है। अल्लाह की क़सम मैं नहीं समझता कि तुम में से कोई बच निकलेगा। बड़ी मायू-सकुन बातें कीं ताकि वे डर जाएं। उसने बातों का ऐसा बतंगड़ बनाया कि कभी अबूसुफ़ियान की तैयार करदा सिपाह की अददी कसरत का वर्णन, कभी उनके असलेह के ज़ख़ायर का वर्णन, कभी क़ुरैश के सरदारों के जोश-ओ-ख़ुरोश की हिकायत, कभी उनकी ख़तरनाक जंगी चालों की मदह-सराई। उसने ऐसी महारत से अपनी मुहिम चलाई कि चंद ही रोज़ में मदीना की फ़िज़ा ख़ौफ़-ओ-हिरास से मस्मूम हो गई।

नईम बिन मसऊद की चाल कारगर साबित हुई। कमज़ोर ईमान वाले मुस्लमान उसकी अफ़्वाहों से वाक़ई भयभीत हो गए यहाँ तक कि जो भी बात करता वह नईम बिन मसऊद के क़ौल की तसदीक़ करता था। हर मज्लिस में अबूसुफ़ियान के लश्कर-ए-जर्रार और ख़ौफ़नाक तैयारी का वर्णन छुड़ा हुआ था। मुस्लमानों की ये हालत देख कर यहूद और मुनेफ़क़ीन ख़ुशी से फूले नहीं समा रहे थे और एक दूसरे को ये ख़ुशख़बरी सुना रहे थे कि अब इस्लाम के मानने वालों का वजूद सफ़ा-ए-हस्ती से मिट जाएगा।

(सीरत इन्साइक्लोपीडिया भाग 7 पृष्ठ 91 दारुस्सलाम रियाज़ 1435 हि)

मदीना की इस कैफ़ीयत के वक़्त में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उम्र रज़ियल्लाहु अन्हो रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उन्होंने अर्ज़ की हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला अपने दीन को ग़ालिब करेगा। अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इज़्ज़त देगा। हमने क़ौम के साथ वादा किया था और हम उस की ख़िलाफ़वरज़ी पसंद नहीं करते। वे अर्थात कुफ़्फ़ार उसे बुज़दिली शुमार करेंगे अगर हम वहां मैदान में न जाएं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वादे के मुताबिक़ तशरीफ़ ले चलें। ख़ुदा की कसम इस में ज़रूर भलाई है। यह जज़्बात सुनकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बहुत प्रसन्न हुए और फ़रमाया وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِہٖ لَاَخْرُجَنَّ وَاِنْ لَّمْ یَخْرُجْ مَعِیَ اَحَدٌ۔ उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है मैं ज़रूर निकलूँगा ख़ाह मेरे साथ एक फ़र्द भी न निकले।

मुस्लमानों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अज़्म और हिम्मत और हौसला देखा तो ख़ौफ़-ओ-हिरास की कैफ़ीयत ख़त्म हो गई और वे जोश--ओ-ख़ुरोश से तैयारी करने लगे।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बहग 7 पृष्ठ 241- 242 बज़म-ए-इक़बाल लाहौर2022 ई.)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी इस ग़ज़व-ए--बदरुल मौऊद के बारे में लिखा है कि "अबू-सुफ़ियान बिन हर्ब .. बावजूद ओहोद की फ़तह और इतनी बड़ी जमईयत के साथ होने के उस का दिल भयभीत था और इस्लाम की तबाही के दर पर होने के बावजूद वो चाहता था कि जब तक बहुत ज़्यादा जमईयत का इंतेज़ाम न हो जाए वे मुस्लमानों के सामने न हो। इसलिए अभी वह मक्का में ही था कि उसने एक शख़्स नईम नामी को जो एक ग़ैर जनिबदार क़बीला से ताल्लुक़ रखता था मदीना की तरफ़ रवाना कर दिया और उसे ताकीद की कि जिस तरह भी हो मुस्लमानों को डरा धमका कर और झूठ सच्च बातें बना कर जंग से निकलने के लिए बाज़ रखे। इसलिए यह शख़्स मदीना में आया और क़ुरैश की तैयारी और ताक़त और उन के जोशो ख़रोश के झूठे क़िस्से सुना-सुना कर उसने मदीना में एक बेचैनी की हालत पैदा कर दी। यहाँ तक कि कुछ कमज़ोर तबीयत लोग इस ग़ज़वा में शामिल होने से ख़ायफ़ होने लगे परंतु जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने निकलने की तहरीक फ़रमाई और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी तक़रीर में फ़रमाया कि हमने कुफ़्फ़ार के चैलेंज को क़बूल कर के इस अवसर पर निकलने का वादा

किया है इसिए हम इस से तख़ल्लुफ़ नहीं कर सकते और ख़ाह मुझे अकेला जाना पड़े मैं जाऊँगा और दुश्मन के मुक़ाबिल पर अकेला सीना-सपर हूँगा तो लोगों का ख़ौफ़ जाता रहा और वे बड़े जोश और इख़लास के साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ निकलने को तैयार हो गए।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 529)

और इस तरह दुबारा तैयारी शुरू हो गई। बहरहाल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब अबूसुफ़ियान के लश्कर की तैयारी के बारे में ख़बर मिली तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उबैय बिन सलूल जो रईस आलेमुल मुनाफ़ेक़ीन अब्दुल्लाह बिन उबैय के मुख़लिस और जांनिसार बेटे थे, बड़े पक्के मुस्लमान थे उनको अपने पीछे मदीना का अमीर निर्धारित फ़रमाया। एक रिवायत के मुताबिक़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह को अमीर निर्धारित किया। बहरहाल हो सकता है कि विभिन्न कामों के लिए दोनों को मुंतज़िम बनाया हो या यह भी हो सकता है कि रावी को अब्दुल्लाह के नाम से शुबा पड़ गया हो। किसी ने अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह कह दिया और किसी ने अब्दुल्लाह बिन रवाह का वर्णन कर दिया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना झंडा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को अता फ़रमाया और पंद्रह सौ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के हमराह बदर की जानिब रवाना हुए।

इस लश्कर में दस घुड़सवार थे। एक घोड़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए था। इसके इलावा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत मिक्दार बिन अस्वद रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत हुबेब् बिन मुनज़िर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अबअद बिन बशर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास घोड़े थे। मुस्लमान अपने तिजारती माल के साथ बदर की तरफ़ निकले। ज़ुल्-क़ादा का चांद तलूअ हुआ तो मुस्लमान मैदान-ए-बदर में पहुंच चुके थे। देखा जाए तो मुस्लमान तो अबूसुफ़ियान के साथ लड़ाई और मुक़ाबले के लिए जा रहे थे लेकिन उनका तिजारती माल और कारण साथ लेकर निकलना उनके इस अज़म-ओ--हिम्मत और यक़ीन पर दलालत करता है और कोई बईद नहीं कि नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ही इरशाद या इशारे पर वे तिजारती अम्वाल लेकर निकले हों कि अबूसुफ़ियान या तो मुक़ाबले पर आएगा नहीं और अगर आया तो बुरी तरह शिकस्त खा कर भाग जाएगा और इन्ही तारीख़ों में वहां जो मेला लगा करता था मुस्लमान वहां ख़रीद-ओ-फ़रोख़्त की तिजारत करके फ़ायदा उठाएँगे और अमलन फिर ऐसा ही हुआ। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वादा के मुताबिक़ अबूसुफ़ियान के इंतेज़ार में बदर में क़ियाम फ़र्मा थे कि मख़्स् बिन अम्र आपके पास आया। यह बनू ज़मर का सरदार था और दो हिज्री में इस क़बीले के साथ मुस्लमानों का एक मुआहिदा हुआ था किसल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमबनू ज़मुर पर हमला नहीं करेंगे और न बनू ज़मुर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमके ख़िलाफ़ कोई कार्रवाई करेंगे, नकिसी कार्रवाई में हिस्सा लेंगे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के किसी दुश्मन की मदद भी नहीं करेंगे। उसने कहा कि हे मुहम्मद सल्लल्लाहो वसल्लम! क्या आप इस चशमा पर क़ुरैश से जंग करने आए हैं? इस की गुफ़्तगु से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अंदाज़ा लगा लिया कि यह शख़्स क़ुरैश की तरफ़ झुकाओ रखता है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हाँ हे बनू ज़मुरा के भाई! अगर तू चाहता है तो हमारे और तुम्हारे मध्य जो सुलह का मुआहिदा है उसे ख़त्म करके हम तुमसे जंग कर लेते हैं यहां तक कि ख़ुदा तआला हमारे और तुम्हारे मध्य फ़ैसला कर दे? मख़मस ने कहा हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा की कसम हमें आपसे जंग करने की कोई ज़रूरत नहीं।

(सीरतुल हल्-बिया भग 2 सफ़ा374 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

(एटलस सीरत नब्वी पृष्ठ 202 दारुस्सलाम रियाज़ 1424 हि)

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 पृष्ठ 242- 244 बज़म इक़बाल लाहौर 2022 ई.

(अलल् सीरतुल् नब्वी ले इब्ने हश्शाम पृष्ठ 618 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

इस मुलाक़ात में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हिक्मत और दिलेरी से इस क़बीले पर वाज़िह कर दिया कि हमारे मध्य जंग बंदी का मुआहिदा किसी बुज़दिली और कमज़ोरी की बिना पर नहीं था और इस प्रकार जंग-ए--ओहोद के बाद विभिन्न क़बायल जो मुस्लमानों को कमज़ोर समझ कर उन पर हमला करने के मंसूबे करने लगे थे उन पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बड़ी हिक्मत और कामयाबी से मुस्लमानों की क़ुव्वत और दिलेरी के असरात को बहाल फ़रमाया।

(उद्धृत सीरत इन्साइक्लोपीडिया भाग 7 पृष्ठ 97 दारुस्सलाम रियाज़ 1435 हि)

मुस्लमान तो हसब-ए-वादा बदर के मैदान में पहुंच चुके थे। जबकि दूसरी तरफ़ अबूसुफ़ियान ने सरदारों ने क़ुरैश से कहा कि हमने नईम बिन मसऊद को भेज दिया है वे मुस्लमानों को सफ़र पर रवाना होने से पहले पस्तहिम्मत कर देगा। वे इंतेहाई कोशिश कर रहा है लेकिन हम एक या दो रातों के लिए निकलेंगे फिर हम वापस आ जाऐंगे। अगर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सफ़र के लिए न निकले तो हम बड़े आराम से कह देंगे कि हम तो गए थे लेकिन मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनके साथी ही नहीं आए और इस तरह पर हमारी फ़तह होगी और अगर वे सफ़र के लिए निकल पड़े तो हम ज़ाहिर करेंगे ये सूखे का वर्ष है। हमारे लिए शादाबी का साल (निकलने के लिए) बेहतर होगा और यह कह कर रास्ते से ही पलट आएँगे। क़ुरैश ने कहा यह अच्छा मश्वरा है। इस पर कुफ़्फ़ार का लश्कर अबू सुफ़ियान की क़ियादत में मक्का से रवाना हुआ। उनकी संख्या दो हज़ार थी। उनमें से पच्चास घुड़सवार थे। ये लश्कर मररूल जोहरान नामी चशमा पर ख़ेमा-ज़न हुआ। मररूल जोहरान मक्का से बाईस किलो मीटर शुमाल में है।

कहतसाली के कारण क़ुरैश के आर्थिक हालात वाक़ई ख़राब थे और उनकी आमदनी के ज़राए कम हो गए थे। इसलिए उनको निर्धारित वक़्त और जगह पर पहुंचने की हिम्मत नहीं हो रही थी अर्थात बदर पर पहुंचने की लेकिन शर्मिंदगी के डर से इस लश्कर ने कूच किया।

उनका सिपहसालार मक्का से ही बोझल और बद-दिल था। वह बार-बार मुस्लमानों से होने वाली जंग का अंजाम सोचता था और उनकी हैबत के मारे लरज़ रहा था। मर्रों जोहरान पहुँच कर उसकी हिम्मत जवाब दे गई और वह वापसी के बहाने सोचने लगा और आख़िर कार अपनी फ़ौज में वापसी का ऐलान और इस बात की वज़ाहत करने के लिए खड़ा हुआ। उसने कहा कि हे क़ुरैश के लोगो तुम्हारे लिए शादाबी और हरियाली का साल जंग के लिए मौज़ूं रहेगा ताकि तुम जानवरों को भी चुरा सको और ख़ुद भी दूध पी सको। इस वक़्त ख़ुशकसाली है। लिहाज़ा मैं वापस जा रहा हूँ तुम भी वापस चले चलो। अबू-सुफ़ियान के इस फ़ैसले की मुख़ालेफ़त किए बग़ैर सबने वापसी की राह ली और किसी ने भी सफ़र जारी रखने और मुस्लमानों से जंग की राय नहीं दी। जिससे मालूम होता है कि पूरे लश्कर के आसाब पर मुस्लमानों की हैबत छाई हुई थी।

(इन्साईकलोपीडीया भाग 7 पृष्ठ 96-95 दारुस्सलाम रियाज़ 1435 हि)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वादा के मुताबिक़ अबूसुफ़ियान के इंतेज़ार में बदर में आठ रोज़ क़ियाम करने के बाद मदीना वापस आ गए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमइस ग़ज़वा के लिए कुल सोला रातें मदीना से बाहर रहे। दुश्मन मद्द-ए-मुक़ाबिल आने की हिम्मत नहीं कर सका। उस की ख़ूब सुबकी हुई। मुस्लमानों के हौसले बुलंद हुए। इस इलाक़े के बाअज़ मुक़ामी काफ़िरों का झुकाओ क़ुरैश मक्का की तरफ़ था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने निहायत बहादुरी से उन पर अपना अज़म वाज़ेह किया तो वे भी दुबक गए। बदर के बाअज़ ताजिर फ़ारिग़ हो कर मक्का गए और अबू सुफ़ियान को मुस्लमानों की मुस्तहकम सूरत-ए-हाल की तफ़सील से आगाह किया। अबू-सुफ़ियान और इसके साथी अपनी बुज़दिली और वादा-ख़िलाफ़ी पर निहायत खुश हुए।

इस ग़ज़वा में जबकि अमली लड़ाई नहीं हुई जबकि मुस्लमानों का वक़ार और एतेमाद बहाल हुआ और दुश्मन पर रोब में ख़ूब इज़ाफ़ा हुआ।

(किताबुल् मग़ाज़ी वाक़दी भाग 1 पृष्ठ 324 दारुल कुतुब इलमिया बेरूत 2004 ई.)

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 पृष्ठ 248 बज़म इक़बाल लाहौर 2022 ई.)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस ज़िमन में लिखा है कि "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम डेढ़ हज़ार सहाबा के साथ मदीना से रवाना हुए और दूसरी तरफ़ अबूसुफ़ियान अपने दो हज़ार सिपाहियों के हमराह

मक्का से निकला लेकिन ख़ुदाई तसर्रुफ़ कुछ ऐसा हुआ कि मुस्लमान तो बदर में अपने वादा पर पहुंच गए परंतु क़ुरैश का लश्कर थोड़ी दूर आकर फिर मक्का को वापस लौट गया। और इस का क़िस्सा यूं हुआ कि जब अबूसुफ़ियान को नईम की नाकामी का इलम हुआ तो वह दिल में ख़ायफ़ हुआ और अपने लश्कर को यह तलक़ीन करता हुआ रास्ता से लौटा कर वापस ले गया कि इस साल क़हत बहुत है और लोगों को तंगी है इसलिए उस वक़्त लड़ना ठीक नहीं है। जब कशाइश होगी तो ज़्यादा तैयारी के साथ मदीना पर हमला करेंगे। इस्लामी लश्कर आठ दिन तक बदर में ठहरा और चूँकि वहां माह ज़ुल् कादा के शुरू में हर साल मेला लगा करता था। इन दिनों में बहुत से सहाबियों ने इस मेला में तिजारत करके काफ़ी नफ़ा कमाया। यहाँ तक कि उन्होंने इस आठ रोज़ा तिजारत में अपने धन को दोगुना कर लिया। जब मेले का इख़तेताम हो गया और लश्कर क़ुरैश नहीं आया तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बदर से कूच कर के मदीना में वापस तशरीफ़ ले आए और क़ुरैश ने मक्का में वापस पहुंच कर मदीना पर हमले की तैयारियां शुरू कर दीं।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 529-530)

अब दुबारा क़ुरैश ने वापस पहुंच के शर्मिंदगी मिटाने के लिए और मुस्लमानों को नुक़्सान पहुंचाने के लिए फिर जंग की तैयारियां शुरू कर दीं। बहरहाल इस ग़ज़वा का यह अंजाम हुआ।

दूसरा ग़ज़वा है दूमतुल जंदल यह रबी उल् अव्वल पाँच हिज्री में हुआ। दूमतुल् जंदल मदीना से तक़रीबन चार-सौ पच्चास किलो मीटर के फ़ासले पर है। क़दीम दौर में यह सफ़र क़रीबन पंद्रह या सतरह दिनों में तै होता था। यह मदीना के शुमाल में शामी सरहद के क़रीब तरीन मुक़ाम था। यहां बनू क़ुजाह क़बीला की शाख़ बनू कल्ब के लोग आबाद थे। इस जगह बहुत बड़ी तिजारती मंडी लगती थी जो बनू कलब के ज़ेर-ए-इंतिज़ाम थी।0

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 पृष्ठ 249 बज़म इक़बाल लाहौर 2022 ई.)

दूमतुल जंदल वजह तसमीया क्या है? वहां एक क़िला था जो पत्थर की ख़ास किस्म से बनाया गया था। दूम का शब्द उस जगह पर भी बोला जाता है जहां सैलाबी रेले की वजह से गोल पत्थर ख़ासी मिक़दार में जमा हो जाते हैं। इस जगह को दूम कहने की वजह यह भी है कि हज़रत इसमाईल के दो बेटों दूमा या दूमान की तरफ़ ये मंसूब है। बहरहाल यह उसके नाम की वजह है।

इस ग़ज़वा की तारीख़ और लश्कर की तादाद के बारे में लिखा है कि यह ग़ज़वा समस्त इतिहासकार और सीरत निगारों के नज़दीक पाँच हिज्री में रबीउल् अव्वल की पच्चीस तारीख़ को हुआ था।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 पृष्ठ 249-250 बज़म इक़बाल लाहौर 2022 ई.)

इस की वजह क्या बनी इस के बारे में लिखा है कि अब तक मुख़ालेफ़ीन के साथ जितनी जंगी मुहिम्मात हुईं वह कम-ओ-बेश मदीना और हिजाज़ के इलाक़े तक ही महिदूद थीं और ये पहली मुहिम थी कि जो मदीना से दूर कम-ओ-बेश पंद्रह दिनों की मुसाफ़त पर रूमी सलतनत के सूबा शाम की सरहदों के क़रीब वक़ूअ पज़ीर होने जा रही थी। इस की पृष्ठभूमि यह है कि मुस्लमानों से पै दर पै शिकस्त खाने और मुस्लमानों के बढ़ते हुए रोब को महसूस करते हुए दुश्मनाँ-ए--दीन किसी ऐसे अवसर की तलाश में थे कि इस्लाम और मुस्लमानों को जड़ से ही ख़त्म कर दिया जाए। इस पर अमल करने के लिए मदीना के इंतेहाई शुमाल में शाम की सरहद से मुल्हिक़ दूमतुल जंदल के गर्द क़बायल ने इस्लामी रियासत को चैलेंज करते हुए एक बड़ा लश्कर तर्तीब देना शुरू कर दिया। उन्होंने चैलेंज किया कि हम हमला करेंगे। ये लोग तिजारती क़ाफ़िलों को लूट लेते थे। केवल चैलेंज ही नहीं था बल्कि उपद्रव भी उन्होंने बरपा किया हुआ था कि क़ाफ़िलों को लूटते थे। जो मुस्लमान हाथ लगता उसे अज़ीयतें देते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्ला-हो अलैहि वसल्लम को दूमतुल् जिंदल के इन क़बायल की समस्त हरकतों की ख़बर दी गई तो फ़ैसला हुआ कि क़बल उसके कि दूमतुल जंदल के क़बायल कोई बड़ी फ़ौज तैयार कर के मदीना पर चढ़ाई कर दें बेहतर है कि उनके इलाक़ा में पहुंच कर उन्हें इस तरह बिखेर दिया जाए कि वे मदीना पर लश्कर कुशी से बाज़ रहें और तिजारती क़ाफ़िले अमन से शाम पहुंच सकें।

(ग़ज़वात-ओ-सराया पृष्ठ 244-245 फ़रीद यह पब्लिशरज़ साहीवाल 2018 ई.)

इस की तैयारी के बारे में लिखा है कि नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम ने लश्कर तैयार करके लोगों को निकलने का हुक्म दिया और मदीना में हज़रत सिबा बिन उर्वफ़त गफ़्फ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हो को नायब बनाया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक हज़ार सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो का लश्कर लेकर रवाना हुए। सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमरात को सफ़र करते और दिन-भर छुपे रहते। बनू उज़्रा का एक शख़्स रास्ता बताने के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ था। उसका नाम मज़कूर था। वह एक माहिर रास्ता बताने वाला था। वह तेज़ी के साथ निकला और उसने सफ़र के लिए ग़ैर मानूस रास्ता इख़तेयार किया ताकि दुश्मन को ख़बर न हो। जब रसूलु-ल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दूमतुल जनदल के क़रीब पहुंचे तो रास्ता बताने वाले ने कहा यलह बनू तमीम की चरागाह है। यहां उनके ऊंट और मवेशी हैं। सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यहां ठहरें। मैं मालूमात लेकर आता हूँ। रसूलु-ल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : ठीक है। तो उज़्री अकेले मालूमात लेने के लिए गया और वहां चौपायियों और बकरियों के आसार देख लिए और यह भी कि वह अपनी पनाह गाहों में छुपे हुए थे। फिर वह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास वापस आया और ख़बर दी कि वह उनकी जगहें पहचान चुका है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहां से चल पड़े और उनके जानवरों और चरवाहों पर हमला किया और उनमें से कुछ पर क़बज़ा किया और बाक़ी भाग गए। दूमतुल जनदल वाले लोग जो वहां छिपे हुए थे, जो लड़ने के लिए तैयारी कर रहे थे वह मुंतशिर हो गए। और रसूलुल्लाह सल्लल्ला-हो अलैहि वसल्लम ने उनके मैदान में पड़ाव डाला। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वहां चंद दिन क़ियाम किया ओ रमुख़तलिफ़ गिरोह इर्दगिर्द भेजे। इस्लामी दस्ते बहिफ़ाज़त आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास वापस पहुंचे। हर गिरोह कुछ ऊंट लेकर आया लेकिन उन्हें कोई आदमी नहीं मिला। केवल हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा उनमें से एक आदमी को पकड़ कर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ले आए। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस से इस के साथीयों के बारे में दरयाफ़त फ़रमाया तो उसने कहा कि पिछली रात जब उन्होंने सुना कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनके जानवर पकड़ लिए हैं तो वे भाग गए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे इस्लाम की दावत दी तो वे मुस्लमान हो गया।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 342 दारुल कुतुब बेरूत 1993 ई.)

(इन्साईकलोपीडीया भाग 7 पृष्ठ 138 से 140 दारुस्सलाम रियाज़ 1435 हि)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी इस बारे में लिखा है कि ग़ज़व-ए-दूमतुल जंदल के बारे में तहरीर करते हुए कि "दूमतुल जंदल शाम की सरहद के क़रीब स्थित था और मदीना से उस का फ़ासिला पंद्रह सोला दिन की मुसाफ़त से कम नहीं था। इस ग़ज़वा की वजह यह हुई कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह इत्तिला मौसूल हुई कि दूमतुल जंदल में बहुत से लोग जमा हो कर लूटमार कर रहे हैं और जो मुसाफ़िर या क़ाफ़िला इत्यादि वहां से गुज़रता है उस पर हमला करके उसे तंग करते और उस का माल धन लूट लेते हैं। और साथ ही यह अंदेशा भी पैदा हुआ कि कहीं ये लोग मदीना का रख कर के मुस्लमानों के लिए परेशानी का कारण न हों। चूँकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जंगी कार्यवाईयों की एक अहम उद्देश्य क़ायम--ए-अमन भी थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जंगी कार्यवाईयों का असल उद्देश्य तो अमन का क़ियाम था "इसलिए बावजूद उस के कि इन लोगों की इस लूट मार से मदीना के मुस्लमानों को हक़ीक़तन कोई ज़्यादा अंदेशा नहीं था। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा में तहरीक फ़रमाई कि इस डाका ज़नी और ज़ुलम के सिलसिला को रोकने के लिए वहां चलना चाहिए। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तहरीक पर एक हज़ार सहाबी इस दूर दराज़ के तकलीफ़-दह सफ़र को इख़तेयार कर के आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ हो लिए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हिज्रत के पांचवें साल माह रबीउल अव्वल में मदीना से रवाना हुए और पंद्रह सोला दिन की तवील और प्रभावी मशक़्क़त दूरी तै करने के बाद दूमतुल जंदल के क़रीब पहुंचे। परंतु वहां जाकर मालूम हुआ कि ये लोग मुस्लमानों की ख़बर पाकर इधर उधर मुंतशिर हो गए थे और जबकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहां चंद दिन तक ठहरे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने छोटे छोटे दस्ते भी इधर उधर रवाना फ़रमाए ताकि उन मुफ़सेदीन का कुछ पता चले परंतु वह कुछ ऐसे लापता

हुए कि उनका कोई सुराग़ नहीं मिला। जबकि उनका एक चरवाहा मुस्लमानों के हाथ में क़ैद हो कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तब्लीग़ से मुस्लमान हो गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम चंद दिन के क़ियाम के बाद मदीना की तरफ़ वापस तशरीफ़ ले आए।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 540-541)

दूमतुल जंदल से वापसी के बारे में लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक़रीबन तीन दिन के क़ियाम के बाद समस्त लश्कर के साथ मदीना की तरफ़ रवाना हो कर बीस रबीउल् सानी को मदीना वापस तशरीफ़ ले आए।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 342 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 पृष्ठ 251 बज़म-ए-इक़बाल लाहौर 2022 ई.)

एक मुसन्निफ़ ग़ज़व-ए-दूमतुल जंदल के उद्देश्य का वर्णन करते हुए लिखता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने इस ग़ज़वा के कई उद्देश्य थे। यह बजा-ए-ख़ुद जंग नहीं थी जबकि इस से जज़ीरा नुमाए अरब के शुमाल के हालात से बाख़बर रहने और देख-भाल का अवसर मयस्सर आया। जज़ीरा नुमा अरब में क़ुव्वत के असल मराकज़ का खोज भी उस की सीमा में शामिल था। इस के साथ ग़ज़व-ए-दूमतुल जिंदल अपने नतायज--ओ-समरात के एतबार से भी बहुत मुफ़ीद साबित हुआ। सारा इलाक़े का पता भी लग गया और यही उद्देश्य था कि इलाक़े का पता लग जाए और जो ज़ुलम हो रहा है इस को भी दूर किया जाए। बहरहाल यह लिखता है कि अमलन न होने वाली ये जंग रहमत-ए-रब्बानी से मुस्लमानों के लिए आइन्दा की फ़तह--ओ-नुसरत के नतायज समेट रही थी। यह एक अस्करी कार्रवाई थी जो दरहक़ीक़त मुस्तक़बिल की मुम्किना जंग का सद्देबाब थी। असल में तो जंग हो सकने का जो इमकान था इस को रोकने के लिए यह कार्रवाई थी क्योंकि इस इलाक़े के बहुत सारे अरबी क़बायल मदीना पर चढ़ाई का इरादा रखते थे। इलावा अज़ीं यह एक सयासी जंग भी थी जिसने इन क़बायल की मुम्किना हमला आवरी को रोका जो जंग-ए-ओहोद में मुस्लमानों की आरिज़ी शिकस्त से फ़ायदा उठा कर मदीना पर चढ़ दौड़ने का ख़ाब देख थे।

इस जंग का एक उद्देश्य अरबों की नफ़सियाती डर को दूर करना भी था कि वह कभी सल्तनत-ए-रूम से जंग नहीं कर सकते।

केवल एक नहीं बल्कि अरबों पर उनका जो यह नफ़सियाती असर क़ायम हुआ था कि सल्तनत-ए-रूम से हम कभी मुक़ाबला नहीं कर सकते वह भी इस कार्रवाई से दूर हो गया। उन्हें अमलन यक़ीन देहानी करानी भी मक़सूद थी कि उनका पैग़ाम आलमी है केवल अरब तक महिदूद नहीं। इस कार्रवाई ने मुस्लमानों को यह तसल्ली भी करवा दी। इन अचानक और फ़ैसलाकुन इक़दामात और हकीमाना तदबीर पर मबनी मन्सूबों के ज़रीया नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस्लामी रियासत में अमन-ओ-अमान बहाल करने और सूरत-ए--हाल पर क़ाबू पाने में कामयाबी हासिल की और वक़्त की रफ़्तार का रुख मुस्लमानों के हक़ में मोड़ लिया और मुसलसल पेश आने वाली अंदरूनी और बैरूनी मुश्किलात की शिद्दत कम की जो हर जानिब से उन्हें घेरे हुए थी। बहुत सारे लोग जो मुख़ालेफ़ीन थे वे भी इस कार्रवाई से बाज़ आ गए। अंदरूनी तौर पर मुनाफ़ेक़ीन भी इस से बाज़ आ गए इसलिए मुनाफ़क़ीन ख़ामोश और मायूस हो कर बैठ गए। अरब के बद्दू ढीले पड़ गए और मुस्लमानों को इस्लाम फैलाने और रबईउल इल्मियान के पैग़ाम की तब्लीग़ करने का अवसर गया।

(सीरत इन्साइक्लोपीडिया भाग 7 पृष्ठ 140 दारुस्सलाम रियाज़ 1435 हि)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो जिनकी सीरतुन्नबी(-सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के मौज़ू पर बड़ी गहरी तहक़ीक़ है वह भी इस के बारे में लिखते हैं कि :

"यह ग़ज़वा इस रंग में पहला ग़ज़वा था कि इस की ग़रज़ या कम से कम बड़ी ग़रज़ मुल्क में अमन का क़ियाम थी।

अहल-ए-दूम का मुस्लमानों के साथ कोई झगड़ा नहीं था। वह मदीना से इतनी दूर थे कि उनकी तरफ़ से बज़ाहिर यह अंदेशा किसी हक़ीक़ी ख़तरा का मूजिब नहीं हो सकता था कि वे इतने लंबे सफ़र की सऊबत बर्दाश्त करके मदीना में मुस्लमानों की परेशानी का मूजिब होंगे। अतः उनके मुक़ाबला के लिए पंद्रह सोला दिन का तकलीफ़ दह सफ़र इख़तेयार करना हक़ीक़तन सिवाए उसके और किसी ग़रज़ से नहीं था कि उन्होंने जो अपने इलाक़ा में लूट मार का सिल्सिला जारी कर रखा था और बेगुनाह क़ाफ़िलों और मुसाफ़िरों को तंग करते थे उसका सद्द-ए-बाब किया जाए। अतः मुस्लमानों का यह सफ़र महिज़ लोगों की भलाई और देश की मजमूई बहबूदी के लिए था जिसमें उनकी अपनी कोई ग़रज़ मद्द-ए-नज़र नहीं थी। और यह एक अमली जवाब है उन लोगों का जिन्हों ने सरासर ज़ुलम और बे इंसाफ़ी के साथ मुस्लमानों की इब-तेदाई जंगी कार्यवाईयों को जो उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म के अधीन इख़तेयार कीं जारिहाना या ख़ुद-गरज़ाना क़रार दिया है। इस ग़ज़वा का एक नतीजा तो यह हुआ कि अहले दूमा हो कर अपनी इन मुफ़सिदाना कार्यवाईयों से कुछ आ गए और मज़लूम मुसाफ़िरों को इस ज़ुलम से नजात मिल गई और दूसरे शाम की सरहद में जहां अभी तक मुस्लमानों का केवल नाम ही पहुंचा था और लोग इस्लाम की हक़ीक़त से बिल्कुल अज्ञात थे इस्लाम का एक गोना इंट्रोडक्शन हो गया और इस इलाक़ा के लोग मुस्लमानों के तरीक़ व तमुद्दन से एक हद तक वाक़िफ़ हो गए। दूम्तुल जंदल के क़ुरब--ओ-जुवार में कुछ ईसाई भी आबाद थे। परंतु रिवायात में यह मज़कूर नहीं है कि आया यह मुफ़सदीन जिनके ख़िलाफ़ यह मुहिम इख़तेयार की गई ईसाई थे या कि बुतपरस्त मुशरिक। परंतु हालात से क़ियास होता है कि ग़ालिबन यह लोग मुशरिक होंगे क्योंकि अगर यह मुहिम ईसाईयों के ख़िलाफ़ होती तो इतिहासकार ज़रूर उसका वर्णन करते।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 541)

ईसाई इतिहासकार तो ज़रूर वर्णन करते। बहरहाल अल्लाह बेहतर जानता है।

इन ग़ज़वात से भी यह साबित होता है कि ये ग़ज़वात दुश्मन के उपद्रव को रोकने और उनके अपने बद इरादों को ख़त्म करने और शांति की फ़िज़ा क़ायम करने के लिए किए गए थे न कि किसी क़तल-ओ-ग़ारत और नाजायज़ तस-र्रुफ़ात के लिए और अमन बर्बाद करने के लिए।

तो यहजो इस्लाम पर, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर इल्ज़ाम है ये वाक़ियात उसकी नफ़ी करते हैं क्योंकि जंग नहीं हुई तो आराम से अमन से लोग वापस भी आ गए और किसी को नुक़्सान नहीं हुआ और इलाक़े में उमूमी तौर पर मुस्लमानों की इस कार्रवाई से अमन भी क़ायम हो गया। केवल मुस्लमानों के क़ाफ़िलों को ज़ुलम से नजात नहीं मिली बल्कि दूसरे क़ाफ़िलों को भी मिली। ये जो दोनों ग़ज़वे थे उनका वर्णन ख़त्म हुआ।

दुआ की तरफ़ भी दुबारा तवज्जा दिलाना चाहता हूँ। दुआ करें अल्लाह तआला दुनिया में उमूमी अमन भी क़ायम फ़रमाए वे अमन जिसकी ख़ातिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने ज़माने में भी कोशिशें की और यही उद्देश्य था आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आने का, यही उद्देश्य है इस्लाम की तालीम का। ये सब कुछ अल्लाह तआला के ख़ास फ़ज़ल से ही हो सकता है। इस के लिए दुआओं की ज़रूरत है। बज़ाहिर लगता है कि दुनिया वाले अब अपने पांव पर कुलहाड़ा मारने पर तुले हुए हैं ज़ाहिरी तौर पर अम्न की सूरत नज़र नहीं आ रही।

दूसरे उन् पश्चिमी देशों में अब मुस्लमानों के ख़िलाफ़ भी मुहिम बहुत तेज़ हो गई है। ख़्याल यही है कि आइन्दा मज़ीद होगी। इस के लिए भी उन्हें मु-स्लमानों को अपनी बक़ा के सामान करने होंगे। एक इकाई बनना होगा। अपनी हालतों को बेहतर करना होगा। अल्लाह तआला करे कि यह उसे समझने वाले हों।

मुस्लमान मुल्कों में सूडान इत्यादि में मुस्लमान मुस्लमानों पर जो ज़ुलम कर रहे हैं।

इस के लिए भी दुआ करें अल्लाह तआला उन्हें भी अमन क़ायम करने की तौफ़ीक़ दे। दीन का जो उद्देश्य है इस को ये भूल गए हैं। अपने भाईयों को मार रहे हैं तो यही वजह है कि जो ग़ैर हैं वे भी मुस्लमानों पर ज़ुलम कर रहे हैं।

अल्लाह तआला उनको अपनी अनाओं और ज़ाती ख़ाहिशात को पूरा करने की बजाय मुल्क-ओ-क़ौम की ख़िदमत करने वाला बनाए और अमन बर्बाद करने वाले बनने की बजाय अमन क़ायम करने वाला बनाए।

★ ★ ★

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जीवनी ख़ुत्बा हज्जतुल विदा की दृष्टि में (मानवीय समानता)

(श्रीमान मौलाना मुहम्मद इनाम ग़ौरी साहिब नाज़िर-ए-आला सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान)

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَآءً

(अल् निसा: 2) अनुवाद: । हे लोगो ! तुम सब अपने उस रब का तक़्वा इख़्तेयार करो जिसने तुम सबको एक जान से पैदा किया और फिर उस एक जान से उसने उस का जोड़ा बनाया और फिर उस जोड़े से बड़ी संख्या में मर्द और औरत फैला दिए।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ

(अल् हुजरात : 14) अनुवाद: हे लोगो ! निसन्देह हमने तुम्हें नर और मादा से पैदा किया है और तुम्हें क़ौमों और क़बीलों में तक़सीम किया ताकि तुम एक दूसरे को पहचान सको। निसन्देह अल्लाह के निकट तुम में सबसे ज़्यादा सम्मानित वह है जो सबसे ज़्यादा संयमी है। निसन्देह अल्लाह दायमी इलम रखने वाला (और) हमेशा बाख़बर है।

قُلْ اِنَّمَاۤ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰۤى اِلَيَّ اَنَّمَاۤ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ

(कहफ़ : 111)अनुवाद: हे मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तू यह ऐलान कर दे कि मैं तुम्हारी तरह का एक इंसान हूँ सिवाए इसके कि मेरी तरफ़ वह्यी की जाती है कि तुम्हारा माबूद एक (यानी अल्लाह) ही माबूद है।

इस्लामी समानता के फ़ल्सफ़ा का ख़ुलासा इन कुछ क़ुरआन की आयात में आ जाता है जिस की मैं ने अभी तिलावत की है और इस का अनुवाद सुनाया है।

सूरः निसा की आयत में अल्लाह तआला ने इन्सान को इस अबदी और दाइमी हक़ीक़त की तरफ़ तवज्जा दिलाकर कि वह सब एक ही बाप की औलाद और एक ही दरख़्त की शाख़ें हैं, दुनिया में सही समानता की बुनियाद क़ायम कर दी है और इस उसूल की निशानदेही कर दी है कि चाहे बाद के हालात के नतीजे में विभिन्न इन्सानों और विभिन्न क़ौमों और विभिन्न वर्गों में कितना ही फ़र्क़ पैदा हो जाएगी उन्हें आपस के निंदा में इस बात को कभी नज़र अंदाज नहीं करना चाहिए कि बहर हाल अपनी असल के लिहाज़ से वह एक ही जोड़े की नस्ल हैं।

और सूरः हिजरात की आयत में मज़ीद वज़ाहत फ़र्मा दी कि यह जो इंसानी समाज में विभिन्न क़ौमों और विभिन्न क़बायल की तक़सीम नज़र आती है यह केवल परिचय और शनाख़्त का एक माध्यम है। इस तक़सीम को एक दूसरे के मुक़ाबिल पर घमंड और बड़ाई का ज़रीया न बना लो। और याद रखो कि ख़ुदा के नज़दीक बल्कि एक सभ्य समाज में भी बड़ा और सम्मानित इन्सान वही है जो ज़ाती तौर पर ज़्यादा औसाफ़-ए-हमीदा का मालिक और ज़्यादा मुत्तक़ी और ज़्यादा परहेज़गार है।

और मोहसिन-ए-इन्सानियत हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने اِنَّمَاۤ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ फ़रमा कर कि याद रखो मैं भी तुम्हारे जैसा एक बशर, इन्सानियत के शरफ़ को उसकी अंतिम सीमा तक पहुंचा दिया है।

प्रिय श्रोताओं ! आज दुनिया बदअमनी और बेचैनी का शिकार है। इसका बड़ा कारण एक तो मज़हबी मुनाफ़िरत है दूसरे ज़ात पात का भेदभाव और रंग-ए-नस्ल का भेदभाव है। कहीं सफ़ैद रंग और काले रंग का झगड़ा है तो कहीं सरमाया-दार और मज़दूर का झगड़ा है । कहीं क़ौमी की बरतरी का घमंड है तो कहीं उच्च ज़ात का भ्रम है, जो अपने जैसे दूसरे इन्सानों को कमतर और छोटा करके दिखाता है और यू इन्सान, इन्सान के मध्य नफ़रत की लोहे की दीवार है। इस पृष्ठभूमि में आज हर तरफ़ समानता और बराबरी का चर्चा है। अमली तौर पर इस सब्ज़-बाग़ का क़ियाम किस हद तक संभव है और किस हद तक हो चुका है और ज़मीनी हक़ायक़ क्या तस्वीर पेश कर रहे हैं इसकी तफ़सील इस संक्षिप्त समय में वर्णन करना संभव नहीं लेकिन ऐलानात और प्रोपेगंडा का इंकार नहीं किया जा सकता। तरक़्क़ी याफ़ताह देशों में भी और तरक़्क़ी पज़ीर देशों में भी, समानता और बराबरी क़ायम करने के प्रसन्न करने वाले कानून ऐलानात मौजूद हैं चाहे वे जमहूरी निज़ाम हो या सोशलिज़्म या इश्तराकी निज़ाम हो, सब का दावा समानता क़ायम करने का है। उदाहरणतः यह कि अमीर गरीब का फ़र्क़ मिटा दिया जाए। मर्दों और औरतों में समानता और बराबरी क़ायम की जाए। हाकिम व महकूम, देशों में मज़दूर को एक लाइन में खड़ा कर दिया जाए इत्यादि। जबकि अमली तौर पर समानता क़ायम करने के लिए सबसे पहले इस बात का फ़ैसला करना ज़रूरी है कि किन विषयों में बनीनौ इन्सान के मध्य समानता और बराबरी क़ायम की जा सकती है। अगर की जा सकती है तो किस हद तक की जा सकती है।

इसके लिए हमें अल्लाह जो ख़ालिक़-ए-हक़ीक़ी है उसकी बुनियादी सिफ़ात रबूबियत। रहमानियत। रहीमियत और मालेकियत यौमिद्दीन को समझने की ज़रूरत है। केवल पहली विशेषता ही को ले लें तो क़ुरआन-ए-करीम ने अल्लाह को समस्त संसारों रब क़रार दिया है। अर्थात वह समस्त संसार, समस्त मख़लूक़ात का रब है, परवरदिगार है। वह केवल मुसलमानों का रब या मसीहियों का रब या रब्बुल्-यहूद या रब्बुल्-हनूद नहीं है। उसका आसमानी निज़ाम और ज़मीनी निज़ाम उसकी सिफ़त-ए-रबूबियत व राहमानियत के अधीन हर इन्सान को बराबर फ़ैज़ पहुंचा रहा है चाहे कोई इन्सान उस ख़ुदा को मानता है या नहीं उसकी इबादत करता है या नहीं करता, उसका सूरज चांद सबको रोशनी पहुंचा रहा है उसकी ज़मीन उसके दरिया उसकी हवा हर चीज़ बिना मतभेद के सबको लाभ पहुंचा रही है।

यह तो जस्मानी परवरिश और परवरिश के कारण हैं। इसी तरह रुहानी नशो नुमा और प्रगती के लिए भी ख़ुदा ने किसी क़ौम से अंतर नहीं किया। हर क़ौम में अपने रसूल और हादी भेजे इसलिए आयात क़ुरआन की وَلِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ (सूरः यूनुस : 48) और وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ (सूरः राद : 8) इत्यादि इस पर शाहिद हैं कि अल्लाह ने जो समस्त संसारों का रब है हर क़ौम और हर उम्मत में अपने हादी और रसूल भेजे हैं।

और उन पैग़म्बरों के मध्य भी समानता रख दी इसलिए फ़रमाया لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ (सूरः बक़रा : 286) कि हम मुस्लमान ख़ुदा के रसूलों के मध्य कोई फ़र्क़ नहीं रखते अर्थात मंसब-ए-रिसालत के लिहाज़ से सब बराबर हैं। हाँ उनकी ज़िम्मेदारियों और फ़रायज़ और दायरा-कार के लिहाज़ से बे-शक उनके मुरातिब में अंतर मौजूद है।

प्रिय श्रोताओ ! अब विनीति बनीनौ इन्सान की ख़लक़त अर्थात जन्म और उनकी ज़हनी व जसमानी सलाहियतों के समक्ष उनके हुक़ूक़ व फ़रायज़ के लिहाज़ से समानता के ज़िमन में ज़्यादा तफ़सील में नहीं जाते हुए सय्यदना हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ुत्बा हज्जतुल्-विदा की दृष्टि में चंद उमूर का संक्षिप्ता के साथ वर्णन पेश करता है।

याद रखना चाहिए कि सय्यदना हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सन् 9 हिज्री में बैतुल्लाह शरीफ़ का हज फ़रमाया रिवायात के अनुसार एक लाख चौबीस हज़ार से अधिक सहाबा शामिल थे। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यही एक पहला और आख़िरी हज था जो हज्जतुल् विदा के नाम से प्रसिद्ध है। इस में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अर्फ़ात और मिना के मैदानों में लंबा ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया जो विभिन्न रिवायात के माध्यम से बुख़ारी शरीफ़ और मस्नद अहमद बिन हम्बल इत्यादि अहादीस की कुतुब में दर्ज है। यह ख़ुत्बा बुनियादी नौईयत के इन्सानी फ़लाह-ओ-बहबूद और क़ियामत तक आने वाली नसलों की तालीम और तर्बियत के विभिन्न पहलूओं पर आधारित है विनीति अपने विषय के लिहाज़ से केवल मुसावात-ए-इन्सानी के पहलू को समक्ष रखते हुए इस बसीरत अफ़रोज़ ख़ुत्बे के चंद इक़्तेबासात का अनुवाद पेश करके कुछ अर्ज़ करूँगा।

ग्यारहवीं ज़ुल् हज्जा को मिना के मैदान में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़िताब फ़रमाते हुए फ़रमाया :

"हे लोगो मेरी बात को अच्छी तरह सुनो क्योंकि मैं नहीं जानता कि इस वर्ष के बाद कभी भी मैं तुम लोगों के मध्य इस मैदान में खड़े हो कर कोई तक़रीर

करूँगा।

हे लोगो तुम्हारा रब एक है और तुम्हारा बाप भी एक था। अतः होशयार हो कर सुन लो कि अरबों को अजमियों पर कोई फ़ज़ीलत नहीं और न अजमियों को अरबों पर कोई फ़ज़ीलत है इसी तरह सुर्ख़ व सफ़ेद रंग वाले लोगों को काले रंग के लोगों पर कोई फ़ज़ीलत नहीं और न काले लोगों को गोरों पर कोई फ़ज़ीलत है। हाँ जो भी उनमें से अपनी ज़ाती नेकी से आगे निकल जाए वही अफ़ज़ल है।"

तथा फ़रमाया : हे मुसलमानो ख़ुदा तआला ने ईमान के माध्यम से तुम में से ज़माना-ए-जाहिलीयत के व्यर्थ के अभिमान और अहंकार और पिता और वंश की वजह से बेजा तफ़ाख़ुर करने कर रोग को दूर कर दिया है। याद रखो सब लोग आदम की नसल से हैं और आदम मिट्टी से पैदा किया गया था।

तथा फ़रमाया :

"दुनिया में लोग मादनियात की तरह हैं जो एक ही किस्म के अनासिर होते हुए और एक ही किस्म की मिट्टी के नीचे दबे हुए आहिस्ता-आहिस्ता विभिन्न रंग और विभिन्न औसाफ़ इख़्तेयार कर लेते हैं परंतु सुन लो ताकि तरक़्क़ी और बड़ाई की जो प्रसिद्ध अलामतें इस्लाम से पहले ज़माना-ए-जाहेलियत में समझी जाती थीं (अर्थात अक़्ल विवेक, सकावत और बहादुरी, ताक़त और प्रभाव इत्यादि) वही अब भी क़ायम हैं। और जो लोग इन औसाफ़ की वजह से ज़माना-ए-जाहलीत में बड़े समझे जाते थे वे अब इस्लाम में भी बड़े समझे जाऐंगे परंतु शर्त यह है कि वे इल्म-ए-दीन और ज़ाती नेकी इख़्तेयार करलें।"

तथा फ़रमाया : हे लोगो तुम्हारे कुछ हक़ तुम्हारी पत्नियों पर हैं और तुम्हारी पत्नियों के कुछ हक़ तुम पर हैं। उन पर तुम्हारा हक़ यह है कि वे इफ़्फ़त और पाकीज़गी की ज़िंदगी बसर करें। और तुम्हारा यह काम है कि तुम अपनी हैसियत के मुताबिक़ उनकी ख़ुराक और लिबास इत्यादि का इंतेज़ाम करो। और याद रखो हमेशा अपनी पत्नियों से अच्छा सुलूक करना क्योंकि ख़ुदा तआला ने उनकी निगहदाशत तुम्हारे सपुर्द की है। तुमने जब उनके साथ शादी की तो ख़ुदा तआला को उनके हुक़ूक़ का ज़ामिन बनाया था और ख़ुदा तआला के क़ानून के अधीन तुम उनको अपने घरों में लाए थे।

(अतः ख़ुदा तआला की ज़मानत का अपमान न करना और औरतों के हुक़ूक़ अदा करने का हमेशा ख़्याल रखना।)

तथा फ़रमाया :

"हे लोगो ! तुम्हारे हाथों में अभी कुछ जंगी क़ैदी बाक़ी हैं। मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ कि उनको वही कुछ खिलाना जो तुम स्वयं खाते और उनको वही पहनाना जो तुम स्वयं पहनते हो। अगर उनसे कोई ऐसा क़सूर हो जाए जो तुम माफ़ नहीं कर सकते तो उनको किसी और के पास बिक्री कर देना क्योंकि वे ख़ुदा के बंदे हैं और उनको तकलीफ़ देना किसी सूरत में भी उचित नहीं।"

तथा फ़रमाया :

"हे लोगो हर मुस्लमान दूसरे मुस्लमान का भाई है तुम सब एक ही दर्जा के हो। तुम समस्त इन्सान ख़ाह किसी क़ौम और किसी हैसियत के हो, इन्सान होने के लिहाज़ से एक दर्जा रखते हो। यह कहते हुए आपने दोनों हाथ उठाए और दोनों हाथों की उंगलियां मिला दीं और फ़रमाया जिस तरह इन दोनों हाथों की उंगलियां आपस में बराबर हैं इसी तरह तुम बनीनौ इन्सान आपस में बराबर हो। तुम्हें एक दूसरे पर फ़ज़ीलत और दर्जा ज़ाहिर करने का कोई हक़ नहीं। तुम आपस में भाईयों की तरह हो।"

तथा फ़रमाया :

क्या तुम्हें मालूम है यह कौन सा महीना है? क्या तुम्हें मालूम है यह इलाक़ा कौन सा है? क्या तुम्हें मालूम है यह दिन कौन सा है? लोगों ने कहा हाँ! यह मुक़द्दस महीना है यह मुक़द्दस इलाक़ा है और यह हज का दिन है। हर उत्तर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि जिस तरह यह महीना मुक़द्दस है, जिस तरह यह इलाक़ा मुक़द्दस है ,जिस तरह यह दिन मुक़द्दस है, इसी तरह अल्लाह तआला ने हर इन्सान की जान और उसके माल को मुक़द्दस और पवित्र क़रार दिया है। यह हुक्म आज के लिए नहीं। कल के लिए नहीं बल्कि उस दिन तक के लिए है कि तुम ख़ुदा से जा मिलो।

फिर फ़रमाया :

ये बातें जो मैं तुम से आज कहता हूँ उनको दुनिया के किनारों तक पहुंचा दो क्योंकि संभव है कि जो लोग आज मुझ से सुन रहे हैं उनकी निसबत वे लोग उन पर ज़्यादा अमल करें जो मुझसे नहीं सुन रहे।"

(बुख़ारी किताबुल् मग़ाज़ी बाब हज्जतुल-विदा)

विभिन्न रिवायतों के साथ विभिन्न इबारतों में ये ख़ुत्बात हम तक पहुंचे हैं। एक रिवायत में इस तरह भी आया है कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि यह कौन सा महीना है तो सहाबा ने अर्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं और यह कि हमने समझा कि शायद आप इस महीना का कोई और नाम रखें। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्वयं ही जवाब दिया कि क्या यह हुरमत वाला महीना नहीं है।

बहरहाल क़त-ए-नज़र रिवायतों के मतभेद के इस तारीख़ी और इतिहास साज़ ख़ुत्बा में मुहसिन-ए-इन्सानियत हज़रत-ए-अक़्दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जिन अहम और बुनियादी उमूर के विषय में हिदायात को आगे से आगे पहुंचाते रहने का हुक्म सादर फ़रमाया। यह हिदायात केवल वक़्ती और किसी एक इलाक़ा से सीमित नहीं थीं बल्कि क़ियामत तक आने वाली नसलों के लिए रहनुमा उसूल हैं। उनका ख़ुलासा बनता है कि :

(1) सबसे पहले समस्त बनीनौ इन्सान इस उसूल को समक्ष रखें कि सब इन्सान एक ही जिन्स की मख़लूक़ और एक ही बाप की नसल और एक ही दरख़्त की शाख़ें हैं इसलिए सब इन्सान, इन्सानियत के लिहाज़ से बराबर हैं।

(2) इस नसली वहदत के बावजूद यह संभव है कि जिस तरह ज़मीन से विभिन्न मादनियात निकलती हैं कोयला भी निकलता है, लोहा भी निकलता है, ताँबा भी निकलता है, सोना भी निकलता है इसी तरह इन्सानों में भी विभिन्न ज़हनी और जस्मानी सलाहियतों और इस्तिदादों और मेहनत और कोशिश के नतीजा में विभिन्न औसाफ़ और इमतेयाज़ पैदा हो सकते हैं परंतु इस इमतेयाज़ और फ़र्क़ की वजह से किसी क़ौम या किसी क़बीला या किसी फ़र्द को दूसरे क़ौम या क़बीला या अफ़राद पर बेजा फ़ख़र और तकब्बुर नहीं करना चाहिए।

(3) मुस्लमान इस लिहाज़ से कि वे एक नबी की उम्मत हैं और एक ही दामन-ए-रिसालत से जुड़े होने की वजह से एक ही रुहानी बाप के बच्चे हैं अतः उन्हें भाई भाई बन कर रहना चाहिए। जैसा कि क़ुरआन-ए-करीम में इरशाद बारी तआला اِنَّمَا الۡمُؤۡمِنُوۡنَ اِخۡوَۃٌ (अल् हुजरात : 11) समस्त मोमिन आपस में भाई-भाई हैं।

(4) समाज में कुछ कमज़ोर और नादार लोग भी होते हैं जो साहब-ए-हैसियत और उमरा के ख़िदमतगारों के तौर पर ख़िदमत करते हैं। या जंगों में विजय अक़्वाम के कई अफ़राद फ़ातेह अक़्वाम के क़ब्ज़ा में आ जाते हैं इन के विषय में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ऐसे आदेश सादर फ़रमाए हैं जो आज की सम्मानित दुनिया में अमल करना तो दरकिनार ताज्जुब से देखे और सुने जाते हैं कि ग़ुलामों और क़ैदियों को भी मालिकों के बराबर क़रार दिया गया है हालाँकि ग़ुलाम और क़ैदी भी आख़िर इन्सान ही हैं इसलिए उनके खाने और लिबास का ख़्याल रखने और उनकी ताक़त से बढ़कर ख़िदमत न लेने की ताकीद फ़रमाई है।

(5) मर्दों और औरतों में समानता का आजकल बड़ा चर्चा है और आए दिन इस्लाम पर आरोप किया जाता है कि इस्लाम ने औरतों को मर्दों से कमतर ख़्याल करके उनकी आज़ादी को सल्ब कर रखा है और हिजाब में और घरों में क़ैद कर रखा है इत्यादि।

आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने ख़ुत्बा में औरतों की निगहदाशत और उनके हुक़ूक़ की अदायगी के विषय में विशेषता ताकीद फ़रमाई है और क़ुरआन-ए-करीम में मर्दों और औरतों की बनावट के फ़र्क़ को मलहूज़ रखते हुए जिस क़दर औरत को सम्मान बख़्शा गया है और उस के हुक़ूक़ और जज़बात और अहसासों की हिफ़ाज़त फ़रमाई है दुनिया का कोई समाज और कोई मज़हब इसकी मिसाल पेश नहीं कर सकता यह एक अलग मुस्तक़िल विषय है जिसकी तफ़सील का यहां न वक़्त है और न है।

प्रिय श्रोताओं! असल मसला यह है कि इन्सानी समानता क़ायम करने का दावा तो किया जाता है लेकिन यह देखा ही नहीं जाता कि किन विषय में समानता क़ायम की जानी है। जहां तक इन्सानियत और बशरियत का संबंध है इस लिहाज़ से सब इन्सान बराबर हैं, हर इन्सान की दो आँखें, दूकान, दो हाथ, दो टांगें,

ज़बान, नाक, दिल, दिमाग़ इत्यादि सब इन्सानों को ख़ालिक़-ए-हक़ीक़ी ने अता फ़रमाए हैं इल्ला माशा अल्लाह सिवाए उसके कि कुछ माज़ूर इन्सान भी होते हैं। लेकिन इन इन्सानों के हुक़ूक़ की अदायगी में समानता क़ायम करना यह बुनियादी ज़िम्मेदारी है। इस बारे में याद रखना चाहिए कि इन्सानी हुक़ूक़ दो किस्म के होते हैं :

(i) एक वह हुक़ूक़ हैं जो हुकूमत के ज़िम्मा होते हैं इसके विषय में अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है :

اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ۔ وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى

(सूरः ताहा : 119-120)

अर्थात पुरअमन समाज की यह अलामत है कि हे इन्सान तू इस में भूखा न रहे और न ज़रूरी लिबास से वंचित हो और न ही सर्दी से ठिठुरे और न ही प्यास की तकलीफ़ उठाए और न ही धूप की शिद्दत में बग़ैर छत के पड़ा जलता रहे।

अतः हर हुकूमत का यह बुनियादी फ़र्ज़ है कि वह इस बात का इंतेज़ाम करे कि मुल्क-ओ-कौम का कोई फ़र्द उन कम से कम ज़रूरतों की वजह से तकलीफ़ न उठाए।

इसी तरह अदल और इंसाफ क़ायम करना और क़ौमी ओहदों पर बासलाहियत अफ़राद को निर्धारित करना और वाजिबी टैक्सों इत्यादि के माध्यम से दौलत की सही तक़सीम का इंतेज़ाम करना इत्यादि ये सब हुकूमत के फ़रायज़ में दाख़िल है।

(ii) दूसरे हुक़ूक़ वे हैं जो या तो फ़ित्री और क़ुदरती रंग में हासिल होते हैं जैसे जस्मानी ताक़तें और दिमाग़ी अंग इत्यादि या वह इन्फ़िरादी कोशिश और इन्फ़रादी मेहनत और जद्द-ओ-जहद के नतीजा में हासिल होते हैं।

इस्लाम ने ऐसे इन्फ़रादी हुक़ूक़ में भी मुनासिब रंग में दख़ल देकर विभिन्न अफ़राद और विभिन्न वर्गों के फ़र्क़ को मुतवाज़िन करने की कोशिश की है लेकिन इश्तिराकी निज़ाम कम्यूनिज़म की तरह जबरी रंग में सारे फ़िरक़ों को सहसा मिटाने का तरीक़ अख्तियार नहीं किया कि जिसके नतीजा में इन्फ़रादी इस्तिदादों और सलाहियतों को नाकारा बनाकर रख दिया जाए। और हक़ीक़त यह है कि ऐसे फ़िरक़ों को मिटाना संभव भी नहीं है। उदाहरणतः। जस्मानी ताक़तों के फ़र्क़ को कौन मिटा सकता है? दिमाग़ी कुव्वतों के फ़र्क़ को कौन मिटा सकता है। हाँ जबकि हर इन्सान की इन्फ़रादियत को क़ायम रखते हुए अपने हम-जिंस भाईयों के लिए ईसार और क़ुर्बानी की भावना को उभारा जा सकता है इसके लिए इस्लाम ने विभिन्न पुरहिकमत माध्यम वर्णन फ़रमाए हैं। जिन पर अमल करके इन्फ़रादी सलाहियतों को ज़ाए किए बग़ैर समाज में मजमूई ख़ुशहाली की समानता क़ायम की जा सकती है।

अब विनीति प्रस्तुत इस्लामी समानता के नुकात के लिहाज़ से वक़्त की रियाइत के मुताबिक़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत के हवाले से चंद मिसालें भी पेश करता हूँ।

इन्सानी समाज में समानता और बराबरी का दम् भरने वाले भी जानते हैं कि आज के मुहज़्ज़ब समाज में भी आम गरीबों और ज़रूरतमंदो ऐसे कमज़ोर और बेहैसियत समझे जाते हैं कि कोई उन्हें पास बिठाना या उन के साथ बैठना गवारा नहीं करता। उनके साथ चलना भी गोया अपनी अपमान समझता है। परंतु हमारे मुहसिन-ए-इन्सानियत की तो शान ही निराली थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आकसर यह दुआ करते थे कि

"हे अल्लाह मुझे मिस्कीन बनाकर ज़िंदा रखियो और इसी हालत में मिस्कीनों की जमाअत में उठाना।" (तिरमेज़ी)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं एक देहाती जिसका नाम ज़ाहिर था शक्ल व सूरत में बहुत सादा और भद्दा था एक दफ़ा वह बाज़ार में अपना सौदा बेच रहा था और पसीने में शराबोर था आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पीछे से जाकर उसकी आँखों पर अपने हाथ रख दिए उस ने हाथों के लम्स से अंदाज़ा लगा लिया कि यह मेरे आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं फिर तो वह ख़ुशी और मुहब्बत से अपनी पीठ हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जिस्म मुबारक से रगड़ने लगा। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाने लगे मेरा यह ग़ुलाम कौन ख़रीदेगा। वह बोला, हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फिर तो आप मुझे बहुत ही बेकार सौदा पाएँगे मुझे भला कौन ख़रीदेगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमने फ़रमाया नहीं नहीं अल्लाह के नज़दीक तो तुम घाटे का सौदा नहीं हो ख़ुदा के नज़दीक तुम्हारी बड़ी कदरों क़ीमत है। (मस्नद अहमद बिन हॅम्बल भाग 3 पृष्ठ 11)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम गरीबों और ज़रूरतमंदों को खाने इत्यादि की दावतों में बुलाने की बहुत ताकीद फ़रमाया करते थे और फ़रमाते थे कि वह दावत बहुत बुरी है जिस में सिर्फ उमरा को बुलाया जाए और गरबा को शामिल न किया जाए। (बुख़ारी किताबुन् निकाह)

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से जब आपकी शादी हुई तो इस मालदार महिला ने अपना सब माल और ग़ुलाम आपकी ख़िदमत में पेश कर दिए। आपने वह समस्त ग़ुलाम आज़ाद कर दिए और इन्ही में से एक होनहार ग़ुलाम को आज़ाद करके अपना मुह बोल बेटा बना लिया और यह ज़ैद बिन मुहम्मद कहलाने लगे लेकिन जब अल्लाह तआला ने यह रस्म ख़त्म करने और लेपालक बच्चों को उनके बापों की तरफ़ ही मंसूब करने का इरशाद फ़रमाया। (सूरः अह्ज़ाब आयत : 5-6) तो वह फिर ज़ैद बिन हारिसा कहलाने लगे परंतु उन्होंने अपने माता पिता के घर वापस जाने की बजाय आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर में ही रहने को तर्जीह दी। और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी इस आज़ाद करदा ग़ुलाम से ज़िंदगी-भर बेहद मुहब्बत व शफ़क़त का व्यवहार फ़रमाया।

कवेल यही नहीं बल्कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन की इस्तिदादों को मलहूज़ रखते हुए कई फ़ौजी दस्तों का अमीर निर्धारित फ़रमाते रहे और फिर हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात के बाद उनके नौजवान बेटे उसामा को भी इस क़दर इज़्ज़त बख़शी कि अपनी ज़िंदगी के आख़िरी दिनों में जो लश्कर तैयार फ़रमाया उसकी कमान उन्ही के सपुर्द फ़रमाई जिसमें बड़े-बड़े सहाबा भी शामिल थे।

अतः इन्सानियत का एहतेराम और अहलियत के आधार पर ख़िदमात सपुर्द करने का अमली इज़हार तो उसी सूरत में हो सकता है कि हम क़ौम के और समाज के कमज़ोर और पिछड़े वर्ग के साथ कैसा सुलूक करते हैं। इस लिहाज़ से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह उस्वा तरक़्क़ी करने वाली क़ौमों के लिए मार्गदर्शन है।

प्रिय श्रोताओं इन्सानियत, मानवता, Humanity केवल गोश्त-पोस्त से बने मुजस्समा का नाम नहीं कि जिसको किसी बुलंद जगह पर रखकर उस की इज़्ज़त-अफ़ज़ाई या प्रसतिश की जाए बल्कि इन्सानियत नाम है उस के दिलोदिमाग की सोचों और उस के जज़बात वा हसासात का। उस की रूह और उसकी अख़लाक़ी और रुहानी हालतों का। अगर इन इक़दार की पासदारी की जाए तो फिर कहा जा सकता है कि हाँ इस ने इन्सानियत का एहतेराम क़ायम किया है। इस लिहाज़ से जब हम अपने आक़ा हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत-ए-तुय्यबा पर नज़र डालते हैं तो ऐसे अजीब हैरत-अंगेज़ नमूने नज़र आते हैं जिनकी मिसाल कहीं और मिलना कठिन है।

एक इन्सान अपने दोस्तों, अज़ीज़ों और हम अक़ीदा व हम मज़हब लोगों के साथ तो रवादारी से पेश आता है लेकिन देखना यह है कि इस का ग़ैरों बल्कि मुख़ालिफ़ों और दुश्मनों के साथ सुलूक कैसा है।

एक दफ़ा मदीना में एक यहूदी का जनाज़ा आ रहा था नबी अकरीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस जनाज़ा के एहतेराम के लिए खड़े हो गए। किसी ने अर्ज़ किया हे अल्लाह! यह तो एक यहूदी का जनाज़ा है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "क्या इस में जान नहीं थी। क्या वह इन्सान नहीं था?"

(बुख़ारी किताबुल् जनायज़)

हज़रत याला रज़ियल्लाहु अन्हो बिन मुर्रा वर्णन करते हैं मेंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ कई सफ़र किए। कभी एक बार भी ऐसा नहीं हुआ कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किसी इन्सान की नाश पड़ी देखी हो और उसे दफ़न नहीं करवाया हो। आपने कभी यह नहीं पूछा कि यह मुस्लमान था या काफ़िर।

इसलिए जंग बदर में हलाक होने वाले (24) मुशरिक दुश्मन सरदारों को मैदान-ए-बदर के एक गढ़े में दफ़न करवा दिया था जिसे क़लीब बदर कहते हैं।

(बुख़ारी किताबुल् मग़ाज़ी)

मुशरेकीन-ए-मक्का जंग-ए-उहद में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के

चचा हज़रत हम्ज़ा के नाक कान काट कर उनकी नाश का मुसला कर चुके थे और यही उनका तरीक़ था। जब ग़ज़व-ए-अहज़ाब में उनका एक सरदार नौफ़ल बिन अब्दुल्लाह मख़्ज़ूमी हलाक हुआ तो वे समझे थे कि मुस्लमान अब हमारे सरदार का भी मुसला करेंगे इसलिए उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को संदेश भेजा कि दस हज़ार दिरहम हम से ले लें और नौफ़ल की नाश वापस कर दें। रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हम मर्दों की क़ीमत नहीं लिया करते। तुम अपनी नाश वापस ले जाओ।

(दलायल् नब्विया लिल् बहीकी भाग : 3)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दुश्मन क़ौम के मक़्तूलों का मुसला करने से मना फ़रमाया करते थे।

जहां तक मर्दों और औरतों में समानता का ताल्लुक़ है, बदक़िस्मती से आज के तरक़्क़ी याफताह दौर में समानता और आज़ादी के नाम पर औरतों का जो अपमानित किया जा रहा है वह समाज के तवाज़ुन को बिगाड़ने का मूजिब हो रहा है। अन्यथा इस्लाम ने न केवल यह कि औरतों को मर्दों के समानता हुक़ूक़ दिए हैं बल्कि कुछ सावधानी करके उनके हुक़ूक़ के तहफ़्फ़ुज़ की पूरी ज़मानत भी दी है। असल बात यह है कि मर्द और औरत में क़ुदरती लिहाज़ से पैदाइश और जस्मानी साख़्त के लिहाज़ से जो अंतर हैं इस्लाम ने उनको नज़र अंदाज नहीं किया है और न नज़र अंदाज किया जा सकता है। इन को मलहूज़ रखते हुए इस्लाम ने मर्द और औरत की ज़िम्मेदारियाँ तै की हैं। घर का इंतेज़ाम और बच्चों की परवरिश और तर्बीयत करना औरतों का काम है जबकि मर्द की ज़िम्मेदारी है कि बीवी और बच्चों की समस्त जायज़ ज़रूरियात के लिए मेहनत वि मुशक्त करके अख़राजात करे।

औरतों की आज़ादी और समानता के तथाकथित अलमबरदारों का अमली किरदार देख लें वे महिलाओं से मुलाज़मतें भी करवाते हैं और किचन की ज़िम्मेदारियाँ और बच्चों की परवरिश और देख-भाल की ज़िम्मेदारी भी उन्ही पर डालते हैं यह तो आज़ादी और समानता के नाम पर औरतों पर ज़ुलम है। इस्लाम इसकी इजाज़त नहीं देता।

इस्लाम ने औरतों की जो हुक़ूक़ क़ायम किए हैं और जिस हुस्न सुलूक की तालीम दी है और उन को समाज में जो सम्मान बख़्शा है इस का शानदार नमूना हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की घरेलू ज़िंदगी में नज़र आता है।

इसलिए मदनी के दौर में जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आयु पच्चास साल से पार कर चुकी थी केवल तर्बीयती और क़ौमी ज़रूरियात के मद्द-ए-नज़र आप को कई शादियां करनी पड़ीं और और एक समय में नौ पत्नियाँ भी आपकी तर्बीयत और कफ़ालत में रहीं परंतु निहायत अहसन इंतेज़ाम और कमाल एतेदाल और इन्साफ़ के साथ सब के हुक़ूक़ अदा किए और सबा ख़्याल रखा। हर किसी के लिए कि उनके लिए सामान जीवन के तो दरकिनार दो समय की रोटी भी पूरे तौर पर फ़राहम करना मुश्किल था इसके बावजूद हर पत्नी को आपकी रिफ़ाक़त पर गर्व था और जब फ़ुतूहात और अम्वाल-ए-ग़नीमत की कसरत के दौर में अल्लाह के हुक्म से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी पत्नियों को यह पेशकश फ़रमाई कि अगर तुम संसारिक ज़िंदगी और उसकी ज़ीनत की इच्छा करते हो तो आओ मैं तुम्हें संसारिक माल और धन देकर अपने से जुदा कर दूँ तो बिना देरी किए हर एक बीवी ने हर हाल में रसूल-ए-ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रहने को प्राथमिकता दी।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अपने परिवार वालों के साथ कमाल शफ़क़त का वर्णन करते हुए हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं आप आम इन्सानों की तरह एक इन्सान थे। कपड़े को स्वयं सी लिया करते लेते। बल्कि स्वयं दवा लेते। जूतों और घर के डोल की मरम्मत कर लेते थे। रात को देर से घर लोटते तो किसी को कष्ट दिए जगाए बग़ैर खाना या दूध स्वयं निकाल कर इस्तिमाल कर लेते।

अतः उन नेक और वफ़ा शआर पत्नियों का इख़लास और वफ़ा दुनियावी आराम और सहूलत के मद्द-ए-नज़र नहीं था वह तो आप के मुख की भूखी थीं आपके अख़लाक़-ए-करीमाना की गरवीदा थीं। आपके हुस्न-ए-सुलूक और राफ़त व रहमत की थीं।

प्रिय श्रोताओं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अपनी पवित्र पत्नियों से हुस्न-ए-सुलूक और दिलदारियों और व्यवहार को इस ज़माने की पृष्ठभूमी में देखें जब अरबों में औरत की कोई कदरों क़ीमत नहीं थी बल्कि मर्द उन्हें जूतियों की तरह प्रयोग करते थे कि एक नापसंद हुई तो दूसरी बदल ली। यहाँ तक कि बच्ची की पैदाइश को भी मनहूस समझा जाता था और कुछ काले दिल वाले बेटियों को ज़िंदा दफ़ना देते थे। औरतों को अदना और बेवक़ूफ़ समझ कर उनकी बात को तवज्जा से सुनना या उनसे मश्वरा करना मर्दों के नज़दीक अपमान का कारण ख़्याल किया जाता था। परंतु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस सिनफ़-ए-नाज़ुक, इस महिलाओं के वर्ग को इज़्ज़त और सम्मान के जिस मुक़ाम पर बिठाया आज इस तरक़्क़ी याफताह दौर में भी जबकि हर तरफ़ औरतों की आज़ादी और समानता के नारे लगाए जा रहे हैं उसकी मिसाल मिलनी मुश्किल है।

अतः मुहसिन-ए-इन्सानियत हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी ज़िंदगी के आख़िरी हज हज्जतुल्-विदा में जो ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया वह इन्सानियत का सिर ऊंचा करने वाला और वह बुलंद व बाला झंडा है जो क़ियामत तक नुमायां तौर पर लहराता रहेगा और बनीनौ इन्सान को इन्सानियत का पाठ देता रहेगा।

आशिक़-ए-रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जमाअत अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी मसीह मौऊद व महदी-ए-माहूद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"अगर अल्लाह तआला को तलाश करना है तो मिस्कीनों के दिल के पास तलाश करो। इसी लिए पैग़म्बरों ने मिस्कीनी का जामा ही पहन लिया था। इसी तरह चाहिए कि बड़ी क़ौम के लोग छोटी क़ौम की हंसी न करें। और न कोई यह कहे कि मेरा ख़ानदान बड़ा है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम मेरे पास जो आओगे तो यह सवाल नहीं करूँगा कि तुम्हारी क़ौम क्या है। बल्कि प्रश्न यह होगा कि तुम्हारा अमल क्या है। इसी तरह पैग़म्बर-ए-ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है अपनी बेटी से कि हे फ़ातिमा ! ख़ुदा तआला ज़ात को नहीं पूछेगा। अगर तुम कोई बुरा काम करोगी तो ख़ुदा तआला तुम से उस वास्ते दरगुज़र नहीं करेगा कि तुम रसूल की बेटी हो।"

(मल्फ़ूज़ात भाग तृतीय पृष्ठ : 370)

तथा फ़रमाया :"मैं नहीं चाहता कि मेरी जमाअत वाले आपस में एक दूसरे को छोटा या बड़ा समझें या एक दूसरे पर-ग़ुरूर करें या नज़र इस्तिख़फ़ाफ़ से देखें ... ख़ुदा जानता है कि बड़ा कौन है या छोटा कौन है ... कुछ आदमी बड़ों को मिलकर बड़े अदब से पेश आते हैं लेकिन बड़ा वह है जो मिस्कीन की बात को मिस्कीनी से सुने। उसकी दिलजोई करे। उसकी बात का सम्मान करे। कोई चिढ़ की बात मुख पर न लाए कि जिससे दुख पहुंचे ... अपने भाईयों को हक़ीर न समझो। जब एक ही चशमा से सब पानी पीते हो तो कौन जानता है कि किस की क़िस्मत में ज़्यादा पानी पीना है। श्रीमान कोई दुनियावी उसूलों से नहीं हो सकता। ख़ुदा तआला के नज़दीक बड़ा वह है जो मुत्तक़ी है। اِنَّ اَکْرَمَکُمْ عِنْدَ اللّٰہِ اَتْقٰکُمْ اِنَّ اللّٰہَ عَلِیْمٌ خَبِیْرٌ" (मल्फ़ूज़ात भाग प्रथम पृष्ठ 22 से 23)

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल् मसीह अलख़ामस् अदा अल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने ख़ुत्बा जुमा फ़र्मूदा 17 दिसंबर 2004 ई. में सीरत के विषय पर ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाते हुए आख़िर पर फ़रमाया :

"यह नमूने कभी पुराने होने वाले नहीं। बल्कि आज भी अगर अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को समेटना है और इस की रज़ा हासिल करनी है और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इशक़ के दावे को सच्चा साबित करके दिखाना है तो उन नमूनों पर होगा।

आज हर अहमदी का दूसरे मुस्लमानों की निसबत ज़्यादा कर्तव्य बनता है कि अपने इर्दगिर्द के माहौल में इन कमज़ोरों और बे-सहारों को तलाश करें और उनसे हुस्न-ए-सुलूक करें और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ इशक़ के दावे को सच्चा करके अब दिखाएंगे। अल्लाह तआला इसकी तौफ़ीक़ दे। आमीन॥

وآخر دعوانا ان الحمد للہ رب العالمین۔

★ ★ ★

सहाबा हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहब रज़ियल्लाहु अन्हो की जीवनी

(श्रीमान मौलाना ज़ैनुद्दी हामिद साहिब,नाज़िम दारुल कज़ा कादियान)

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔
مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرَاهُمْ
رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا۔

(अल् फ़तह : 30)

इस आयत-ए-करीमा का अनुवाद यह है : मुहम्मद रसूलुल्लाह और वे लोग जो उसके साथ हैं कुफ़्फ़ार के मुक़ाबिल पर बहुत सख़्त हैं (और) आपस में अत्यधिक रहम करने वाले हैं। तू उन्हें रुकू करते हुए और सज्दा करते हुए देखेगा वे अल्लाह ही से फ़ज़ल और रज़ा चाहते हैं।

विनीति इस मुबारक अवसर पर सहाबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हो और सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहब रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में अर्ज़ करेगा। इन शा अल्लाह तआला

प्रिय श्रोताओं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की क़ुव्वत-ए-कुदसी और हुस्न-ए-तर्बीयत के नतीजा में सहाबा कराम के अंदर जो महान रुहानी और अख़लाक़ी, समाजी और तमद्दुनी इन्क़लाब प्रकट हुआ उसका नक़्शा खींचते हुए हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

احیت اموات القرون بجلوۃ
ماذا یماثلك بهذا الشان

अर्थात तू ने सदियों के मर्दों को एक ही जलवा से ज़िंदा किया। कौन है जो इस शान में तेरा उदाहरण हो सके। हज़रत-ए-अक़दस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा की इस रंग में तर्बीयत फ़रमाई कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनको रूहानियत के आसमान के चमकते दमकते सितारों से समानता दी फ़रमाया :

أصحابی کالنجوم بأیهم اقتدیتم اهتدیتم

अर्थात : मेरे सहाबा सितारों की मानिंद हैं उनमें से जिसका भी तुम अनुसरण करोगे हिदायत पाओगे।

सहाबा की शान में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : -

أن الصحابة کلهم کذکاء
قد نوروا وجه الوریٰ بضیاء

अर्थात : सहाबा सब के सब सूरज की भांति हैं। उन्होंने मख़लूक़ात का चेहरा अपनी रोशनी से मुनव्वर कर दिया। हज़रात चमकते सितारों में से एक अज़ीमुश्शान सितारा सय्यदना हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो का वजूद है जो ख़िलाफ़त-ए-राशिदा का तीसरा मज़हर बन कर इस्लाम की सिर-बुलंदी के लिए अज़ीमुश्शान कारहाए नुमायां सरअंजाम देते हुए इस्लाम और मुस्लमानों की ख़ातिर जाम-ए-शहादत नोश फ़र्मा गया। رضی اللہ عنہ ورضوعنہ

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो कुरेरीश के क़बीला बनु उमय्या में अस्हाबुल् फ़ील के वाक़िया से पाँच साल बाद सन् 575 ईसवी में मक्का में पैदा हुए। आपके पिता कपड़े के व्यापारी थे और काफ़ी अमीर आदमी थे। बचपन से ही आपकी तर्बियत नेकी की तरफ़ मायल थी। आपकी उम्र उस वक़्त 34-35 वर्ष थी जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुदा के हुक्म से दावा नबुव्वत फ़रमाया। आप हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को उनके बुलंद अख़लाक़ की वजह से बहुत अच्छा समझते थे। और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के भी दोस्ताना संबंध थे। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने में सब पर सबक़त ले गए। उन दिनों हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो तिजारत के सिलसिला में शाम गए हुए थे। वापस आए तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने अन्य दोस्तों के साथ हज़रत उस्मान बिन अफ़वान को भी इस्लाम क़बूल करने की दावत दी। इसलिए बारी-बारी सबने बैअत की। उनमें हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो सब से पहले बैअत करने वाले बने।

नबुव्वत के चौथे वर्ष के आरंभ में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला ने खुल्लम-खुल्ला तब्लीग़ करने का हुक्म दिया और जल्द ही मक्का के गली कूचों में इस्लाम का चर्चा होने लगा जिसके नतीजा में क़ुरैश मक्का ने मुख़ालेफ़त शुरू की और जो लोग मुस्लमान हो चुके थे उनको मुनहरिफ़ करने के लिए ज़ुलम शुरू कर दिया। आपके चचा हकम बिन अबिल् आस ने आपको ख़ूब मारा पीटा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास जाने से रोकने के लिए आपके पांव में बैडियां डाल दीं। आपने सब्र व शांति से काम लिया और उन कठिनाइयों की कुछ परवाह नहीं की। चंद दिन बाद आपके चचा ने ग़ुस्सा में आकर आपको घर से निकाल दिया।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो बहुत नेक, बाइज़्ज़त, ख़ूबसूरत और शरीफ़ नौजवान थे और अपने ख़ानदान से अलग कर दिए गए थे। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी साहबज़ादी रुक़य्या का निकाह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो से कर दिया।

मक्का में दिन-ब-दिन क़ुरैश के सरदारों के मन्सूबों की वजह से मुस्लमानों के लिए तकालीफ़ का सिलसिला बढ़ रहा था और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो को भी सख़्त ख़तरा था। इन हालात में कुछ मुस्लमान मर्दों और औरतों को हब्शा की तरफ़ हिज्रत की इजाज़त मिल गई उनमें हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो और उनकी बीवी हज़रत रुक़य्या भी शामिल थीं। जब आप रज़ियल्लाहु अन्हो हब्शा हिज्रत कर के तशरीफ़ ले गए तो आप ही अमीर क़ाफ़िला थे। हब्शा में अपने थोड़े क़ियाम के दौरान आपको तब्लीग़ की भी तौफ़ीक़ मिलती रही। इस तरह आप भी इन चंद ख़ुश-नसीबों में से थे जिन्हें इस्लाम के आग़ाज़ में ही बैरून-ए-मुल्क तब्लीग़ करने की सआदत प्राप्त हुई।

जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक-एक दो-दो करके मक्का के मुस्लमानों को यसरब (मदीना) हिज्रत करने की इजाज़त देदी तब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो भी अपनी पत्नी हज़रत रुक़य्या को साथ लेकर मक्का से मदीना हिज्रत कर गए। मक्का से मदीना हिज्रत के बाद हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो की बीवी हज़रत रुक़य्या का इंतेक़ाल कर गईं। हज़रत रुक़य्या की वफ़ात के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी दूसरी साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुलसूम का निकाह आपसे कर दिया। इस तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दो साहबज़ादियों के साथ निकाह के नतीजा में आप ज़ू-नूरेन के नाम से प्रसिद्ध हो गए।

हज़रात! अरब में क़दीम से ग़ुलामी का रिवाज था। इस्लाम ने इस की मुमानअत फ़रमाई और ग़ुलाम आज़ाद करने को एक बहुत बड़ी नेकी क़रार दिया। रिवायतों में आता है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो हज़ारों ग़ुलामों को आज़ाद किया और मदीना की कोई गली ऐसी नहीं थी जहां आपका ख़रीद करदा आज़ाद ग़ुलाम नज़र न आए। बाद में इस नेक काम को जारी रखने के लिए आपने यह मामूल बना लिया कि हर जुमा के रोज़ एक ग़ुलाम आज़ाद किया करते थे।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो को कुछ ग़ैरमामूली माली ख़िदमात की सआदत मिली। हिज्रत-ए-मदीना के बाद मुस्लमानों पर निहायत तंगी का ज़माना था इसलिए बुनियादी जरूरतों में से एक पीने का पानी था आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक दिन मुस्लमानों में तहरीक फ़रमाई कि मीठे पानी का कुँआं जो एक यहूदी की मिल्कियत था उसे ख़रीद कर मुस्लमानों के लिए वक़्फ़ कर दिया जाए इसलिए आपने यह कुँआं ख़रीद कर मुस्लमानों के लिए वक़्फ़ कर दिया।

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो और बाक़ी सहाबा को मदीना आए हुए छः साल गुज़र चुके थे। मुशरेकीन मक्का की तरफ़ सै हज उनका बंद कर दिया गया था। इन में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक मुबारक ख़ाब देखा कि आप सल्लल्लाहो

अलैहि वसल्लम 14, पंद्रह सौ सहाबा के साथ ख़ाना काअबा का तवाफ़ कर रहे हैं इस ख़ाब के मुताबिक़ चौदह पंद्रह सौ सहाबा को साथ लेकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तवाफ़ के लिए काअबा की तरफ़ रवाना हुए। मक्का के क़रीब हुदैबिया के मुक़ाम पर जा कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने क़ुरैश के साथ बातचीत करने का फ़ैसला किया। यह अनुबंध सुलह हुदैबिया के नाम से इस्लाम के इतिहास में जाना जाता है और इस अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो को इस्लाम का सफ़ीर बना कर क़ुरैश मक्का के पास भेजा। इस्लाम के सफ़ीर के तौर पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो का हुदैबिया में ख़िदमत सरअंजाम देना आपकी ज़िंदगी का एक निहायत अहम वाक़िया है और अपनी दूरदर्शिता के परिणाम के समक्ष एक बहुत बड़ी ख़िदमत है

सुलह हुदैबिया के दो साल बाद अल्लाह तआला की तक़दीर ने यह रंग दिखाया कि 8 हिज्री में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वसल्लम दस हज़ार सहाबा के साथ फ़ातेहाना शान से मक्का में दाख़िल हुए। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो भी उनमें शामिल थे।

जूँ-जूँ इस्लाम फैल रहा था मुस्लमानों की संख्या बढ़ रही थी और मस्जिद नब्वी न काफ़ी हो गई थी। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की तौसीअ का मन्सूबा बनाया और सहाबा को तहरीक फ़रमाई कि मस्जिद के इर्दगिर्द के मकानात ख़रीद कर मस्जिद में शामिल कर लिए जाएं। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो को माली वुसअत हासिल थी और आपके अंदर माली क़ुर्बानी की भावना बहुत बढ़ी हुई था। आपने 25-30 हज़ार दिरहम का इंतेज़ाम किया और मस्जिद नब्वी के इर्दगिर्द के मकानात और ज़मीन इत्यादि ख़रीद कर मस्जिद नब्वी में शामिल कर दीए। आपकी इस क़ुर्बानी और दीनी ख़िदमत को क़ियामत तक आने वाली नसलें याद करेंगी।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ग़ज़वा तबूक के लिए माली क़ुर्बानी की तहरीक फ़रमाई हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो इस अवसर पर एक हज़ार ऊंट जिन में से सौ अनाज से लदे हुए थे, सौ या पच्चास घोड़े और दस हज़ार दीनार नक़द आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमकी ख़िदमत में पेश किए और फ़ौज के एक तिहाई के लिए हर किस्म की ज़रूरियात पेश फ़रमाएं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो की इस ग़ैरमामूली क़ुर्बानी से बहुत ख़ुश हुए। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो स्वयं भी इस ग़ज़वा में शामिल भी हुए।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो को जो ख़िदमात इस्लाम के लिए सरअंजाम देने की सआदत नसीब हुई उनमें से एक नुमायां ख़िदमत क़ुरआन-ए-करीम की किताबत आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माने में कातिब-ए-वह्यी का काम किया करते थे। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो को किताबत-ए-वह्यी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिदायत के मुताबिक़ आयात और सूरतों की तर्तीब का काम करने की ख़िदमत भी नसीब हुई और यह सिलसिला सारे क़ुरआन-ए-करीम के नुज़ूल और आख़िरी तर्तीब तक रहा।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो को हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर-ए-ख़िलाफ़त में आपका दस्त-ओ-बाज़ू बन कर ख़िदमात की तौफ़ीक़ मिलती रही। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के उमूर-ए-ख़िलाफ़त में आप निहायत क़ीमती मश्वरे दिया करते थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़लीफ़ा सानी बने और आप रज़ियल्लाहु अन्हो जब इस्तिहकाम-ए-सलतनत के लिए विभिन्न महिकमे बनाए तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो को सदक़ात के हिसाब किताब पर निर्धारित फ़रमाया। आप रज़ियल्लाहु अन्हो आमीन-ए-ख़िलाफ़त थे।

हज़रत उम्र फ़ारूक रज़ियल्लाहु अन्हो पर 23 ज़ील् हज्जा 23 हिज्री को क़ातिलाना हमला हुआ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़िलाफ़त के इंतेख़ाब के लिए एक कमेटी निर्धारित कर दी थी। इस में सबसे ऊपर हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम भी था।

हमला के चार दिन बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात 27 जिल् हज्जा 23 हिज्री को हुई और इस के तीन दिन बाद हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो को कसरत-ए-राय से ख़लीफ़ा सालिस निर्धारित किया गया।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो जो निज़ाम-ए-हुकूमत छोड़ गए थे उसी को आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने जारी रखा और कोई ख़ास तबदीली नहीं फ़रमाई।

जबकि बाद में ज़रूरत के मुताबिक़ आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने कुछ गवर्नर तबदील फ़रमाए। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने सारे आलम-ए-इस्लाम में जुमा की नमाज़ की अदायगी की तरफ़ ख़ास तवज्जा दिलाई और नमाज़-ए-जुमा से पहले दूसरी अज़ान का आरंभ आप रज़ियल्लाहु अन्हो ही फ़रमाया।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर-ए-ख़िलाफ़त में कई नई तामीरात हुईं। वसीअ तामीरात के मंसूबे बने और रफ़ाह आम्मा के काम हुए, कई पब्लिक इमारात, सड़कें, पुल, मुसाफ़िर ख़ाने और सराएं तामीर हुईं। आप रज़ियल्लाहु अन्हो के अह्द में जो इलाक़े फ़तह हुए थे उनमें फ़ौजी छावनियां तामीर की गईं। इसी तरह क़ौमी चरागाहों में भी इज़ाफ़ा किया गया और लोगों को पहले की निसबत ज़्यादा सहूलतें मयस्सर लगीं।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर-ए-ख़िलाफ़त में जहां मुल्क पर मुलक फ़तह होते गए और फ़ौज दर फ़ौज लोग इस्लाम में दाख़िल होते रहे वहीं इस्लामी देशों में ख़िलाफ़त और मर्कज़ीयत दोनों ख़त्म करने के मज़मूम मन्सूबा के तहत यमन के रहने वाले एक निहायत बद बातिन यहूदी अब्दुल्लाह बिन सुबह की सरकर्दगी में ख़तरनाक फ़ित्नों ने सिर उठाना शुरू कर दिया और इन्ही फ़ित्नों का नतीजा था जो आप रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत के रंग में ज़ाहिर हुआ।

शहादत के वक़्त हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो की उम्र 82 वर्ष थी। आप रज़ियल्लाहु अन्हो अत्यधिक मुत्तक़ी, परहेज़गार और मुतवक्किल इन्सान थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो की सारी उम्र ख़िदमत-ए-इस्लाम और इबादात बजा लाने में गुज़री। आप रज़ियल्लाहु अन्हो उन ख़ास सहाबा में से थे जिनको आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमके साथ ब-तौर-ए-ख़ास मुहब्बत थी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कई मर्तबा अपनी ज़िंदगी में आपसे राज़ी होने का इज़हार। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दो बेटियां एक के बाद एक आपके निकाह में आईं जिसकी वजह से आपको ज़ू नूरेन का नाम मिला।

जिस तरह आपने इस्लाम की सिर-बुलंदी, इशाअत-ए-क़ुरआन और ख़िलाफ़त के क़ियाम के लिए अपना माल, जान, वक़्त और इज़्ज़त सब कुछ क़ुर्बान कर दिया। बड़ी वफ़ा के साथ अल्लाह के कामों में लगे रहे और फ़ित्नों के वक़्त बावजूद ताक़त और क़ुदरत के अमन का शहज़ादा बन कर सब्र का ऐसा नमूना दिखाया कि आने वाली नसलें क़ियामत तक आपके पाक नमूना से सबक़ हासिल करती रहेंगी। इन शा अल्लाह तआला

हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहब रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन तक़रीर के दूसरे हिस्सा में सय्यदना हज़रत-ए-अक़दस मसीह मोद अलैहिस्सलाम के जलीलुल् क़दर सहाबी हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहब रज़ियल्लाहु अन्हो की मुक़द्दस सीरत के हवाले से कुछ वर्णन करता हूँ। जब हम हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद दस्त-ए-मुबारक पर बैअत करने वालों की सीरत का अध्ययन करते हैं तो निसन्देह यह बात सामने आती है कि सहाबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समस्त आदात और औसाफ़-ए-हमीदा सब के सब मुरातिब हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा में भी पाए जाते हैं। हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद बुज़ुर्ग सहाबी हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहब रज़ियल्लाहु अन्हो की मुक़द्दस सीरत के चुने हुए वाक़ियात पेश करता हूँ।

हज़रात हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहब रज़ियल्लाहु अन्हो का ताल्लुक़ एक सम्मानित ख़ानदान ग़ौरी से है, आप रियासत मालेर-कोटला के रईस थे। आप का वंश अली शेख़ सदर जहां साहिब एक बाख़ुदा बुज़ुर्ग और जलालाबाद सरवानी क़ौम के पठान थे। आपके वालिद-ए-माजिद का नाम नवाब ग़ुलाम मुहम्मद ख़ान साहब था। आप रज़ियल्लाहु अन्हो जनवरी 1870 ईसवी को नवाब बेगम साहिबा के बतन से पैदा हुए। आप अपनी वालिदा के पहले और भाईयों में तीसरे नंबर पर थे। बचपन से ही आप में मज़हबी ज़ौक़-ओ-शौक़ पैदा हो चुका था। सीधे सीधे हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से ताल्लुक़ का आग़ाज़ होने से क़बल हज़रत नवाब साहिब के ख़ानदान के एक सम्मानित फ़र्द के हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

से अच्छे ताल्लुक़ात पैदा हो चुके थे जो अंततः हुज़ूर अलैहिस्सलाम के मालेर कोटला तशरीफ़ ले जाने का मूजिब हुए। और 1884 में हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने यह सफ़र इसलिए फ़रमाया था कि नवाब इब्राहीम अली ख़ान साहब ने बराहीन अहमदिया की इशाअत में हिस्सा लिया था और उनकी बीमारी की ख़बर पा कर दुआ के लिए भी तशरीफ़ ले गए ताकि इयादत और शुक्रिया की अमली रूह नुमायां हो।

हज़रत नवाब साहिब की परवरिश अबतेदा से ही मज़हबी माहौल में हुई थी। इबतेदाई उम्र में आपने अपने उसताद से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का वर्णन सुना। आप पर मज़हब का बहुत प्रभाव था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इन दिनों कोई दावे नहीं था रफ़्ता-रफ़्ता हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम का वर्णन आप तक पहुंचता रहा। हज़रत नवाब साहिब ने हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम से पत्राचार 1899 में शुरू की। हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहब ने 1890 ईसवी में 20 साल की उम्र में कादियान का तारीख़ी सफ़र किया। आपकी फ़ित्रत में अल्लाह-तआला की तरफ़ से सआदत भरी हुई थी यह सफ़र आपने तहक़ीक़-ए-हक़ की ख़ातिर किया क्योंकि अभी तक आप हल्क़ा-ब-गोश अहमदियत में शामिल नहीं हुए थे इसके बाद कुछ प्रश्नों का संतुष्ट उत्तर पाने के बाद आपने बिना देरी किए बैअत का ख़त लिखा। रजिस्टर बैअत में आपका नंबर 210 और तारीख बैअत 19 नवंबर 1890 दर्ज है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी किताब इज़ाला औहाम में हज़रत नवाब साहिब और आपके ख़ानदान का वर्णन फ़रमाया है।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत नवाब साहिब को अपने एक पत्रों में बार-बार तहरीक फ़रमाया कि कुछ अरसा हुज़ूर अलैहिस्सलाम की सोहबत में आ`कर रहें। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने एक मकतूब के आख़िर पर फ़रमाया "मैं चाहता हूँ कि जिस तरह हो सके 27 दिसंबर 1892 के जल्सा में ज़रूर तशरीफ़ लावें।"

इसलिए हज़रत नवाब साहिब इस जलसा में शरीक हुए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तवज्जा और शफ़क़त और दुआओं की वजह से अल्लाह-तआला ने अपने फ़ज़ल से नवाब साहिब के लिए समस्त मुश्किलात आसान कर दीं और इंशराह-ए-क़लब के साथ कादियान हिज्रत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। हिज्रत के बाद आप अपने दो कच्चे कमरों में आकर ठहरे जो अल्दार से मुल्हिक़ थे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शफ़क़त बेपायाँ का गौना गों रंग में इज़हार होता रहा। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने हज़रत नवाब साहिब को कादियान में मकान बनाने की भी कई मर्तबा तहरीक फ़रमाई। अल्लाह-तआला ने आपके मकानात को बहुत बरकत अता फ़रमाई। हज़रत नवाब साहिब की पत्नी प्रथम के बतन से दो लड़कियां एक अम्तुल सस्लाम जो चंद माह बाद वफ़ात पा गई और दूसरी बेटी हज़रत बू ज़ैनब बेगम साहिबा पत्नी हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहिब जिनकी विलादत 19 मई 1893 में हुई थी उनके बाद अल्लाह-तआला ने चार बेटों से नवाज़ा।

अल्लाह-तआला की तक़दीर के अधीन 17 फरवरी 1908 ईसवी को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बड़ी साहबज़ादी हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा का निकाह हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहब से हो गया यह निकाह हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब ने पढ़ा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद 14 मार्च 1909 को हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा रुख़स्त हो कर हज़रत नवाब साहिब के घर आएं। हज़रत नवाब साहिब की पत्नी अव्वल से इकलौती बेटी हज़रत नवाब बोज़ैनब बेगम साहिबा का निकाह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लख़्त-ए-जिगर हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ साहिब से 9 मई 1909 को हुआ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी मुबारक ज़िंदगी में यह रिश्ता तै फ़रमाया था। हज़रत बोज़ैनब साहिबा हज़रत ख़लीफ़तुल् मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दादी मुहतरमा हैं। जबकि नवाब साहिब और हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा की उम्र में 27 वर्ष का अंतर था उसके बावजूद हज़रत नवाब साहिब हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा की अक़ल, समझ, मुहब्बत, वफ़ा और सीरत के क़द्र-दान थे। वे जानते थे कि यह मुक़द्दस बाप की मुबारक बेटी हैं। हज़रत नवाब साहिब छोटी-छोटी बात में भी हज़रत बेगम साहिबा से बरकत लेने की कोशिश करते थे।

एक मर्तबा नए साल का कैलिंडर आपने हज़रत बेगम साहिबा को दिया कि इस पर कुछ शेअर लिख दीजिए।

हज़रत बेगम साहिबा ने कैलिंडर के सिर-ए-वर्क़ पर लिखा

फ़ज़्ल-ए-ख़ुदा का साया हम पर रहे हमेशा
हर दिन चढ़े मुबारक हर शब-ब-ख़ैर गुज़रे

आप फ़रमाती हैं कि ये शेअर हज़रत नवाब साहिब हमेशा नए साल के कैलिंडर के ऊपर लिखते थे। इसी तरह हज़रत नवाब साहिब अधिकतर आपसे अशआर का निवेदन करते।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत नवाब साहिब को बारहा कादियान आने और कादियान में मकान बनाने की तहरीक फ़र्मा चुके थे इसलिए हज़रत नवाब साहिब ने हिज्रत से पहले एक दो कच्चे कमरे दारुल मसीह से मुल्हिक़ जानिब पूरब में तामीर करवाए और चंद साल बाद उन्हें गिरा कर एक पुख़्ता चौबारा तामीर करवाया यह चौबारा "इल्लदार" का ही हिस्सा है। ख़िलाफ़त उला में आपने कादियान की इस वक़्त की आबादी से बाहर एक खुली जगह पर दारुस्सलाम कोठी तामीर करवाया जिसमें बाग़ लगवाय।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत नवाब साहिब को ख़त भिजवाया कि कादियान आते हुए अपना फ़ोनोग्राफ़ साथ लेते आएं ताकि दूसरे देशो में अल्लाह की दावत के ग़रज़ से कुछ संदेश भरे जाएं। इसलिए हज़रत नवाब साहिब फ़ोनोग्राफ़ कादियान लाए और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नज़म आवाज़ आरही है यह फ़ोन-ओ-ग्राफ़ से और कुछ अन्य नज़्में और तक़रीरें भरी गईं। हज़रत नवाब साहिब को यह सआदत नसीब हुई कि उनके फ़ोनोग्राफ़ में दूसरे देशो में अल्लाह की दावत के लिए संदेश रिकार्ड करवाया गया।

हज़रत नवाब साहिब एक मर्दम शनास कदर-दान मामलाफहम और वफ़ादार बुज़ुर्ग थे ख़ुदा तआला ने आपको बड़ा दिल और दिमाग़ फ़हम अता फ़रमाया था इसलिए आप हर मसला की तहक़ीक़ स्वयं करते थे। तास्सुब और ग़ुस्सा कदापि नही था सच्च के क़बूल करने पर हर वक़त आमादा रहते थे इबतेदाई मज़हबी तालीम के बाद लाहौर के Aitchison College में दाख़िल हुए जो हुकूमत ने पंजाब के अमीरों के बच्चों के लिए क़ायम किया था। महिलाओं की इस्लाह के लिए आपने एक अंजुमन मुस्लेह अल् अख्वान क़ायम की और एक स्कूल क़ायम किया जिसके समस्त अख़राजात आप अपनी जेब से अदा करते थे। आपको तालीम की आम तरवीज का बहुत शौक़ था। मुदर्रसा अहमदिया के लिए कई मर्तबा माली सहयोग किया और आप ही की आली हिम्मती से कादियान में कॉलेज का क़ियाम हुआ।

आपकी फ़ित्रत में सख़ावत का तिब्बी जोश था और जमाअत के गरबा आपकी फ़य्याज़ियों से आसूदगी की ज़िंदगी बसर करते थे। आप कभी ग़मज़दा और फ़िक्रमंद नहीं होते थे। हमेशा चेहरे पर ख़ुशी और मुसर्रत रहती थी और अल्लाह-तआला पर कामिल तवक्कुल और भरोसा था। इनकेसारी का यह आलम था कि मस्जिद मुबारक में सबसे आख़िरी सफ़ में जूतियों के क़रीब बैठ जाते थे। सिल्सिला के कामों में हमेशा पेश-पेश रहते थे।

हज़रत नवाब साहिब हज़रत ख़लीफ़तुल् मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु से हद दर्जा इख़लास और इताअत का ताल्लुक़ रखते थे। इसी का नतीजा था कि आख़िरी दो हफ़्ते नवाब साहिब को हज़रत ख़लीफ़तुल् मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु की इयादत और ख़िदमत का बेहतरीन अवसर उपलब्ध आया। डाक्टरों ने क़स्बा से बाहर किसी खुली जगह रहने का मश्वरा दिया जिस पर हज़रत नवाब साहिब ने अपनी कोठी दारुस्सलाम का एक हिस्सा हुज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए ख़ाली कर दिया। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु ने 27 फ़रवरी 1914 को यहां नक़्ल-ए-मकानी फ़रमाई और इस जगह को बहुत पसंद फ़रमाया। दो हफ़्ते बाद 13 मार्च 1914 को हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु ने दारुस्सलाम में ही वफ़ात पाई।

यक्म जनवरी 1903 को सुबह की सैर में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नवाब साहिब को संबोधित करके फ़रमाया कि : "आज रात एक कशफ़ में आपकी तस्वीर हमारे सामने आई और इतना लफ़्ज़ इलहाम हुआ "हुज्जातुल्लाह" इस के विषय में यूं तफ़हीम हुई कि क्योंकि आप अपनी बिरादरी

और क़ौम में से अलग हो कर आए हैं तो अल्लाह-तआला ने आपका नाम हुज्जतउल्लाह रखा अर्थात आप उन पर हुज्जत होंगे। आपने असंख्य अवसरों पर माली क़ुर्बानी की विभिन्न तहरीकात में हिस्सा लिया, इआनत फ़रमाई और इमारतों की मुरम्मत और तौसीअ के लिए गाह-बगाहे रक़म मुहय्या की। जिनमें मदरसा अहमदिया, मिनारतुल मसीह और मर्कज़ी लाइब्रेरी इत्यादि शामिल हैं। आपने कादियान में बहुत से लोगों की भलाई के काम सरअंजाम दिए। सड़कों को सीधा बनवाया और पक्की नालिया बनवाईं तथा मरीज़ों की इमदाद के लिए एक उचित रक़म पेश की। इसके अतिरिक्त सिल्सिला के पहले अख़बार अल्हकम की छन से सहायता दारुल् -जोफ़ा के लिए ज़मीन और अल्-फ़ज़ल के आरंभ में धन से सहायता भी आपकी माली क़ुर्बानियों की उच्च उदाहरण हैं।

अल्-फ़ज़ल के आरंभ के लिए हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहब ने कुछ रुपया नक़द और कुछ ज़मीन इस काम के लिए दी। तथा अपने मकान की निचली मंज़िल भी दी। मक़बरा के इंतेज़ाम के लिए हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहब रज़ियल्लाहु अन्हो की सदारत में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक कमेटी निर्धारित फ़रमाई। जनवरी 1906 में जब सदर अंजुमन अहमदिया का क़ियाम अमल में आया, उसके मैंबरान में हज़रत नवाब साहब रज़ियल्लाहु अन्हो भी थे। आपको 1900 से 1918 तक विभिन्न ओहदों पर सिलसिला की ख़िदमत का अवसर मिला। क़ियाम सदर अंजुमन अहमदिया से क़बल 6 जनवरी से पाँच दिसंबर 1902 तक पहले आप मैगज़ीन रिव्यू के अस्सिटैंट फाइनैन्शल सैक्रेटरी और फिर फाइनैन्शल सैक्रेटरी के तौर पर काम करते रहे। 1909 में आप सदर अंजुमन अहमदिया के अमीन निर्धारित हुए। 1911 में आप सदर अंजुमन की तरफ़ से नाज़िर निर्धारित हुए। 1915 और 1916 दो साल तक हज़रत नवाब साहिब सदर अंजुमन अहमदिया के जनरल सैक्रेटरी के ओहदे पर फ़ायज़ रहे।

हज़रत नवाब साहब रज़ियल्लाहु अन्हो अदब और हिफ़्ज़-ए-मरातिब के बेहद पाबंद थे और अधिकतर अपनी औलाद और दूसरों को भी इस की तलक़ीन करते थे।

आप अपने बड़े भाईयों, बुज़ुर्गान सहाबा किराम और ख़ानदान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिए हद दर्जा सम्मान का जज़बा रखते थे। हज़रत नवाब साहिब सब्रो इस्तिक़ामत के आला मुक़ाम पर फ़ायज़ थे। जिन हालात में आपने अहमदियत क़बूल की और शुजाअत से इस का इज़हार किया यह आप ही का ख़ास्सा था। आप हद दर्जा के इफ़्फ़त पसंद और ज़माना के मफ़ासिद के बायस पर्दा के हद दर्जा पाबंदी के हामी थे। नमाज़ और रोज़े की अदायगी, तिलावत क़ुरआन-ए-करीम, अन्य मशागुल धर्म के में हर समय व्यस्त रहते थे। आप दिनचर्या जागना और तहज्जुद पढ़ना था। आपकी पत्नी श्रीमती हज़रत नवाब मुबारका बेग़ाम साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हा इस बारे में वर्णन फ़रमाती हैं कि :

"रात को तहज्जुद में दुआएं करते तो यूं मालूम होता कि ख़ुदा तआला का नूर कमरा में नाज़िल हो रहा है।"

हज़रत नवाब साहिब सुबह की नमाज़ से क़बल क़ुरआन-ए-मजीद की तिलावत करते और फ़रमाया करते थे कि क़ुरआन-ए-मजीद एक समुंद्र है जो कोई भी इस बारे में ग़ोता ज़नी करेगा ख़ाली हाथ नहीं लौटेगा। हज़रत नवाब साहिब मामूला डायरी लिखने का इल्तिज़ाम नहीं फ़रमाते लेकिन जितने अरसा डायरी आपने लिखी है इस से आपकी सीरत-ओ-शमायल का एक क़ीमती हिस्सा स्वयं आपके क़लम से हमारे सामने है। 10 फ़रवरी 1945 को 75 वर्ष की आयु हज़रत नवाब साहब रज़ियल्लाहु अन्हो का देहांत हो गया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

आप रज़ियल्लाहु अन्हो के जनाज़ा को हज़रत ख़लीफ़तुल् मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने कंधा दिया। बहिश्ती मक़बरा कादियान से जुड़े बाग़ में हज़रत ख़लीफ़तुल् मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने आपकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई। आपकी तदफ़ीन अहाता ख़ास में हुई जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मज़ार मुबारक है। ख़ुदा तआला आपके दर्जात बुलंद फ़रमाए और आपको अपने क़ुरब में ख़ास मुक़ाम अता फ़रमाए। आमीन

प्रिय श्रोताओं! सय्यदना हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हो सहाबी हज़रत-ए-अक़दस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मुक़द्दस सीरत के कुछ वाक़ियात आपने सुने। इन वाक़ियात से "وَاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ" की असल तस्वीर हमारे सामने आती है। दोनों की सीरतों के वाक़ियात में किस क़दर समानताएं पाई जाती हैं। हज़रत-ए-अक़दस के यह पंक्तियाँ किस क़दर सदाक़त पर आधारित हैं कि

मुबारक वह जो अब ईमान लाया।
सहाबा से मिला जब मुझको पाया
वही मै उन को साक़ी ने पिला दी
फ़सुबहानल्लज़ी अख़ज़ल् आदि।

فَسُبْحَانَ الَّذِیْ اَخْزَی الْاَعَادِیْ
وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-क़रीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुत्बात जुमा और खिताबात, अध्यात्मपूर्ण संदेश, ख़ुत्बा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इल्म के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर कर्म करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की शिक्षा-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी शिक्षा-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इसका सम्मान किया जाए। इसलिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। (संस्थान)

★ ★ ★

129वां जलसा सालाना क़ादियान

27, 28, और 29 दिसम्बर 2024 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 129वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 27,28,29 दिसंबर 2024 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है। जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

अदल-ओ-इन्साफ़ के क़ियाम के विषय में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तालीम और आप की जीवनी

क़ज़ा के विभाग का आरंभ

इस्लामी निज़ाम-ए-हुकूमत के विभिन्न विभागों में से एक अहम तरीन विभाग महकमा-ए-क़ज़ा है जिसकी रस्सी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने मुक़द्दस हाथों से बेमिसाल रंग में डाली और ऐसे उसूल और क़वानीन वज़ा फ़रमाए जो क़ियामत तक क़ायम रहने वाले हैं और जिन पर अमल पैरा हो कर ज़ालिम अपने अंजाम को पहुंच सकता और मज़लूम अपना हक़ हासिल कर सकता है। क़ुरआन-ए-करीम और अहादीस में इस विभाग से संबंध रखने वाले ज़रूरी उमूर को तफ़सील के साथ वर्णन किया गया है और रसूलुल्लाह सल्लल्ला-हो अलैहि वसल्लम ने अपने उस्वा से बता दिया है कि मुस्लमानों को क़ियाम-ए--अदल में कैसा उदाहरण दिखाना चाहिए। यह बात स्पष्ट है कि मुक़द्दमात में दावा करने वाला और इस के गवाह अपने मुतालिबा को साबित करने की कोशिश करते हैं और क़ाज़ी यह देखता है कि उनका मुतालिबा कहाँ तक साबित होता है। अगर उसके नज़दीक सबूत मौजूद हो तो दावा करने वाले के ख़िलाफ़ फ़ैसला कर दिया जाता और दाद ख़ाह को उसका हक़ दिलवाया जाता है। गोया दावा करने वाला और गवाह दोनों का यह काम है कि वह अपना दावा साबित करें और क़ाज़ी का यह फ़र्ज़ है कि वह अदल-ओ-इन्साफ़ की मीज़ान में इस को जांचे और जो बात करें इन्साफ़ हो उसको अमल में लाए। अतः इसलिए दावा करने वाला, गवाह और क़ाज़ी अलग-अलग फ़रायज़ सर-अंजाम देते हैं इसलिए इस्लाम ने उसूली तौर पर दावा करने वाला और गवाह दोनों को यह हिदायत दी है कि वह सच्चाई इख़्तेयार करें और क़ाज़ी से यह कहा है कि वह अदल-ओ--इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करे और जान क़ुर्बान करने वाला रंग इख़्तेयार करे।

क़ाज़ियों को हिदायत

इसलिए क़ुरआन-ए-करीम क़ाज़ियों को यह हिदायत देता है कि وَاِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ۔ अर्थात जब तुम लोगों के मुक़द्दमात का फ़ैसला करो तो इन्साफ़ के साथ किया करो औरकौमो और धर्म के इमतेयाज़ के बग़ैर सबको एक नज़र से देखो।

फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को संबोधित करते हुए अल्लाह तआला फ़रमाता है।

وَاِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ○۔

(अल् मायदा : 43)

जब तू लोगों के विषयों का फ़ैसला करे तो इन्साफ़ के साथ फ़ैसला किया कर क्योंकि अल्लाह इन्साफ़ करने वालों से मुहब्बत रखता है।

एक और मुक़ाम पर फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ۫ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰۤى اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا ۟ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۫ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ○

(अल् मायदा रुकू : 2)

अर्थात हे ईमान वालो तुम ख़ुदा की रज़ा के लिए अदल और इन्साफ़ के साथ गवाही देने के लिए खड़े हो जाओ और याद रखो कि तुम्हें किसी दूसरी क़ौम की दुश्मनी अदल के विपरीत तरीक़ पर आमादा न कर दे क्योंकि अदल ही इन्सान को तक़्वा के मुक़ाम की तरफ़ ले जाता है और अल्लाह का संयम ऐसी चीज़ है जिसका हर मोमिन के अंदर पाया जाना ज़रूरी है।

क़ाज़ियों के विषय में इस्लाम की उसूली हिदायत जैसा कि اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰۤى اَهْلِهَا से ज़ाहिर है कि क़ाज़ी निहायत लायक़ और काम के काबिल होने चाहिएं। इस बारे में फ़ुक़हा ने और भी कई शरायत वर्णन किए हैं। उदाहरणतः यह कि क़ाज़ी ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जिसकी परहेज़गारी, अक़ल-ओ-समझ, क़ुरआन फ़हमी और हदीस दानी इत्यादि पर लोगों को एतेमाद हो और वह शरीयत के गवामिज़ को समझने वाला हो।

गवाह कैसे हों

दूसरी तरफ़ गवाहों को इस्लाम सच्चाई के साथ गवाही देने की हिदायत देता है और यह ज़रूरी क़रार देता है कि गवाह ऐसे होने चाहिऐं जो मोतबर हों। इसलिए क़ुरआन-ए-करीम में एक मुक़ाम पर अल्लाह तआला फ़रमाता है। وَاَشْهِدُوْا ذَوَىْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ कि अपने मेंसे दो आदिल लोगों को गवाह बना लो। इस से ज़ाहिर है कि जिन लोगों में अदालत और सकाहत का वस्फ़ नहीं पाया जाता हो उन्हें हक़ शहादत हासिल नहीं। इस की व्याख्या क़ुरआन-ए-करीम की एक और आयत से भी होती है जिस में अल्लाह तआला ने यह वर्णन फ़रमाया है कि जो लोग किसी मुस्लमान पर ज़ना की तोहमत लगा कर उसे साबित नहीं कर सकें उनकी शहादत किसी मुक़द्दमा में क़बूल नहीं करनी चाहिए। इसलिए फ़रमाता है لَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً اَبَدًا उनकी शहादत कभी क़बूल न करो।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी फ़रमाते हैं لَا تَجُوْزُ شَهَادَةُ خَائِنٍ وَلَا خَائِنَةٍ وَلَا زَانٍ وَلَا زَانِيَةٍ۔ ख़ायानत करने वाले पुरुष और ख़ायानत करने वाली औरत। ज़ानी मर्द और ज़ानिया औरत की शहादत जायज़ नहीं। इस तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उस व्यक्ति की शहादत भी जायज़ नहीं जो दूसरे से दुश्मनी रखता हो। तथा आपने नौकर की शहादत उस ख़ानदान के हक़ में जिस से वे ताल्लुक़ रखता हो तस्लीम नहीं की जबकि दूसरे लोगों के विषय में उसे जायज़ रखा है।

इस में कोई संदेह नहीं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है اَلْمُسْلِمُوْنَ عُدُوْلٌ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ اِلَّا مَحْدُوْدًا فِى الْقَذْفِ अर्थात समस्त मुस्लमान शहादत देने में आदिल हैं सिवाए उसके जिसे झूठा आरोप की वजह से सज़ा दी गई हो और इसी लिए फ़ुक़हा-ए-कहते हैं कि क़ाज़ी को केवल गवाहों की ज़ाहेरी सकाहत पर इकतिफ़ा करना चाहिए। इन के चाल चलन के विषय में मज़ीद तहक़ीक़ नहीं करनी चाहिए। परंतु सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर के बाद जब इस्लाम में हर किस्म के लोग दाख़िल हो गए तो उस वक़्त कज़ा इस्लाम में गवाहों के चाल चलन के बारे में भी तहक़ीक़ कर लिया करते थे जो उनकी एहतियात और दूर अंदेशी का सबूत था

शहादत के कुछ सिद्धांत

शहादत का आम असल इस्लाम ने यह निर्धारित किया है कि शाहिद आक़िल--ओ-बालिग़ हो, समझदार हो, मुस्लमान हो, क़ुव्वत-ए-हाफ़िज़ा अच्छी रखने वाला हो और फिर ग़ैर मोहतमिम् हो। शहादत और सबूत दावा करने वाला से तलब किया जाए। अन्यथा जिस पर आरोप लगाया गया उस से क़सम ली जाएगी। बच्चों और काफ़िरों की शहादत के विषय में मतभेद पाया जाता है। अक्सरियत उसी तरफ़ गई है कि बच्चों की शहादत क़बूल की जा सकती है इस शर्त पोर कि उनमें वाक़िया के समझने की सलाहियत पाई जाती हो। उनकी संख्या दो या दो से ज़्यादा हो और उन की शहादत में इत्तिफ़ाक़ हो। इसी तरह फ़ुक़हा ने और भी कुछ शराय ज़रूरी क़रार दी हैं। कुफ़्फ़ार की गवाही भी कुछ हालतों में दरुस्त समझी जाती है। उदाहरणतः क़ुरआन-ए-करीम में आता है कि अगर कोई मुसलमान हालत-ए-सफ़र में हो और ग़रीबुल् वतनी में उसे मौत आ जाए और इस जगह कोई मुस्लमान मौजूद न हो तो वह अपनी वसीयत पर ग़ैर मुस्लिम लोगों को गवाह बना सकता है। इसलिए फ़रमाया है। يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ اَوْ اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ اِنْ اَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَاَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةُ الْمَوْتِ अर्थात जब कोई मुस्लमान वफ़ात के क़रीब वसीयत करने लगे तो आम क़ायदा यही है कि उस वक़्त दो मोतबर मुस्लमान गवाह होने चाहिऐं। लेकिन अगर तुम सफ़र में हो और वहीं यह हादिसा पेश आजाए तो ग़ैरों को भी गवाह बना सकते हो।

क़ियाफ़ा शनासों की शहादत

इस्लाम में क़ियाफ़ा शनासों की शहादत को भी तस्लीम किया गया है और स्वयं रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे क़बूल फ़रमाया है। इसलिए हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हो के बाप ज़ैद गोरे रंग के थे। परंतु वे स्वयं स्याह थे। इस लिए लोगों को उनके नसब में संदेह था। एक दिन वे दोनों एक चादर से

सिर ढाँप कर सोए हुए थे और दोनों के पांव खुले थे कि इसी हालत में एक क़ियाफ़ाशनास ने दोनों के पांव देखकर कहा कि यह पांव एक दूसरे के मुशाबेह हैं चूँकि इस से लोगों का आम इशतेबाह दफ़ा हो जाता था इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस शहादत पर बहुत ख़ुश हुए।

इस्लाम में आम तौर पर अगर किसी मामला के विषय में कम से कम दो मर्द या एक मर्द और दो औरतें गवाह हों जैसा कि وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ مِنْ رِّجَالِكُمْ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَآءِ से ज़ाहिर है तो शहादत का निसाब पूरा हो जाता है। जबकि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कई दफ़ा दावा करने वाला से हलफ़ लेकर एक गवाह की शहादत पर भी फ़ैसला फ़रमाया है। लेकिन कुछ रूप ऐसी भी हैं जिनमें इस संख्या को बढ़ा दिया गया है। उदाहरणतः व्यभिचार के इस्बात के लिए शरियत ने चार ऐनी गवाहों की संख्या निर्धारित की है। इसी तरह अगर कोई व्यक्ति दौलतमंद होने के बाद दीवालिया हो जाने का दावा करे तो जैसा कि मुस्लिम की एक हदीस से ज़ाहिर है उसे इस बात का दावा के लिए कम से कम तीन गवाह पेश करने होंगे।

गवाही छिपाने की मनाही

गवाहों को इस्लाम यह भी हिदायत देता है कि لَا يَاْبَ الشُّهَدَآءُ اِذَا مَا دُعُوْا ۔ जब उन्हें शहादत के लिए तलब किया जाए तो वह हाज़िर अदालत होने से इंकार न करें। इसी तरह फ़रमाता وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ۚ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗۤ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ۔ जो व्यक्ति सच्ची गवाही छुपाता है इस का दिल स्याह हो जाता है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं।

الا اخبركم بخير الشهداء الذى ياتى بشهادته قبل ان يسئالها

अर्थात बेहतरीन गवाह वे है जो शहादत-तलब करने से पहले ही असल वाक़िया की हुक्काम को सूचना दे दे।

बहस का हक़

इस्लाम ने क़ाज़ी को बहस का हक़ भी दिया है और घटना यह है कि बहस से सच्चाई और झूठ में बहुत जल्द अंतर हो जाता है। उदाहरणतः एक व्यक्ति के रुपयों की थैली गुम हो गई जिसे किसी दूसरे ने उठा लिया। अब इस्लाम यह कहता है कि वह थैली असल मालिक के हवाले की जाए लेकिन सवाल यह है कि वह किस को दी जाए। इस के विषय में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति इस थैली के सही निशानिया वर्णन कर दे उसी के हवाले की जाए। यह एक उसूल है जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वर्णन फ़र्मा दिया और जिसकी दृष्टि में क़ाज़ी कई किस्म के प्रश्नों कर सकता है। उदाहरणतः यह कि थैली का रंग क्या था। वह कपड़े की थी या चमड़े की और इस में कितने रुपय थे। उद्देश्य जरह से भी चूँकि हक़-ओ-बातिल में इमतेयाज़ होता है इसलिए इस्लाम ने उसे भी ज़रूरी क़रार दिया है।

मज़बूत तर्कों की शहादत

फिर कई दफ़ा मज़बूत तर्कों से हक़ीक़त का इलम होता है। उदाहरणतः हज़रत-ए-यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को जब ज़ुलेख़ा ने वरग़लाना चाहा और उन की क़मीज़ फट गई तो ज़ुलेख़ा के ख़ानदान में से ही एक व्यक्ति ने कहा कि अगर यूसुफ़ का कुर्ता आगे से फटा हुआ है तो ज़ुलेख़ा सच्ची है। और अगर कुर्ता पीछे से फटा हुआ है तो ज़ुलेख़ा झूठी और यूसुफ़ अलैहिस्सलाम सच्चे हैं और आख़िर ईसी तर्क के मुताबिक़ हज़रत-ए-यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को बरी समझा गया।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी मुक़द्दमात के तसफ़ीया में क़रायन पर एतिमाद किया है। एक दफ़ा ख़ैबर में शरायत-ए-सुलह के मुताबिक़ यहूदियों के माल-ओ-दौलत का बहुत बड़ा हिस्सा मुस्लमानों के क़बज़े में आ गया लेकिन एक यहूदी से जब माल मांगा गया तो उसने यह कह कर इंकार कर दिया कि वह लड़ाई के मसारिफ़ में काम आ गया है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को एतबार नहीं आया क्योंकि माल की मिक़दार ज़्यादा थी प्रतिदिन का ख़र्च कम था। आख़िर लोगों ने शहादत दी कि वह एक खन्डर में घूमता हुआ देखा गया है तहक़ीक़ की गई तो समस्त माल इसी खन्डर से मिल गया।

गवाहों को सच बोलने की तलक़ीन

यह वर्णन किया जा चुका है कि इस्लाम गवाहों को सच बोलने की बड़ी ताकीद करता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۔ हे लोगो जब भी तुम कोई बात कहो बिल्कुल सच्च कहो अगरचे मुक़ाबला में तुम्हारा कोई रिश्तेदार ही क्यों न हो। फिर मोमिनों की सिफ़त वर्णन वे झूठी गवाही नहीं देते। इसी तरह फ़रमाता है।

فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ का बुतों की पलीदी और झूठों से बचोगे।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जिसने झूठी कसम खा कर अपने किसी भाई का माल ले लिया उस ने अपने ऊपर दोज़ख़ वाजिब करली। किसी ने कहा हे रसूलुल्लाह। अगरचे थोड़ी सी चीज़ हो? आपने फ़रमाया हाँ अगरचे पीलू के दरख़्त की एक टहनी ही क्यों न हो।

एक दफ़ा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा से फ़रमाया कि क्या मैं तुम्हें कबीरा गुनाह न बतलाऊं। सहाबा ने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह ज़रूर बताए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक ठहराना। और माँ बाप की न-फ़रमानी करना। उस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम टेक लगाए बैठे थे यह कह कर उठ बैठे और फ़रमाया और झूठ बोलना और झूठी गवाही देना। और इस आख़िरी फ़िक़रा को आपने बहुत दफ़ा दोहराया और बार-बार डराया कि झूठी गवाही देना बहुत बड़ा जुर्म है। उद्देश्य इस्लाम सदाक़त पर बहुत ज़ोर देता और उसे मलहूज़ रखना हर वक़्त ज़रूरी क़रार देता है।

रिश्वत की मनाही

फिर इस्लाम ने एक क़दम और आगे बढ़ाते हुए अदल-ओ-इन्साफ़ में रूकावट डालने वाले समस्त उमूर् की पूर्णतः मनाही कर दी है। उदाहरणतः इन्साफ़ में सबसे बड़ी रोक रिश्वत होती है। इस्लाम इस से खुले तौर पर रोकता है। इसलिए फ़रमाता है।

وَلَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا بِهَاۤ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۔ कि अपने माल को नाजायज़ तौर पर न खाओ। और उसे हुक्काम तक रसाई हासिल करने का माध्यम न बनाओ ताकि लोगों के हुक़ूक़ तुम ख़ुर्द बुरद कर जाओ। हदीसों में आता है कि रिश्वत लेने वाला और रिश्वत देने वाला दोनों पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लानत डाली है। फ़ुक़हा ने क़ाज़ियों पर और भी कई किस्म की पाबंदियां निर्धारित की हैं। उदाहरणतः उनके नज़दीक क़ाज़ी किसी फ़रीक़ के हाँ विशेष दावत नहीं खा सकता। इसी तरह उसे अगर कोई व्यक्ति उपहार भेजे तो उसे वापस कर देना चाहिए। अपने प्रियों और रिश्तेदारों का हदया जबकि वह क़बूल कर सकता है लेकिन जब उनका मुक़द्दमा उसके पास हो तो उनका उपहार भी उसे क़बूल नहीं करना चाहिए।

ग़ुस्सा की हालत में फ़ैसला न किया जाए

फिर रिश्वत के अतिरिक्त कुछ लोग भावनाओं से भी प्रभावित हो जाते हैं और इस तरह वे इन्साफ़ तक नहीं पहुंच सकते। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस से भी रोका है और फ़रमाया है कि :

لَا يَحْكُمُ اَحَدٌ بَيْنَ اثْنَيْنِ وَهُوَ غَضْبَانُ कि क़ाज़ी गुस्से की हालत में फ़ैसला न लिखे क्योंकि ऐसी हालत में बिल्कुल संभव है कि इस की निगाह इन्साफ़ तक न पहुंचे।

इसी तरह किसी फ़रीक़ की आहोज़ारी से भी क़ाज़ी को प्रभावित नहीं होना चाहिए। इस के सबूत में यह वर्णन किया जाता है कि हज़रत-ए-यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई जैसा कि क़ुरआन-ए-करीम में आता है इशा के वक़्त रोते हुए अपने बाप हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के पास आए थे हालाँकि वह स्वयं मुजरिम थे।

क़ज़ा के पद की ज़िम्मेदारी

वास्तव में क़ाज़ी बनना कोई आसान काम नहीं बल्कि बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी का काम होता है और क़ाज़ी का फ़र्ज़ होता है कि दावा करने वाला और जिस पर आरोप लगाया है दोनों से एक प्रकार का सुलूक करे और किसी बड़े आदमी की वजाहत के पेश-ए-नज़र दौरान-ए-मुक़द्दमा में इसके लिए कोई इमतेयाज़ क़ायम न करे। इसी वजह से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि

क़ाज़ी तीन किस्म के होते हैं। दो किस्म के क़ाज़ी तो जहन्नुम में जाऐंगे और एक जन्नत में। जन्नत में जाने वाला क़ाज़ी वे है जिसने हक़ को समझ कर फ़ैसला किया। परंतु जिस क़ाज़ी ने ज़ालिमाना फ़ैसला किया या बग़ैर तहक़ीक़ किए फ़ैसला सादर कर दिया वह दोनों सज़ा पाएँगे।

फ़ैसला को बख़ुशी तस्लीम करना चाहिए

इस्लाम शोबा-ए-क़ज़ा के बार में एक और हिदायत यह देता है कि जब कोई क़ाज़ी फ़ैसला कर दे तो गो वे अपने फ़ैसलों में ग़लती भी कर सकता है परंतु बहरहाल लोगों का फ़र्ज़ है कि इस के फ़ैसला को क़बूल करें। अगर अपील की गुंजाइश हो तो हाकिम-ए-आअला के पास अपील की जा सकती है और बड़ी अदालत छोटी अदालत के फ़ैसला को खंडित कर सकती है। जैसा कि सुंन निसाई किताब سنن نسائی کتاب آداب القضاء باب نقض الحاکم ما یحکم به غیرہ ممّن هو مثله से ज़ाहिर है। परंतु किसी व्यक्ति के लिए यह जायज़ नहीं कि वह क़ाज़ी के फ़ैसला को क़बूल करने से इंकार करे। और इस तरह क़ौम में बेचैनी पैदा करे। अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا۔

कि लोग कभी कामिल मोमिन नहीं बन सकते जब तक अपने अख़तेलाफ़ी मामलात के बारे में निज़ाम के फ़ैसला को शरह सदर से क़बूल न करें और इस के विषय में दिल में किसी किस्म का इन्क़िबाज़ न रखें।

इस आयत में गो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को संबोधित किया गया है। परंतु ऐसे अहकाम जो निज़ाम से ताल्लुक़ रखते हैं वे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात से विशेष नहीं बल्कि क़ियामत तक मुस्लमानों के लिए वाजिबुल् अमल हैं। अतः इस्लाम की हिदायत यह है कि क़ज़ा के फ़ैसलों को लोग शरह सदर से क़बूल करें और निज़ाम का सम्मान करें।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अमली उदाहरण

यह इस्लाम की इस तालीम का एक निहायत ही संक्षिप्त और ना-मुकम्मल ख़ाका है जो इस ने क़ज़ा के बारे में पेश की। अब इस बारे में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अमली उदाहरण पेश किया जाता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब हिज्रत के बाद मदीना तशरीफ़ ले गए तो चूँकि मुस्लमानों के अतिरिक्त वहां बुतपरस्त और यहूद भी थे अतिरिक्त इसके मुनाफ़ेक़ीन का भी एक अंसर मौजूद था, इसलिए रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़रूरी समझा कि आपस में मिलकर एक अनुबंध तै कर लिया जाए। मुनाफ़ेक़ीन चूँकि अपने आपको इस्लाम की तरफ़ मंसूब करते थे, जबकि अंदरूनी तौर पर मुख़ालिफ़ थे, इसलिए वे मजबूर थे कि ज़ाहिरी तौर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हुकूमत अपने ऊपर तस्लीम करें। बुत परस्त चूँकि कम थे इसलिए सयासी तौर पर वह भी इस बात की ज़रूरत महसूस करते थे कि मुस्लमानों के साथ मिलकर रहें। केवल यहूद आज़ाद और ख़ुद-मुख़्तार थे जिनकी तरफ़ से अमन का ख़तरा हो सकता था, इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुनासिब समझा कि शहर के अमन और विभिन्न अक़्वाम के बाशिंदों की हिफ़ाज़त के लिए एक अनुबंध हो जाएगी। इसलिए यह अनुबंध तै पा गया। इस की कई शरायत थीं जिनमें से एक शर्त यह थी कि हर किस्म के इख़तेलाफ़ात और झगड़े रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने फ़ैसला के लिए पेश होंगे और हर फ़ैसला ख़ुदाई हुक्म अर्थात हर क़ौम की अपनी शरियत के मुताबिक़ किया जाएगा। इस अनुबंध की वजह से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मदीना में एक इंतेज़ामी हाकिम या बैनुल् अक़्वाम क़ाज़ी की हैसियत हासिल हो गई और अहम मुक़द्दमात आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने पेश होने लग गए। जिन में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमहर क़ौम के ज़ाबता और क़ानून के मुताबिक़ फ़ैसला फ़रमाया करते थे। इसलिए रिवायत है कि 04 हिज्री के आख़िर में आपके सामने एक यहूदी मर्द-ओ-औरत का मुक़द्दमा पेश हुआ जिसमें उनके ख़िलाफ़ व्यभिचार का इल्ज़ाम साबित था। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यहूदी उल्मा से पूछा कि तुम्हारी शरीयत का इस बारे में क्या फ़ैसला है। उन्होंने झूठ बोलते हुए कहा कि जो व्यक्ति व्यभिचार करे हमारे हाँ उस की यह सज़ा है कि उसका मुख काला किया जाए और सवारी पर उल्टा सवार करके शहर में फिराया जाए। उस वक़्त हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम भी मौजूद थे। उन्होंने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह यह ग़लत कहते हैं। तौरात में इस जुर्म की सज़ा संगसार लिखी है। इसलिए तौरात मँगाई गई। यहूदियों ने संगसार वाली आयत पर हाथ रख कर उसे छुपाना चाहा परंतु अब्दुल्लाह बिन सलाम ने दिखा दिया कि तौरात की दृष्टि से इस जुर्म की सज़ा संगसार है और चूँकि अनुबंध यही था कि हर क़ौम के मुक़द्दमात का उस के अपने क़ानून के मुताबिक़ फ़ैसला किया जाएगा इसलिए आपने फ़ैसला फ़रमाया कि यहूदी शरीयत के मुताबिक़ इन दोनों को संगसार कर दिया जाए। इसलिए ए दोनों संगसार किए गए।

बनू नज़ीर के विषय में फ़ैसला

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत-ए-तुय्यबा का यह एक निहायत ही दरख़शां पहलू है कि आप क़ज़ा में मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम के हुक़ूक़ को मुसावी समझते थे और अगर किसी मामला में मुस्लमान ग़लती पर होते तो उनके ख़िलाफ़ फ़ैसला सादर फ़रमाते। इसलिए बनू-नज़ीर जब मदीना से देश-निकाला किए गए तो कुछ अंसार ने उन लोगों को उनके साथ जाने से रोकना चाहा जो थे तो अंसार की औलाद में से परंतु उनकी सुन्नत मानने के नतीजा में वे यहूदी हो चुके थे और बनू नज़ीर चाहते थे कि इन को अपने साथ ले जाएं। चूँकि अंसार का यह मुतालिबा क़ुरआन की इरशाद ला इकराह फ़ी-द्दीन के ख़िलाफ़ था इसलिए रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने जब यह मामला पेश हुआ तो आपने मुस्लमानों के ख़िलाफ़ और यहूद के हक़ में फ़ैसला किया और फ़रमाया कि जो व्यक्ति यहूदी है की और जाना चाहता है मुस्लमान उसे नहीं रोक सकते।

चोरी का वाक़िया

एक दफ़ा बनु मख़्ज़ूम की एक औरत फ़ातमा बिंत असद ने चोरी की और वे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने पेश की गई। क़ुरैश को ख़ौफ़ पैदा हुआ कि आप आम लोगों की तरह उसका हाथ काटने का हुक्म न दे दें। परंतु उनमें यह साहस नहीं था कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस बारे में कुछ अर्ज़ कर सकें। आख़िर उन्होंने इस उद्देश्य के लिए उसामा बिन ज़ैद को तजवीज़ किया। क्योंकि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनसे बहुत मुहब्बत रखते थे और उन्होंने समझा कि अगर उसामा ने सिफ़ारिश की तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़बूल फ़र्मा लेंगे। परंतु जब उसामा ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से वर्णन किया तो हदीसों में आता है रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी सिफ़ारिश को रद्द कर दिया और फ़रमाया बनी-इसराईल की आदत थी कि जब उन में से कोई बड़ा व्यक्ति चोरी करता तो उसे छोड़ देते और अगर ग़रीब चोरी करता तो उसके हाथ काट देते। यही वजह उनकी हलाकत हुई। परंतु मैं क़ज़ा के मामला में किसी का लिहाज़ नहीं कर सकता। ख़ुदा की क़सम अगर मेरी बेटी फ़ातिमा भी चोरी करे तो मैं उस का हाथ काट डालता।

इस से मालूम हो सकता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़ज़ा के मामला में बड़े और छोटे में कोई इमतेयाज़ नहीं फ़रमाते थे। इस हदीस से यह अमर भी साबित होता है कि हुक्काम के पास ऐसे मामलात में किसी को सिफ़ारिश नहीं करनी चाहिए। और अगर कोई व्यक्ति ग़लती से सिफ़ारिश कर दे तो क़ाज़ी का फ़र्ज़ है कि सिफ़ारिश को रद्द कर दे और वही फ़ैसला करे जो उसके नज़दीक दरुस्त हो।

अबुल् आस् की गिरफ़्तारी

जंग-ए-बदर में जहां क़ुरैश के और सरदार गिरफ़्तार हुए वहां रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दामाद अबुल् आस भी गिरफ़्तार हो कर आए और समस्त क़ैदियों के साथ उन्हें भी रखा गया। उनके पास फ़िद्या अदा करने के लिए माल नहीं था। इसलिए उन्हें हुक्म दिया गया कि घर से मंगा कर दो। उन्होंने अपनी बीवी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेटी हज़रत ज़ैनब को संदेश भेजा। उन्होंने बतौर फ़िद्या एक हार भिजवा दिया जो दरअसल हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का था और उन्होंने जहेज़ में हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को दिया था। जब वह हार रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने पेश किया गया तो आपको हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की याद आ गईं और बे-इख़्तियार आपकी आँखों से आँसू निकल आए। आप चाहते तो बग़ैर

फ़िद्या के भी अबुल् आस को रिहा कर सकते थे। परंतु आपने यह मामला मुस्लमानों के सामने रखा और फ़रमाया अगर तुम पसंद करो तो ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को उस की माँ की यह यादगार वापस कर दी जाए। सबने ख़ुशी से उसे पसंद किया और इस के बाद अबुल् आस को रिहा कर दिया गया।

अब्बू जिंदल की हिमायत करने से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का इंकार

हुदैबिया के स्थान पर जब मुस्लमानों और कुफ़्फ़ार के मध्य अनुबंध हुआ तो इसकी एक शर्त यह क़रार पाई कि अगर कोई व्यक्ति मक्का से भाग कर और मुस्लमान हो कर मुस्लमानों के पास जाएगा तो वह वापस कर दिया जाएगा। परंतु मुस्लमानों में से जो व्यक्ति मुर्तद हो कर मक्का आएगा वह वापस नहीं किया जाएगा। यह अनुबंध अभी तै ही हो रहा था कि ऐन उसी वक़्त एक मुस्लमान अबू जिंदल नामी जिन्हें कुफ़्फ़ार मक्का ने क़ैद कर रखा था क़ैद से भाग कर मुस्लमानों से आ मिले। उस वक़्त उनके पांव में बेड़ियाँ पड़ी थीं और बदन पर इतने ज़ख़्म थे कि समस्त जिस्म चूर चूर था। वह मुस्लमानों से आकर कहने लगे ख़ुदारा मुझे कुफ़्फ़ार की क़ैद से निकालो और अपने साथ ले चलो। उ वक़्त रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम साथ 14 सौ हथयारों के साथ सिपाही थे और आपके एक इशारा पर अबू जिंदल को रिहाई मिल सकती थी। स्वयं मुस्लमान अपने भाई की यह हालत देखकर बे-ताब हो रहे थे। परंतु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबुल् जिंदल को अपनी हिमायत में लेने से इंकार कर दिया और फ़रमाया कुफ़्फ़ार से यह शर्त हो चुकी है कि मक्का वालों में से जो व्यक्ति हमारे पास आएगा उसे वापस कर दिया जाएगा। अबुल् जिंदल ने फ़र्याद करते हुए अर्ज़ किया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे उन ज़ालिमों के हवाले कर रहे हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिल में भी दर्द था परंतु आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अबुल् जिंदल सब्र करो और ज़बत से काम लो। हम वादा तौड़ नहीं सकते। अल्लाह तआला तुम्हारी रिहाई की कोई और सूरत पैदा कर देगा।

एक मुस्लमान को क़तल की सज़ा

इसी तरह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में एक मुस्लमान ने किसी ज़मी को क़तल कर दिया। जब यह मुक़द्दमा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने पेश हुआ तो आपने उस मुस्लमान के क़तल का हुक्म दिया और फ़रमाया انا احق من اوفی بذمتہ अर्थात उस के ज़िम्मा वफ़ा करने का सबसे ज़्यादा अधिक हक़दार मैं हूँ।

(अनायह शरह हदाया भाग 8 पृष्ठ 256)

अह्द का सम्मान

एक दफ़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक ग़ज़वा के लिए तशरीफ़ ले जा रहे थे कि रास्ता में आपको दो आदमी मिले। उस वक़्त एक एक आदमी की सख़्त ज़रूरत थी। आपने उनसे दरयाफ़्त फ़रमाया कि किस तरह आए हो। उन्होंने अर्ज़ किया हम इस्लाम क़बूल करने के लिए मक्का से आए हैं परंतु वहां हम यह कह आए हैं कि हम मुस्लमानों की मदद के लिए नहीं जा रहे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब तुम उनसे यह कह आए हो तो हमारे साथ जंग में शरीक न हो क्योंकि इस तरह वादा-ख़िलाफ़ी होगी।

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो की क़ैद

जंग-ए-बदर में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो भी क़ैद हो गए। मुस्लमानों ने उन्हें दूसरे क़ैदियों के साथ ही रस्सियों से जकड़ लिया। उस ज़माना में चूँकि ऐसे सामान नहीं थे जिन से क़ैदियों के भागने की रोक-थाम की जा सके। इस लिए क़ैदियों को रस्सियों से ख़ूब मज़बूती से बांध दिया जाता था। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो भी जकड़ लिए गए। परंतु चूँकि वह सहूलतों और शान में पले हुए थे इस लिए तकलीफ़ की ताब न लाकर कराहने लग गए। उनकी आवाज़ सुनकर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सख़्त तकलीफ़ हुई और सहाबा ने देखा कि आप कभी एक पहलू बदलते हैं और कभी दूसरा। वे समझ गए कि आपकी इस बेचैनी का बायस हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो का कराहना है। इस पर उन्होंने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो की रस्सियाँ ढीली कर दीं। थोड़ी देर के बाद जब आपको उनके कराहने की आवाज़ न आई तो आपने दरयाफ़्त फ़रमाया

पृष्ठ 2 का शेष

कि अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो की आवाज़ क्यों बंद हो गई। सहाबा ने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह आपकी तकलीफ़ देखकर हमने उनकी रस्सियाँ ढीली कर दी हैं। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया या तो सब क़ैदियों की रस्सियाँ ढीली कर दो। अन्यथा उनकी भी सख़्त कर दो। गोया आपने यह पसंद नहीं फ़रमाया कि मेरे रिश्तेदार की रस्सियाँ तो ढीली कर दी जाएं और बाक़ी लोगों की रस्सियाँ उसी तरह मज़बूती से बंधी रहें बल्कि आपने फ़रमाया कि सबसे एक समान करो।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की एक यहूदी से बातचीत

एक दफ़ा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की एक यहूदी से बातचीत हुई। बातचीत के दौरान यहूदी ने हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर फ़ज़ीलत दी। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को गुस्सा आ गया और आपने उस से सख़्ती की परंतु जब ये बात रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मालूम हुई तो आप हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से नाराज़ हुए और आपने फ़रमाया आपका हक़ नहीं था कि इस तरह इस यहूदी से झगड़ते।

मृत्यु के निकट वाले रोग में सूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदेश

फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अदल-ओ-इन्साफ़ के क़ियाम का इस क़दर ख़्याल था किमृत्यु के निकट वाले रोग में आपने सहाबा से फ़रमाया देखो मैं भी एक इन्सान हूँ जिस तरह तुम इन्सान हो। मुझे हमेशा तुमसे मामलात पेश आते रहे हैं। संभव है कभी मेरे हाथ से किसी को कोई तकलीफ़ पहूँची हो। मैं नहीं चाहता कि क़ियामत के दिन ख़ुदा के सामने मुझे जवाबदेही होना पड़े। अतः जिस व्यक्ति को मेरे हाथ से कोई तकलीफ़ पहूँची हो वह आज मुझसे बदला ले-ले। सहाबा पर इन फ़िक्रात का ऐसा असर हुआ कि वे रोने लग गए। उनके वहम और ख़्याल में भी यह नहीं आसकता था कि आपके हाथ से किसी को अज़ीयत पहूँची हो। परंतु इसी दौरान एक व्यक्ति उठा और उसने कहा हे रसूलुल्लाह आप एक जंग के अवसर पर सफ़ बंदी कर रहे थे कि एक सफ़ से गुज़र कर आपको आगे जाने की ज़रूरत पेश आई। उस वक़्त आप जब सफ़ को चीर कर आगे गए तो आपकी कोहनी मेरी पीठ को लगी थी। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बहुत अच्छा लो में बैठा जाता हूँ। तुम मेरी पीठ पर कोहनी मार लो। सहाबा की कैफ़ीयत अल्फ़ाज़ में वर्णन नहीं हो सकती। उनकी तलवारें मयानों से निकल निकल पड़ती थीं और वे चाहते थे कि इस व्यक्ति को टुकड़े टुकड़े कर दें परंतु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रोब की वजह से कुछ कर नहीं सकते थे। ये सुनकर वह व्यक्ति फिर बोला और कहने लगा जिस वक़्त मुझे आपकी कहनी लगी थी मेरा जिस्म नंगा था। अतः बदला पूरा नहीं हो सकता जब तक आपके जिस्म पर से भी कुरता न उतारा जाए। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वालही वसल्लम ने फ़ौरन अपनी पीठ पर से कुरता ऊंचा कर दिया और फ़रमाया लो अब कोहनी मार लो। हर व्यक्ति उस वक़्त गुस्सा से बेद की तरह काँप रहा था। परंतु उस व्यक्ति के सबात में कुछ फ़र्क़ नहीं आया। वह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया। आपकी पीठ की तरफ़ झुका और उसने आपकी नंगी पीठ पर मुहब्बत से बोसा दिया। फिर वह खड़ा हो गया और उसने कहा हे रसूलुल्लाह कुजा बदला और कुजा यह ख़ादिम। जब मुझे मालूम हुआ कि अब हुज़ूर का आख़िरी वक़्त क़रीब है तो मैंने चाहा कि मेरे होंट एक दफ़ा आपके बाबरकत जिस्म को चूम लें। अतः मैंने इस कोहनी के लगने को अपने उद्देश्य के पूरा करने का माध्यम बनाया है। जिसका लगना मेरे लिए उस वक़्त भी बायस-ए-फ़ख़र था और आज भी मेरे लिए बायस--ए-फ़ख़र है।

यह है वह पाक वजूद जिसे ख़ुदा ने दुनिया की हिदायत के लिए भेजा और जिसने अपनी ज़िंदगी की आख़िरी घड़ियों में भी अदल और इंसाफ को मलहूज़ रखा।

اللھم صلی علی محمد و علی آل محمد و بارک وسلم انک حمید مجید۔

(उद्धृत अल् फ़ज़ल कादियान दारुल अमान)

★ ★ ★

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 01-08 August 2024 Issue No. 31-32

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

मार्ग त्याग दिया था, तथा यह बात भी प्रत्येक को ज्ञात है कि इस वर्तमान बिगाड़ का सुधार करने वाले और एक संसार को शिर्क के अंधकारों और सृष्टि पूजा से निकाल कर एकेश्वरवाद पर स्थापित करने वाले केवल आँहज़रत ही हैं कोई अन्य नहीं। अतः इन समस्त भूमिकाओं से परिणाम यह निकला कि आँहज़रत ख़ुदा की ओर से सच्चे पथ-प्रदर्शक हैं।

(बराहीन अहमदिया भाग द्वितीय रूहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 114 हाशिया नंबर 10)

हजार, दो हज़ार नबियों का कार्य अकेले करने वाला नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को समस्त संसार का मुक़ाबला करना पड़ा और जो कार्य आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम प्रशंसित के सुपुर्द हुआ वह वास्तव में हजार, दो हज़ार नबियों का कार्य था, परन्तु चूँकि ख़ुदा को स्वीकार था कि प्रजा एक ही जाति और एक ही क़बीले की भांति हो जाए तथा अपरिचय और अजनबियत जाती रहे और जैसे यह सिलसिला एकत्व से आरम्भ हुआ है वहदत पर ही समाप्त हो। इसलिए उसने अन्तिम पथ-प्रदर्शन को समस्त संसार के लिए सामूहिक तौर पर भेजा।

(बराहीन अहमदिया भाग द्वितीय रूहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 116 हाशिया नंबर 10)

अपनी हस्ती में सम्पूर्ण उत्तम सदाचारों का पूरक और चरम सीमा तक पहुँचाने वाला है कि उस पर अधिकता की कल्पना नहीं की जा सकती

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का स्वभाव नितान्त स्थायित्व पर बना था, न प्रत्येक स्थान पर शील पसन्द था और न प्रत्येक स्थान पर क्रोध ही हृदय को रुचिकर था, अपितु नीतिगत पद्धति पर स्थान और अवसर को दृष्टिगत रखने वाला शुभ स्वभाव था। अतः क़ुरआन-ए-क़रीम भी उसी समता और संतुलन की शैली पर उतरा जो कठोरता, दया,भय-रोब, सहानुभूति, विनम्रता और सख्ती का संकलन है। अतएव यहां अल्लाह तआला ने स्पष्ट किया कि दीपक क़ुरआन-ए-क़रीम की वह्यी का दीपक उस मुबारक वृक्ष के तेल से प्रकाशित किया गया है जो न पूरबी है न पश्चिमी, अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के संतुलित स्वभाव के अनुकूल उतरा है, जिसमें न मूस्वी स्वभाव की भांति कठोरता है न ईस्वी स्वभाव की भांति विनम्रता, अपितु कठोरता, विनम्रता, आक्रोश और शालीनता का संकलन है और संतुलन के पूर्णरूप को दर्शाने वाला तथा प्रताप और शालीनता का संग्रहीता है तथा मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के संतुलित सदाचार जो सूक्ष्म बुद्धि के माध्यम से वह्यी के प्रकाश के प्रकटन हेतु तेल ठहरे। इन के सन्दर्भ में एक अन्य स्थान में भी अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सम्बोधित करके फ़रमाया है और वह यह है اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ अर्थात तू हे नबी एक श्रेष्ठ श्रेणी के सदाचारों (खुलुके अज़ीम) पर पैदा किया गया है अर्थात् अपनी हस्ती में सम्पूर्ण उत्तम सदाचारों का पूरक और चरम सीमा तक पहुँचाने वाला है कि उस पर अधिकता की कल्पना नहीं की जा सकती,

(बराहीन अहमदिया तृतीय रूहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 193 हाशिया नंबर 11)

बोध, अनुभूति, सद्बुद्धि और सम्पूर्ण जन्मजात तथा स्वाभाविक सदाचारों को एक उत्तम नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम

ख़ुदा तआला ने पैग़म्बर अलैहिस्सलाम के हृदय को उज्ज्वल शीशे से उपमा दी जिस में किसी प्रकार की अशुद्धता नहीं। यह हृदय का प्रकाश है। तत्पश्चात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बोध, अनुभूति, सद्बुद्धि और सम्पूर्ण जन्मजात तथा स्वाभाविक सदाचारों को एक उत्तम तेल से उपमा दी जिसमें अत्यन्त चमक है और जो दीपक के प्रकाश का माध्यम है यह प्रकाश, बुद्धि है क्योंकि सम्पूर्ण आन्तरिक अलौकिक बातों का स्रोत और उद्देश्य बुद्धि रूपी शक्ति है फिर इन समस्त प्रकाशों पर एक आकाशीय प्रकाश का जो वह्यी है उतरना वर्णन किया। यह वह्यी का प्रकाश है तथा तीनों प्रकाश मिलकर लोगों के मार्ग-दर्शन का कारण बने। यही सच्चा सिद्धान्त है जो वह्यी के संबंध में पवित्र और अनादि (ख़ुदा) की ओर से अनादि क़ानून है तथा उसकी पवित्र हस्ती के अनुकूल।

(बराहीन अहमदिया तृतीय रूहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 197 हाशिया नंबर 11)

शिष्टाचार करुणा (रहम), दानशीलता, दान, स्वार्थ त्याग, सहानुभूति, बहादुरी, संयम, निरीहता वाला नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम

और जो शिष्टाचार करुणा (रहम), दानशीलता, दान, स्वार्थ त्याग, सहानुभूति, बहादुरी, संयम, निरीहता, संसार से विमुखता से सम्बद्ध थे वे भी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक अस्तित्व में ऐसे प्रकाशमान, प्रभावान, रौशन हुए कि मसीह क्या अपितु संसार में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पूर्व कोई भी ऐसा नबी नहीं गुज़रा जिसके शिष्टाचार ऐसी पूर्ण स्पष्टता के साथ प्रकाशमान हो गए हों, क्यों कि ख़ुदा तआला ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर असंख्य ख़ज़ानों के द्वारा खोल दिए। अतः आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन सब को ख़ुदा के मार्ग में व्यय किया तथा किसी प्रकार की विलासिता में थोड़ा सा भी व्यय न हुआ, न कोई इमारत बनाई, न कोई राजभवन तैयार हुआ अपितु एक छोटी सी कच्ची कुटिया में जिसे निर्धन लोगों के कमरों पर कुछ भी अधिमान (एक को दूसरे पर प्रधानता देना) न था, अपनी समस्त आयु व्यतीत की, बुराई करने वालों से भलाई करके दिखाई और वे जो दुखदायी थे उन्हें उन के दुख के समय अपने माल से प्रसन्नता पहुँचाई, सोने के लिए अधिकतर पृथ्वी पर बिछौना तथा रहने के लिए एक छोटी सी कुटिया, खाने के लिए जौ की रोटी अथवा अनाहार (फ़ाक़ा) धारण किया, सांसारिक समृद्धि के साधन उन्हें अधिकता के साथ दिए गए, परन्तु आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने पवित्र हाथों को संसार से तनिक भी मलिन न किया और हमेशा दरिद्रता को समृद्धि पर तथा ग़रीबी को अमीरी पर अपनाए रखा और उस दिन से जो प्रकटन किया ताकि उस दिन तक कि अपने श्रेष्ठतम मित्र से जा मिले, अपने दयालु स्वामी के अतिरिक्त किसी को कुछ वस्तु न समझा तथा सहस्त्रों शत्रुओं के मुकाबले पर युद्ध के मैदान में जहां क़त्ल किया जाना निश्चित था, निष्कपट भाव से ख़ुदा के लिए खड़े हो कर अपनी वीरता, वफ़ादारी और दृढ़ता दिखाई। अतः दानशीलता और उदारता, संयम और निरीहता शूरता और वीरता तथा ख़ुदा के प्रेम संबंधी में जो सदाचार हैं वे भी ख़ुदा तआला ने हज़रत ख़ातमुल अंबिया में ऐसे प्रकट किए कि जिनका उदाहरण न कभी संसार में प्रकट हुआ और न भविष्य में प्रकट होगा।

(बराहीन अहमदिया तृतीय रूहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 289 हाशिया नंबर 11)

कोई नबी भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र गुणों में समान रूप से भागीदार नहीं हो सकता

फ़रिश्तों को भी इस स्थान पर समानता का दम मारने की गुजाइश नहीं

वास्तविक तौर पर कोई नबी भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र गुणों में समान रूप से भागीदार नहीं हो सकता अपितु समस्त फ़रिश्तों को भी इस स्थान पर समानता का दम मारने की गुजाइश नहीं कहां यह कि किसी अन्य की आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के गुणों से कुछ तुलना हो, परन्तु सत्य के अभिलाषी 'अल्लाह तेरा मार्ग-दर्शन करे' तुम ध्यानपूर्वक इस बात को सुनो कि कृपालु ख़ुदा ने इस उद्देश्य से कि ताकि इस मान्य रसूल की बरकतें हमेशा प्रकट हों और ताकि उस से प्रकाश और उसकी स्वीकारिता की पूर्ण किरणें विरोधियों को हमेशा दोषी और निरुत्तर करती रहें। अपनी पूर्ण नीति और दया से इस प्रकार प्रबन्ध कर रखा है कि उम्मते मुहम्मदिया के कुछ लोग जो नितान्त विनय और विनम्रता से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुसरण करते हैं तथा विनीतता और विनम्रता की चौखट पर पड़ कर स्वयं से बिल्कुल गएगुज़रे होते हैं, ख़ुदा उन्हें नश्वर और एक उज्ज्वल शीशे की भांति पाकर अपने मान्य रसूल की बरकतें उनके आडम्बर से पवित्र अस्तित्व के माध्यम से प्रकट करता है और ख़ुदा की ओर से जो कुछ उनकी प्रशंसा की जाती है अथवा उनसे कुछ लक्षण, बरकतें और निशानियां प्रकट होती हैं, वास्तव में उन समस्त प्रशंसाओं का पूर्ण मवास (मरजअ) तथा उन समस्त बरकतों का पूर्ण उद्गम रसूले करीम (स.अ.व) ही होते है। वास्तविक और पूर्ण रूप से वे प्रशंसाएं उसी के योग्य होती हैं तथा वही उसका पूर्णतम चरितार्थ होता है।

(बराहीन अहमदिया तृतीय रूहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 268 हाशिया दर हाशिया नंबर 1)

अल्लाह तआला हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुक़ाम-ओ-मर्तबा को समझने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। हमें आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमसे हक़ीक़ी इशक़-ओ-मुहब्बत करने वाला और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमकी तालीमात पर दिल के साथ और मुहब्बत के साथ अमल करने वाला बनाए । आमीन। (मंसूर हमद मसरूर)

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad